बैंक ऑफ़ बड़ौदा
Bank of Baroda

विजया VIJAYA | देना DENA

अक्षय्यम्

जुलाई – सितंबर 2020

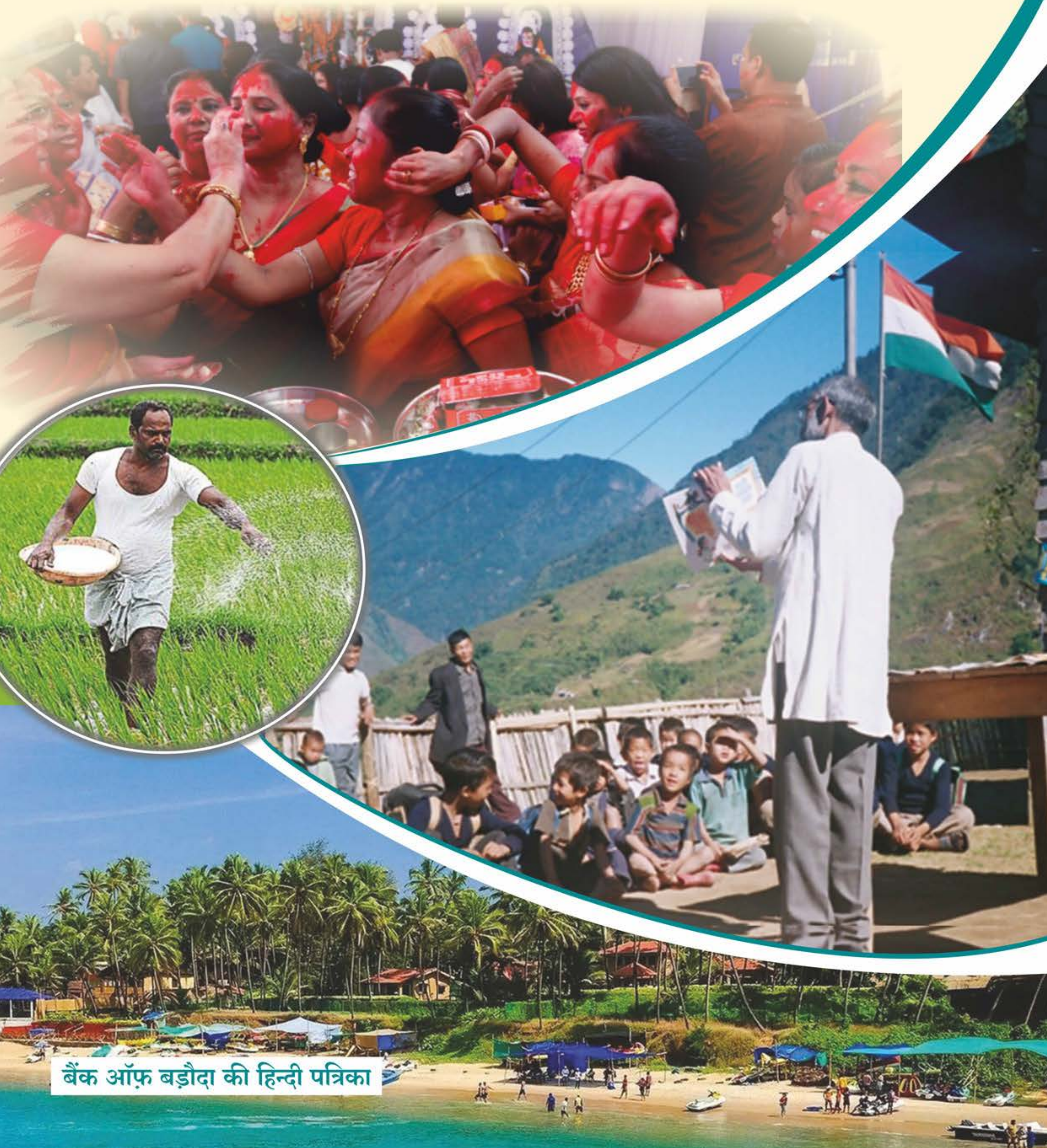

बैंक ऑफ़ बड़ौदा की हिन्दी पत्रिका

प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी की अध्यक्षता में तिमाही राजभाषा बैठक संपन्न

बैंक के प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी श्री संजीव चड्ढा की अध्यक्षता में दिनांक 29.08.2020 को बैंक की केंद्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक का आयोजन किया गया. इस अवसर पर बैंक के कार्यपालक निदेशकगण श्री मुरली रामास्वामी, श्री शांतिलाल जैन, श्री विक्रमादित्य सिंह खीची, श्री ए. के. खुराना, मुख्य महाप्रबंधकगण, महाप्रबंधकगण तथा अन्य उच्च कार्यापालक उपस्थित रहे. इस बैठक में बैंक में तिमाही के दौरान राजभाषा कार्यान्वयन की संक्षिप्त प्रस्तुति और भविष्य में बेहतर राजभाषा कार्यान्वयन की दिशा पर विस्तृत चर्चा की गई. महाप्रबंधक (राजभाषा, संसदीय समिति एवं का.प्र) श्री के आर कनोजिया ने राजभाषा विभाग की ओर से महत्वपूर्ण प्रस्तुति दी.

प्रधान कार्यालय, बड़ौदा में हिन्दी दिवस का आयोजन

प्रधान कार्यालय, बड़ौदा में महाप्रबंधक (राजभाषा, संसदीय समिति एवं का.प्र) श्री के आर कनोजिया की अध्यक्षता में हिन्दी दिवस का आयोजन किया गया. इस अवसर पर महाप्रबंधक जी.एस पानेरी, उप महाप्रबंधक (मासंप्र) स्वप्ना बंदोपाध्याय एवं अन्य कार्यपालकगण और स्टाफ सदस्य उपस्थित थे.

वार्षिक राजभाषा समीक्षा बैठक का आयोजन

देश भर में पदस्थ राजभाषा अधिकारियों की वार्षिक राजभाषा समीक्षा बैठक का आयोजन ऑनलाइन माध्यम (माइक्रोसॉफ्ट टीम्स) से किया गया. यह समीक्षा अंचलवार की गई, जिनमें अंचल प्रमुखों तथा क्षेत्रीय प्रमुखों ने भी सहभागिता की. इन बैठकों में अंचल एवं क्षेत्रों में राजभाषा कार्यान्वयन को बेहतर बनाने पर विस्तार से चर्चा की गई.

बैंक ऑफ़ बड़ौदा Bank of Baroda

अक्षय्यम्

बैंक ऑफ़ बड़ौदा की तिमाही हिन्दी पत्रिका

वर्ष – 17 ✲ अंक – 63 ✲ जुलाई – सितंबर 2020

कार्यकारी सम्पादक

के. आर. कनोजिया

महाप्रबंधक (राजभाषा, संसदीय समिति एवं का.प्र.)

सम्पादक

पारुल मशर

सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा)

सहायक सम्पादक

अम्ब्रेश रंजन कुमार

वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा)

अमित बर्मन

प्रबंधक (राजभाषा)

–:– संपर्क :–

राजभाषा विभाग

बैंक ऑफ़ बड़ौदा, बड़ौदा भवन,

पांचवी मंजिल, आर सी दत्त रोड

अलकापुरी, बड़ौदा – 390007

फोन : 0265-2316580

ईमेल : rajbhasha.ho@bankofbaroda.com

bobakshayyam@gmail.com

बैंक ऑफ़ बड़ौदा के लिए **पारुल मशर,** सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा) द्वारा बड़ौदा भवन, बैंक ऑफ़ बड़ौदा, पांचवी मंजिल, आर सी दत्त रोड, अलकापुरी, बड़ौदा – 390007 से संपादित एवं प्रकाशित.

रुपांकन एवं मुद्रण

जयंत प्रिन्टरी एलएलपी, मुंबई

प्रकाशन तिथि : 15-11-2020

अनुक्रमणिका

इस अंक में

प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी का संदेश 04

कार्यपालक निदेशकों की डेस्क से 05-06

कार्यकारी संपादक का संदेश / अपनी बात 07

अपनी सक्षमता से जरूरतमंदों की मदद करें 08

रासायनिक उर्वरकों एवं कीटनाशकों का असंगत प्रयोग एवं उनके दुष्प्रभाव ...11

गोवा : भारतीय और विदेशी संस्कृति का संगम.......................14

डिजिटल उत्पादों का उपयोग – कितना सार्थक 18

पारंपरिक दुर्गा पूजा और उसका सांस्कृतिक महत्त्व 21

जीने का हक़ 30

एक था वाउचर : पेमेंट वाउचर की प्रेम कथा 35

निवेश के विभिन्न विकल्प 38

नवरात्रि एवं पारंपरिक गरबा 41

बदलती शिक्षण व्यवस्था 43

स्थायी स्तंभों में

26 आइये सीखें भारतीय भाषाएँ

28 अनुभव-अभिव्यक्ति

46 अपने ज्ञान को परखिए

47 बैंकिंग शब्द मंजूषा

48 पुस्तक-समीक्षा

50 चित्र बोलता है

अक्षय्यम्, बैंक ऑफ़ बड़ौदा की सभी शाखाओं/कार्यालयों में नि:शुल्क वितरण के लिये प्रकाशित की जाती है. इसमें व्यक्त विचारों से बैंक का सहमत होना आवश्यक नहीं है.

प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी का संदेश

अक्षय्यम् के जरिए आपसे संवाद करना मेरे लिए प्रसन्नता का विषय रहा है. पिछले कई महीनों में हम सभी ने सावधानीपूर्वक कदम बढ़ाते हुए स्वयं को और भी सतर्क, मजबूत और आत्मविश्वासी बनाने का काम किया है. दुनिया भर में उत्पन्न एक चुनौतीपूर्ण वातावरण का सामना करने के अनुभव के साथ बदली हुई मौजूदा व्यवस्थाओं में हमें उन्नति के लक्ष्य को हासिल करने का हर संभव प्रयास करना है. बीते दिनों में पूरी दुनिया ने जो क्षति देखी है इसका असर निश्चित रूप से हमारे कुछ साथियों पर भी पड़ा है. बहरहाल नियति का एक पक्ष यह भी है कि समय हर हाल में आगे बढ़ता ही है और इसकी धारा के साथ-साथ हमें अपना सफ़र जारी रखना होता है. खट्टे अनुभव यकीनन पीड़ा देते हैं परंतु हमारे पास अपनी यात्रा को आगे जारी रखने के अलावा दूसरा कोई बेहतर विकल्प नहीं है. इसलिए लक्ष्य की ओर आगे बढ़ना हमारी जिम्मेदारी है. हम एक सकारात्मक सोच और सामूहिक प्रयासों से अपने लक्ष्य की ओर और मजबूती से बढ़ सकते हैं और इस सूरत में हमारी सफलता की संभावनाएं और बढ़ जाती हैं.

बैंक द्वारा हाल ही में घोषित सितंबर 2020 तिमाही के वित्तीय परिणाम बैंक के बेहतर भविष्य का संकेत दे रहे हैं. ये परिणाम कोराना काल में लगाए गए प्रतिबंधों में छूट के बाद बैंकिंग व्यवसाय के सामान्य होने को परिलक्षित करते हैं. इस तिमाही में बैंक का परिचालन लाभ वर्ष-दर-वर्ष 4 प्रतिशत की बढ़ोतरी के साथ रू. 5,552 करोड़ रहा. इसके अतिरिक्त बैंक ने ऑर्गेनिक रिटेल और कृषि ऋणों में क्रमशः 16.8 प्रतिशत और 16.5 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की. बैंक ने वित्तीय वर्ष 2020-21 की दूसरी तिमाही में रिटेल ऋण मंजूरी और संवितरण में पिछले वित्तीय वर्ष की 37 प्रतिशत की वृद्धि की तुलना में 119 प्रतिशत की बढ़ोतरी दर्ज की.

बैंकिंग व्यवसाय की संभावनाओं की बात करें तो हम देखते हैं कि अलग-अलग समय पर हमें अलग-अलग तरह की संभावनाएं मौजूद मिलती हैं. बैंकिंग व्यवसाय के विकास के शुरूआती दौर में शहरी केन्द्र व्यवसाय प्रसार के मुख्य केन्द्र रहे. उसके बाद वित्तीय समावेशन के अंतर्गत और व्यवसाय में वृद्धि के उद्देश्य से हमारा जोर ग्रामीण क्षेत्रों में अपनी पकड़ मजबूत करने पर रहा. हम अपने इस उद्देश्य में सफल भी हुए हैं और ग्रामीण इलाकों की उन्नति में हम अहम भूमिका निभा रहे हैं. तकनीक के विकास से वर्तमान युग में हमारी सभी व्यवस्थाएं और सुविधाओं का डिजिटलीकरण हो रहा है. आज समय की मांग को समझते हुए हमारा बैंक अपने ग्राहकों को विविध बैंकिंग सेवाएं प्रदान करने के लिए डिजिटल माध्यमों का उपयोग कर रहा है. यह स्वभाविक है कि आने वाले समय में बैंकिंग क्षेत्र में और भी परिवर्तन आए और हम तदनुसार अपनी कार्यप्रणाली को समनुरूप बनाएं.

हमने देखा है कि बैंकिंग उद्योग की जिम्मेदारी मात्र व्यवसाय विकास ही नहीं है. इसके मूल कार्य में व्यवसाय की प्रगति के साथ देश की अर्थव्यवस्था का संतुलित विकास शामिल है. आज के बैंक सामाजिक विकास, पर्यावरण संतुलन, स्वास्थ्य, स्वच्छता, शिक्षा आदि जैसे अहम पहलुओं के विकास में भी बराबर ध्यान दे रहे हैं. वैश्विक स्तर की बात करें तो बैंक आज ग्रीन बॉन्ड जारी करने के माध्यम से नवीकरणीय ऊर्जा (Renewable energy) के उपयोग को बढ़ावा देने की दिशा में आगे बढ़ रहे हैं. इस प्रकार बैंक भी समाज में पर्यावरण संतुलन की दिशा में जागरूकता फैलाने के लिए अहम कार्य कर सकते हैं. पूरी दुनिया में ग्लोबल वार्मिंग के दुष्प्रभाव को देखते हुए उद्योग धंधों द्वारा नवीकरणीय ऊर्जा का उपयोग आज की आवश्यकता है तथा बैंक भी इस दिशा में ऋण सुविधा मुहैया कर अहम भूमिका निभा रहे हैं.

बैंकिंग कार्यप्रणाली में ग्राहकों के साथ संवाद होना अत्यंत स्वाभाविक और अत्यंत जरूरी है. बैंक ने हमेशा से ग्राहकों के साथ बेहतर संवाद को अनिवार्य माना है. इसके लिए बैंक ने हिन्दी के साथ-साथ अन्य क्षेत्रीय भाषाओं को संवाद का माध्यम बनाया है. हमारे बैंक ने राजभाषा के क्षेत्र में हमेशा ही नवोन्मेषी पहलें की हैं. मुझे खुशी है कि बैंक के इस उल्लेखनीय कार्य को भारत सरकार ने भी सराहा है और वित्तीय वर्ष 2019-20 के लिए राजभाषा के क्षेत्र में भारत सरकार का सर्वोच्च पुरस्कार कीर्ति पुरस्कार से सम्मानित किया है. इसके अलावा 'अक्षय्यम्' को भी कीर्ति पुरस्कार प्राप्त हुआ है. मैं मानता हूं कि ये दोनों सम्मान आप सभी स्टाफ-सदस्यों के श्रेष्ठ कार्यनिष्पादन के ही परिणाम हैं. मुझे विश्वास है कि आप सभी पहले की भांति भविष्य में भी बैंक के विकास के साथ-साथ राजभाषा की प्रगति में भी अहम भूमिका निभाएंगे.

शुभकामनाओं सहित,

संजीव चड्ढा

बैंकिंग व्यवसाय की संभावनाओं की बात करें तो हम देखते हैं कि अलग-अलग समय पर हमें अलग-अलग तरह की संभावनाएं मौजूद मिलती हैं. बैंकिंग व्यवसाय के विकास के शुरूआती दौर में शहरी केन्द्र व्यवसाय प्रसार के मुख्य केन्द्र रहे. उसके बाद वित्तीय समावेशन के अंतर्गत और व्यवसाय में वृद्धि के उद्देश्य से हमारा जोर ग्रामीण क्षेत्रों में अपनी पकड़ मजबूत करने पर रहा. हम अपने इस उद्देश्य में सफल भी हुए हैं और ग्रामीण इलाकों की उन्नति में हम अहम भूमिका निभा रहे हैं.

कार्यपालक निदेशक की डेस्क से...

प्रिय साथियो,

बैंक की हिन्दी पत्रिका अक्षय्यम् के इस नवीनतम अंक के माध्यम से आपसे संवाद करने का पुन: अवसर पाकर प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है.

त्यौहारों के इस मौसम में अक्षय्यम् का यह नया अंक आप सबके सामने है. जिस प्रकार शरद ऋतु के आगमन से तापमान में कमी होने लगती है, उसी प्रकार त्यौहारों के आगमन से मनुष्य को अपने दु:ख, संताप आदि में कमी महसूस होने लगती है क्योंकि त्यौहार हमारे जीवन में खुशियों के साथ नई उमंग भी लेकर आते हैं. मुझे यह जानकर खुशी हुई है कि बैंक ने अन्य मानदंडों के साथ-साथ राजभाषा के क्षेत्र में भी अपना श्रेष्ठ कार्यनिष्पादन जारी रखा है. यही कारण है कि हमारे बैंक और बैंक की पत्रिका 'अक्षय्यम्' को इस वर्ष भी भारत सरकार का सर्वोच्च सम्मान 'राजभाषा कीर्ति पुरस्कार' प्राप्त हुआ है. इस उपलब्धि के लिए मैं आप सभी को बधाई और मंगलकामनाएं देता हूं.

त्यौहार न सिर्फ सामाजिक दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं, बल्कि आर्थिक दृष्टि से भी काफी महत्वपूर्ण हैं. इन दिनों में वस्तुओं की खपत बढ़ने से अर्थव्यवस्था के सभी क्षेत्रों में बेहतर कार्यनिष्पादन देखने को मिलता है. अधिकतर लोगों की आय में वृद्धि होती है जिससे खुशियों के साथ-साथ आत्मविश्वास भी बढ़ता है. आज जब पूरा विश्व अभूतपूर्व चुनौती से दो-दो हाथ कर रहा है, लोगों को खुशियों और आत्मविश्वास की जरूरत है. अपने आत्मविश्वास के बल पर ही हम इस संकट भरे दौर का बहादुरी से सामना कर रहे हैं. आत्मविश्वास हमें किसी भी चुनौती से लड़ने में उसी प्रकार सहायता करता है जिस प्रकार हवा पक्षियों को तेजी से उड़ने में सहायता करती है.

किसी भी संगठन के लिए निरंतर विकास उसके मजबूत अस्तित्व के लिए जरूरी है. व्यवसाय और सेवा क्षेत्र से जुड़े होने के नाते हमारे लिए सतत् व्यवसाय विकास महत्वपूर्ण है. वित्तीय वर्ष 2020-21 की दो तिमाहियां गुज़र चुकी हैं, जो कि कमोबेश हम सभी के लिए सकंट से भरी रही. परंतु इस स्थिति में भी हमने अपने बेहतर कार्यनिष्पादन को जारी रखा है. मौजूदा वित्तीय वर्ष का कार्यनिष्पादन बहुत हद तक शेष दो तिमाहियों में किए गए कार्य पर निर्भर होगा. इसलिए आने वाले दिनों में हम सभी के लिए यह जरूरी है कि वैश्विक और घरेलू चुनौतियों का सामना करते हुए हम अपने बैंक के व्यवसाय विकास के सभी पहलुओं पर ध्यान दें.

इसके साथ ही मौजूदा दौर में हमें अपने स्वास्थ्य का पहले से कहीं अधिक ध्यान रखने की जरूरत है, क्योंकि स्वास्थ्य सबसे बड़ा उपहार है. मुझे विश्वास है कि जिस प्रकार सूरज की नई किरणें हमें नई ऊर्जा प्रदान करती हैं, उसी प्रकार आने वाला कल भी सूर्य के समान ही हमारे जीवन में नई किरणें फैलाकर हमें नई ऊर्जा प्रदान करेगा. इन्हीं शब्दों के साथ, आप सभी के अच्छे स्वास्थ्य और प्रसन्नता की कामना करता हूँ.

शुभकामनाओं सहित,

मुरली रामास्वामी

कार्यपालक निदेशक की डेस्क से...

प्रिय साथियो

बैंक की नवीन गतिविधियों एवं नवोन्मेषी पहलों को समेटे हुए गृहपत्रिका 'अक्षय्यम्' के माध्यम से आपसे संवाद करना मेरे लिए अत्यंत सुखद अनुभूति है.

वास्तव में पत्रिकाएं हमारे विचारों एवं भावनाओं की संवाहक होती हैं. पिछले कुछ महीनों में हम सभी ने जो अनुभव किया है उसे भूल जाना मुश्किल है. यह सच है कि चुनौतियां हमें सदैव आगे बढ़ने का हौसला देती हैं, किंतु यह भी सच है कि आज वर्ष 2020 में हम एक ऐसी दुनिया में हैं जो सभी के लिए बदल गई है. इन मौजूदा परिस्थितियों ने व्यवसाय के संबंध में हमारे धैर्य का परीक्षण किया है और हमारे कार्य के स्वरूप को भी प्रभावित किया है.

इस दौरान हमने अपने ग्राहकों और कर्मचारियों की सुविधाओं को ध्यान में रखते हुए कई नई योजनाएं एवं कार्यक्रम तैयार किए हैं. हम बैंकिंग सेवाओं को अधिक से अधिक डिजिटलाइज करने के लिए प्रयासरत हैं. इसी क्रम में हमने अपने कर्मचारियों की प्रशिक्षण व्यवस्था का डिजिटलीकरण करने के लिए कई नए परिवर्तन किए हैं. यह दौर बदलावों का दौर रहा है इसके बावजूद भी अगर कोई चीज नहीं बदली है तो वह है ग्राहकों के प्रति हमारी प्रतिबद्धता. इस कठिन परिस्थिति में भी हमने अपने कर्तव्यनिष्ठा और अथक प्रयासों से बैंक को निरंतर ऊंचाइयों पर बनाए रखा है, जिसका प्रमाण जून, 2020 तिमाही के दौरान बैंक के परिचालन लाभ, अग्रिम, कासा औसत आदि की बढ़ोत्तरी के रूप में देखा जा सकता है.

इसके साथ ही महामारी के कारण इस बदले हुए परिदृश्य में बैंक ने अपनी व्यावसायिक नीतियों के प्रति नया दृष्टिकोण अपनाते हुए ग्राहकों को साथ लेकर चलने की नीति को अपनाया है. इसके लिए बैंक ने कोविड-19 के कारण वित्तीय दबावों का सामना कर रहे अपने वैयक्तिक एवं एमएसएमई उधारकर्ता खातों के लिए भारत सरकार एवं भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा जारी दिशानिर्देशों के अनुरूप समाधान फ्रेमवर्क से संबन्धित योजनाओं को क्रियान्वित करने हेतु कई नीतियां तैयार की हैं. इस कोविड-19 समाधान-फ्रेमवर्क के माध्यम से लागू वसूली नीतियों के सकारात्मक परिणाम हमें मिल रहे हैं तथा ग्राहकों के साथ बैंक का एक बेहतर सामंजस्य भी स्थापित हो रहा है.

मुझे यह बताते हुए प्रसन्नता है कि कोविड-19 वायरस के प्रभाव में अभी भले ही कोई अहम् बदलाव ना हुआ हो लेकिन इसने एक ग्राहकोन्मुखी बैंक के रूप में बेहतर सेवा देने के तरीके खोजने के परिप्रेक्ष्य में हमें और अधिक बहुमुखी और बहुआयामी बना दिया है. हम अपने ग्राहकों से बेहतर संबंध बनाने के लिए उनकी अपनी भाषा में बैंकिंग को बढ़ावा देने के लिए भी प्रतिबद्ध हैं. मुझे विश्वास है कि भविष्य में भी हम हर चुनौती को एक अवसर मानकर अपनी सेवाओं को उत्तम से सर्वोत्तम बनाने के लिए प्रयासरत रहेंगे.

शुभकामनाओं सहित,

शांति लाल जैन

कार्यपालक निदेशक की डेस्क से

प्रिय साथियो,

पत्रिका के इस अंक के माध्यम से आपसे संवाद करते हुए मुझे प्रसन्नता हो रही है. मौजूदा वित्तीय वर्ष की शुरूआत हम सभी के लिए बहुत ही चुनौतीपूर्ण रही. उस समय से लेकर अब तक की यात्रा भी कई मायनों में काफी उतार चढ़ाव भरी रही है. इस दौरान कई खट्टे अनुभवों को महसूस करने के साथ-साथ नए दौर में जीने के सलीके को आत्मसात करना भी बहुत अधिक आसान नहीं रहा है. चूंकि इस समय ने संपूर्ण विश्व को ही जीने के नए तरीकों को अपनाने के लिए मजबूर किया है, तो जाहिर है कि इन बदली हुई परिस्थितियों में नई चुनौतियों के बीच ही सही अपनी यात्रा को हमे निरंतर आगे बढ़ाना है. अब्राहम लिंकन ने कहा है कि *''हमेशा यह ध्यान में रखें कि सफल होने के लिए किसी अन्य चीज़ की अपेक्षा आपका स्वयं का संकल्प ज्यादा महत्वपूर्ण है.''*

इस प्रकार यह जरूरी है कि सभी परिस्थितियों में हम एक बेहतर कल के निर्माण के संकल्प को लेकर आगे बढ़ें. पिछले दिनों तमाम व्यवधानों के बीच आप सभी के संयुक्त प्रयासों से हमने बैंक हित में कई पहलों को आगे बढ़ाया है. हमने अपने किसान भाइयों तक अपनी पहुंच को और मजबूत करने के लिए प्रभावी कदम उठाए हैं. इस दिशा में हमने एक ही दिन में तीन अहम पहलें कीं - अपने 11 अंचलों में ट्रैक्टर वित्तपोषण के लिए क्लस्टर मॉडल की शुरूआत, बैंक के वित्तपोषण पर रियायत प्रदान करते हुए मेसर्स ग्रोमेक्स एग्री इक्विपमेंट लिमिटेड के साथ समझौता ज्ञापन और कृषि पैदावार को बेहतर बनाने के लिए अखिल भारतीय स्तर पर ट्रैक्टर ऋणों का संवितरण. बैंक द्वारा 1 अक्तूबर से 16 अक्तूबर 2020 तक 'बड़ौदा किसान पखवाड़ा' का भी आयोजन किया गया है. इसका मुख्य उद्देश्य विभिन्न योजनाओं के जरिए किसान भाइयों को जागरूक और सक्षम बनाना है. हमारा यह प्रयास उनकी आय को दोगुनी करने के भारत सरकार की महत्वाकांक्षी योजना के अनुरूप है.

आप यह भी जानते हैं कि भारत का दिल गावों में बसता है. प्रकृति को अनुभव करने का सबसे अहम जरिया गांव ही हैं. हमारा यह प्रयास होना चाहिए कि हम गांव के समावेशी विकास पर ध्यान दें. भाषाएं हमें अपने गांवों से संपर्क करने में मददगार रही हैं. इस लिहाज़ से यह जरूरी है कि हम सभी अपनी भाषाओं और बोलियों के विकास पर भी ध्यान दें. बैंक की पत्रिका 'अक्षय्यम्' भी लगातार भाषाओं के संरक्षण का कार्य करती आई है. मुझे खुशी है कि इस वर्ष हमारे बैंक के साथ-साथ 'अक्षय्यम्' को भारत सरकार का सर्वोच्च कीर्ति पुरस्कार प्राप्त हुआ है. यह सम्मान आप सभी स्टाफ सदस्यों द्वारा राजभाषा के क्षेत्र में किए गए बेहतर कार्य का परिणाम है. मैं आशा करता हूं कि आप सभी इस चुनौतीपूर्ण समय में स्वयं और अपने परिवार को सुरक्षित रखते हुए बैंक की प्रगति के लिए अपने बहुमूल्य योगदान को जारी रखेंगे.

शुभकामनाओं सहित,

विक्रमादित्य सिंह खीची

कार्यपालक निदेशक की डेस्क से

प्रिय साथियो,

बैंक की हिन्दी पत्रिका 'अक्षय्यम्' के माध्यम से आप सभी को संबोधित करना मुझे अत्यंत सुखद अनुभूति प्रदान करता है. हमारा बैंक राष्ट्रीय स्तर पर सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों के बीच स्पर्धा में निरंतर अपना अग्रणी स्थान बनाए हुए है जिसका प्रतिफल है कि भारत सरकार द्वारा हमारे बैंक को राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में श्रेष्ठ कार्यनिष्पादन के लिए 'राजभाषा कीर्ति पुरस्कार' हेतु चयन किया गया है.

आप जानते हैं कि जीवन के हर क्षेत्र में नवोन्मेषिता की महत्वपूर्ण भूमिका होती है. ऐसे में राजभाषा कार्यान्वयन भला कैसे अपवाद हो सकता है. स्वाध्याय मनुष्य को सम्पूर्णता की ओर ले जाता है, जबकि लेखन व सृजन उसके व्यक्तित्व के यथार्थ स्वरूप को उद्घाटित करते हैं. मुझे आप सभी से यह भी साझा करते हुए अत्यधिक हर्ष का अनुभव हो रहा है कि हमारे स्टाफ-सदस्य इन पैमानों पर हमेशा से अग्रसर रहे हैं. इस तथ्य की अभिव्यक्ति का स्वरूप यह है कि हमारी हिन्दी पत्रिका अक्षय्यम् का भी भारत सरकार द्वारा पत्रिकाओं की श्रेणी में 'राजभाषा कीर्ति पुरस्कार' के लिए चयन किया गया है.

आज राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कोरोना महामारी के प्रकोप ने जिस तरह से वैश्विक अर्थव्यवस्था को प्रभावित किया है, इसे सदियों तक भुलाया नहीं जा सकेगा. ऐसी स्थिति में भी हमारे स्टाफ-सदस्यों द्वारा बैंकिंग कारोबार को दृढ़ता के साथ जारी रखते हुए ग्राहकों को हर प्रकार की बैंकिंग सेवाएं उपलब्ध कराते रहना एक चुनौतीपूर्ण कार्य था, जिसे बैंक के डिजिटल उत्पादों की सहायता से सशक्त रूप से सम्पन्न किया गया. चूंकि सामान्य जनसमुदाय ने भी अब इस बात को अच्छी तरह से ग्रहण कर लिया है कि मानव जीवन का वर्तमान और भावी आधार डिजिटल ही है, मैं आप सभी का आह्वान करता हूं कि मूलभूत बैंकिंग कारोबार के साथ-साथ हर स्तर पर बैंक के डिजिटल उत्पादों का न सिर्फ प्रचार-प्रसार करें अपितु जनसामान्य को इससे सम्बद्ध करें और जनहित के साथ-साथ बैंक की लाभप्रदत्ता में अपना महत्वपूर्ण योगदान दें.

हमें इन सभी कार्यकलापों के साथ ही राजभाषा कार्यान्वयन की अपनी मजबूत स्थिति को भी बनाए रखते हुए नित नई उपलब्धियां हासिल करने की दिशा में नवोन्मेषी पहलों को सर्वदा जारी रखना है. मुझे विश्वास है कि हमारा संगठित स्वरूप अपने बैंकिंग कारोबार के साथ-साथ राजभाषा की इस अविचल यात्रा को जारी रखते हुए अपने सभी लक्ष्यों की प्राप्ति में सफल सिद्ध होगा.

मैं कामना करता हूं कि आप हमेशा इस प्रगति के पथ को आलोकित करते रहें.

शुभकामनाओं सहित,

अजय के खुराना

कार्यकारी संपादक की कलम से...

प्रिय साथियो,

अक्षय्यम् के माध्यम से पुन: आपसे संवाद करने का सुखद अवसर मिला है. मैं इसे अपना सौभाग्य मानता हूं.

आज का समय अपने आप में इसलिए विशेष है क्योंकि हम सब अपने भविष्य को बेहतर बनाने के लिए कड़ी चुनौती का सामना कर रहे हैं और इस चुनौती से पार पाने के लिए अभूतपूर्व प्रयास कर रहे हैं. शायद, हमारा यह प्रयास इतिहास के पन्नों पर सुनहरे अक्षरों में लिखा जाएगा.

इतिहास की बात चली है तो हम यह अच्छी तरह जानते हैं कि मानव इतिहास भी चुनौतियों से भरा पड़ा है. हमारे पूर्वजों ने उन सभी चुनौतियों का सामना किया और उनसे कुछ सीख लेकर आगे बढ़े, नए-नए आविष्कार किए. यह भी उल्लेखनीय है कि आविष्कार तभी किए जाते हैं, जब हमें उसकी आवश्यकता होती है या हमारे समक्ष अस्तित्व बचाने की चुनौती होती है.

आज हमारे सामने आवश्यकता भी है और चुनौती भी. आवश्यकता इस बात की है कि हम किस तरह अपने दैनिक जीवन को पटरी पर लाएं एवं सहजता से जीवन-यापन कर सकें और चुनौती है अपना अस्तित्व बचाए रखने की. सभी अलग-अलग मोर्चों पर इस चुनौती से दो-दो हाथ कर रहे हैं और आवश्यकता के अनुसार नई-नई चीजें सीख रहे हैं, नए-नए उपाय अपना रहे हैं.

हमारे लिए अपने इतिहास से सीख लेना आवश्यक भी है और उपयोगी भी. मानव इतिहास हमें कम से कम वस्तुओं के साथ जीवन जीने की कला सिखाता है. हालांकि, आज की मूलभूत आवश्यकताएं रोटी, कपड़ा और मकान के अलावा भी कई हैं. इन मूलभूत आवश्यकताओं की श्रेणी में बैंकिंग भी है. इसे लोगों तक सुगमता से पहुंचाने के कार्यदायित्व को हमने काफी बेहतर ढंग से निभाया है. इस दौरान, लोगों के लिए ऑनलाइन बैंकिंग सर्वाधिक उपयोगी साबित हुई. आम लोगों ने इसकी महत्ता को पहचाना है. यह सिर्फ हमारा कार्य ही नहीं अपितु कर्तव्य भी है कि हम लोगों को ऑनलाइन बैंकिंग के लिए प्रेरित करें, ताकि लोग इस सुविधा का अधिक से अधिक फायदा उठा सकें स्वयं को सुरक्षित रखते हुए बैंकिंग कर सकें. हमारे लिए बैंकिंग न केवल व्यवसाय है, बल्कि यह जनहित का कार्य भी है.

इस जनहित के कार्य में क्षेत्रीय भाषाएं हमारे लिए सर्वाधिक उपयोगी सिद्ध होंगी. जिस तरह पतवार के बिना नाव को किनारे नहीं लगाया जा सकता, उसी तरह क्षेत्रीय भाषाओं के बिना यह कार्य पूरा नहीं किया जा सकता. हमें लोगों की भाषाओं में बैंकिंग सुविधाएं देने का प्रयास करते रहना चाहिए. इसी में बैंक, भाषा और जनता तीनों का हित समाहित है.

मुझे विश्वास है कि तेजी से बदलते इस विश्व में आगे बढ़ते रहने का जज़्बा हमें नई ऊंचाइयों पर ले जाएगा.

आप सभी स्वस्थ और सुरक्षित रहें, इन्हीं शुभकामनाओं सहित,

के. आर. कनोजिया

अपनी बात

परहित सरिस धरम नहिं भाई ।
पर पीड़ा सम नहिं अधमाई ।।

कितनी अजीब बात है कि गोस्वामी तुलसीदास जी की उक्त पंक्ति को चरितार्थ करते हुए दो उदाहरण इस अंक में एक साथ प्रस्तुत हुए हैं. एक ओर जहां अरुणाचल प्रदेश के सुदूरवर्ती इलाके में जा कर बच्चों के जीवन में ज्ञान का उजाला फैलाने के लिए अपना जीवन लगा देने वाले केरलवासी अंकल मूसा उर्फ सत्यनारायण मुंडायूर का साक्षात्कार, तो दूसरी ओर केरल में कुछ माह पहले अनानस में विस्फोटक खिला कर एक हथिनी का जीवन बड़ी क्रूरता से छीन लिए जाने की घटना के साथ मनुष्यता के लिए प्रश्न खड़ा करती हुई रचना 'जीने का हक!'

मानव और दानव में केवल प्रथम एक अक्षर का ही अंतर है. मनुष्य के मन में ऐसा क्या चलता होगा कि क्षण भर में ही 'मा' का स्थान 'दा' ले लेता है? शायर अनवर सऊर ने कहा है-

बुरा बुरे के अलावा भला भी होता है,
हर आदमी में कोई दूसरा भी होता है

शायद मनुष्य मात्र में डॉ. जेकिल और मिस्टर हाइड दोनों बसते हैं. सन् 1886 में आर एल स्टीवन्सन का उपन्यास 'डॉ. जेकिल और मिस्टर हाइड' आया था जिसमें एक ही व्यक्ति के दो स्वरूपों का चित्रण हुआ है-एक अच्छा और एक बुरा. प्रत्येक व्यक्ति में एक अच्छा इंसान और एक बुरा इंसान दोनों होते हैं. कोई उपाय तो होगा कि उस 'बुरे' को जागने ही न दिया जाए?

एक बड़ा ही सुंदर शब्द है-समानुभूति. यह शब्द सहानुभूति से अलग है. सहानुभूति का अर्थ है किसी पीड़ित व्यक्ति के लिए दया या करूणा की भावना. समानुभूति का अर्थ है किसी पीड़ित व्यक्ति के लिए दया या करूणा की भावना के साथ ही उस पीड़ित की पीड़ा को उतनी ही तीव्रता से स्वयं भी महसूस करना जितनी तीव्रता से वह पीड़ित व्यक्ति अनुभव करता है. जिस दिन प्रत्येक मनुष्य के हृदय में दूसरों की पीड़ा के प्रति समानुभूति की भावना जन्मेगी, शायद उस दिन पृथ्वी पर से पीड़ा का ही अंत हो जाएगा.

अक्षय्यम् पत्रिका के प्रकाशन का उद्देश्य यही है कि ऐसी रचनाएं पाठकों के समक्ष लाए, ऐसे व्यक्तित्व से परिचय कराए, जिससे कि जानकारियां मिलने, ज्ञान बढ़ने के साथ-साथ जो उन्हें उद्वेलित करे, उनकी संवेदनशीलता को जगाए, उन्हें सोचने पर मजबूर करे. आइए, हम अपने अंदर के बुरे इन्सान को व्यक्त होने का मौका ही न दें और गीतकार शैलेंद्र के ये शब्द सदा गुनगुनाते रहें-

किसी की मुस्कुराहटों पे हो निसार, किसी का दर्द मिल सके तो ले उधार
किसी के वास्ते हो तेरे दिल में प्यार, जीना इसी का नाम है.........

शुभकामनाओं सहित,

पारुल मशर

"अपनी सक्षमता से जरूरतमंदों की मदद करें"

पद्मश्री सत्यनारायण मुंडायूर उन जानी-मानी हस्तियों में से एक हैं, जिन्होंने अपने व्यक्तिगत प्रयासों से अरूणाचल प्रदेश के आंतरिक इलाकों में स्थानीय बच्चों के बीच शिक्षा के प्रसार के लिए उल्लेखनीय कार्य किया है. आप मूल रूप से केरल के निवासी हैं परंतु सामाजिक कार्य, विशेषकर बच्चों को शिक्षा का सुखद अनुभव प्रदान करने के लिए भारत के पूर्वोत्तर राज्य में बस कर पिछले 32 वर्षों से अरूणाचल प्रदेश में शिक्षा के प्रसार में सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं. आपने शिक्षण के नवोन्मेषी तरीके अपनाकर छात्र-छात्राओं में पढ़ने की आदतें विकसित कीं. अपने नेक विचारों से आपने वहां के युवाओं को बहुत ही प्रभावित किया. निःस्वार्थ भाव से काम करते हुए आपने राज्य की लोहित दिबांग वैली के क्षेत्रों में सफलतापूर्वक बच्चों में पढ़ने की आदतों को विकसित करने का काम किया है. शिक्षा के प्रसार में आपकी उपलब्धियों के लिए आपको इसी साल भारत सरकार द्वारा पद्मश्री पुरस्कार से नवाजा गया है. पत्रिका के सहायक संपादक अम्ब्रेश रंजन कुमार के साथ उनसे हुई बातचीत के प्रमुख अंश हम यहां पाठकों के लिए प्रस्तुत कर रहे हैं.

1. कृपया अपने प्रारंभिक जीवन के बारे में बताएं.

मेरा जन्म वर्ष 1952 में केरल में हुआ था और राज्य के अलग-अलग स्कूलों में मेरी पढाई हुई. बचपन के दिनों को मैं इस लिहाज़ से कुछ विशेष मानता हूं कि मुझे बचपन में पढ़ने को लेकर बहुत प्रोत्साहन और स्वतंत्रता दी गई. मेरे घर में भी पढ़ने का बहुत ही अच्छा वातावरण था और मेरे परिवार के सभी सदस्यों को पढ़ने का बहुत शौक था. मेरे पिता इंडियन ओवरसीज़ बैंक में प्रबंधक थे. मेरे घर में प्रति दिन अंग्रेजी और मलयालम के समाचारपत्र आते थे. मेरी दो बड़ी बहनें कॉलेज में पढ़ रही थीं. मेरी मां हालांकि कभी स्कूल नहीं गईं, परंतु उन्हें पढ़ने और लिखने का बहुत शौक था. उन्हें मलयालम और संस्कृत की कविताएं बहुत याद रहती थीं. स्कूल की किताबों को पढ़ने को लेकर मुझे कभी भी कोई समस्या नहीं रही, क्योंकि हम पहले ही इतना पढ़ चुके होते थे कि स्कूल की किताबें हमारे लिए कम पड़ जाती थीं. इस प्रकार घर में पढ़ाई को लेकर कभी कुछ दबाव या चिंता नहीं थी. घर में पढ़ाई को लेकर कभी परिवार की ओर से किसी नियंत्रण की जरूरत नहीं पड़ी. घर वाले बस इतना चाहते थे कि अच्छे से रहना है और अनुशासन में रहना है. घर में कभी ऐसी स्थिति नहीं आई कि मुझे कभी कोई दंड मिले. आज के परिवार के लिए भी यह सीखने वाली बात है कि हम अपने बच्चों में कैसे आत्मविश्वास पैदा करें और उन्हें अपनी रूचि के क्षेत्र में बढ़ने के लिए प्रोत्साहित करें. मेरा मानना है कि माता-पिता द्वारा अपने विचार बच्चों पर थोपना हमेशा कारगर नहीं होता है. माता-पिता और बच्चों की आकांक्षाएं अलग-अलग हों तो दोनों में तालमेल मुश्किल होता है. पिताजी की नौकरी स्थानांतरण स्वरूप वाली थी तो समय-समय पर उनका स्थानांतरण होता रहा, हालांकि इस वजह से मुझे कोई परेशानी नहीं हुई. तथापि, मुझे अलग-अलग प्रदेशों के वातावरण में रहने का अवसर मिला. इससे मेरा आत्मविश्वास और अनुभव बढ़ा.

पद्मश्री सत्यनारायणन मुंडयूर चीन की सीमा के निकट स्थित गांव में स्थानीय बच्चों के साथ पुस्तक पठन सत्र के दौरान

2. आप अपनी वर्तमान उपलब्धि को अपने विद्यार्थी जीवन से कैसे जोड़ कर देखते हैं?

विद्यार्थी जीवन में मेरी कुछ खास महत्वाकांक्षा नहीं थी. मुझे पढ़ने का बहुत शौक रहा है और मैं मानता हूं कि पढ़ने से आप अलग-अलग चीज़ें सीख पाते हैं. उस समय केरल में पढ़ने पर बहुत जोर दिया जाता था. 1950-60 के दशक में केरल में कम्युनिटी आधारित रीडिंग सोसायटी थी. समाज में यह सोच थी कि बिना पढ़े और वाचन के अपनी सोच और व्यक्तित्व विकसित नहीं कर सकते हैं. यानी कि 'पढ़ो और बढ़ो' की सोच थी. यही सबका आदर्श था. सभी गांवों में पुस्तकालय की सुविधा थी. यही चीज़ मैंने अरूणाचल प्रदेश में दोहराई और पुस्तकालय को गतिविधियों का केन्द्र बनाया. इसने विद्यार्थी समुदाय को आकर्षित किया. केरल में पढ़ाई करने के बाद मैं मुंबई शिफ्ट कर गया और एक अलग महानगरीय वातावरण में मुझे काम करने का अवसर मिला.

3. आयकर विभाग की सेवा में जुड़ने तक की आपकी यात्रा कैसी रही? इस नौकरी को छोड़ने का क्या कारण रहा?

पठन-पाठन किसी व्यक्ति में कई प्रकार की रूचि को विकसित करता है. मैं विज्ञान का छात्र था परंतु इसके साथ-साथ कला, लेखन और पढ़ने के क्षेत्र में भी मेरी रूचि रही. पिताजी के

सेवानिवृत्त होने के बाद हमारे लिए वित्तीय असुरक्षा की स्थिति उत्पन्न हुई क्योंकि उस समय बैंकों का राष्ट्रीयकरण नहीं हुआ था कि लगातार पेंशन मिलती रहे. तो नौकरी प्राप्त करना मेरी प्राथमिकता रही. फिर मैं रोजगार के लिए आयकर विभाग में नौकरी से जुड़ा. ऐसा नहीं था कि यह मेरा लक्ष्य था परंतु सौभाग्यवश मैं वहां बहुत ही प्रतिभावान और समर्पित लोगों से मिला जिन्होंने मुझे प्रोत्साहित किया. उनके मार्गदर्शन और सहायता से मुझे अपनी रूचि को विकसित करने का अवसर मिला. मुझे ऐसा लगा कि मैं यहां के लिए नहीं बना हूं. मुझे कुछ रचनात्मक और अलग करने की इच्छा हुई. मैंने सोचा कि शिक्षा के क्षेत्र में मुझे कुछ करना चाहिए. क्योंकि मुझे सहज ही बहुत अच्छी शिक्षा मिली, मुझे लगा दूसरे बच्चों को भी ऐसे अवसर मिलने चाहिए. मैंने रामकृष्ण मिशन जाना शुरू किया. मैं शुरू से ही स्वामी विवेकानंद के विचारों से बहुत प्रभावित था. मैंने कहीं विवेकानंद केन्द्र, कन्याकुमारी का एक विज्ञापन देखा कि अरूणाचल प्रदेश में वे कोई स्कूल खोल रहे हैं जहां स्वयंसेवियों/ शिक्षकों की आवश्यकता है. मैंने उसके लिए तैयारी शुरू की. मैंने बम्बई यूनिवर्सिटी से एम.ए. लिंग्विस्टिक की पढ़ाई पूरी की और आयकर विभाग से त्यागपत्र दे दिया. मुझे लगा कि ईश्वर से मुझे जो कुछ भी मिला है मुझे उसे लोगों के साथ साझा करना चाहिए.

मैंने सोचा कि मैं नई पीढ़ी के लिए कुछ करूं. मुझे इतनी अच्छी शिक्षा मिली है तो मुझे अपने ज्ञान को लोगों के साथ साझा करना चाहिए. इसी सोच के कारण मेरा अरूणाचल प्रदेश आना हुआ. अरूणाचल प्रदेश आने से पहले मैं यहां कि बारे में ज्यादा जानता भी नहीं था. मैं यह मानता हूं कि यह दैवीय इच्छा ही थी कि मैं अरूणाचल प्रदेश आया. यहां आकर मैं विशेष कर युवाओं की ऊर्जा और सक्रियता से बहुत प्रभावित हुआ. अरूणाचल प्रदेश में ज्यादातर आवासीय स्कूल थे. लोग दूर-दूर से पढ़ने आते थे. अधिकतर लोग हॉस्टल में रहते थे. यहां गांव के लोग ज्यादातर असमिया भाषा बोलते थे. राज्य सरकार ने अंग्रेजी को शिक्षा के माध्यम के रूप में चुना था, हिन्दी उतनी लोकप्रिय नहीं थी. स्कूल में विद्यार्थी जीवन में मैं हिन्दी लिखना और पढ़ना अच्छी तरह सीख गया था पर बातचीत में हिन्दी भाषा का उपयोग शायद ही कभी करता था. मुंबई में मैं सामान्य रूप से हिन्दी बोलना भी सीख गया. उस समय अरूणाचल प्रदेश में जिला पुस्तकालय के अलावा कोई ऐसी सुविधा नहीं थी जहां पठन-पाठन का कार्य हो सके. अधिकांश स्कूलों में भी पुस्तकालय नहीं थे. मैंने यह सोचा कि किस तरह स्कूली विद्यार्थियों के हॉस्टल और स्कूली जीवन को रोचक बनाया जाए, बच्चों को खुश रखा जाए? तभी शिक्षा का विकास होगा. इस तरह मैं उनके लिए कुछ रोचक गतिविधियों के बारे में सोचने लगा. मुझे यहां के लोगों का बहुत स्नेह मिला. प्राकृतिक दृष्टि से भी यह क्षेत्र बहुत सुंदर है तो मुझे भी यहां काम करने में कोई असुविधा नहीं हुई.

वार्को, अरूणाचल प्रदेश में विश्व पुस्तक दिवस

4. शिक्षा के प्रसार के लिए आपने किस माध्यम का चयन किया?

अरूणाचल प्रदेश में मैंने विवेकानंद केन्द्रीय विद्यालय स्कूल में सहयोगियों आदि के साथ मिल कर कार्य किया. ये स्कूल आवीसीय स्कूल थे. इसके लिए एक सक्रिय क्लासरूम का निर्माण, अकादमिक पर्फोर्मेंस, संपूर्ण शैक्षिक विकास, वित्तीय सुरक्षा-उन्मुख शिक्षा, स्कूल के संसाधनों का सदुपयोग, पुस्तकालय सुविधा की 24 घंटे उपलब्धता इत्यादि कार्यों पर जोर दिया. मेरा मानना है कि पुस्तकालय का नियंत्रण और प्रबंधन स्कूल के विद्यार्थियों द्वारा किया जाना चाहिए, जिससे कि उनमें आत्मविश्वास बढ़े. इसलिए मैंने होम लाइब्रेरी की स्थापना पर बल दिया. इस प्रकार से पुस्तकालय के सदुपयोग पर ध्यान दिया. शिक्षा का विकास हम सब की जिम्मेदारी होनी चाहिए न कि केवल सरकार की. पुस्तकालय विद्यार्थियों और स्वयंसेवकों द्वारा प्रबंधित हो और आसान पहुंच में हो, इसके संचालन के लिए विद्यार्थियों को स्वतंत्रता और जिम्मेदारी देनी होगी. हमने विद्यार्थियों को अपने पुस्तकालय स्थापित करने पर जोर दिया.

5. कृपया अरूणाचल प्रदेश के सुदूर क्षेत्र में अपने मिशन पर काम करने में आपके समक्ष आईं सांस्कृतिक और भौगोलिक चुनौतियों से अवगत कराएं.

वास्तव में अरूणाचल प्रदेश की संस्कृति अपने आप में अलग है. चूंकि मैं दक्षिण भारत से आता हूं तो मेरे लिए यह प्रदेश बिल्कुल अलग था. परंतु दृढ़ इच्छाशक्ति के कारण मुझे यहां अपने काम में ज्यादा दिक्कत नहीं हुई. खान-पान और मौसम को लेकर थोड़ी समस्या थी, परंतु समय के साथ अपने काम की सफलता की राह में ये चुनौतियां ज्यादा दिन तक टिक नहीं पाईं. मैंने यह सोचा कि मैं कुछ रचनात्मक कार्य करने आया हूं, न कि सुविधाजनक जीवन जीने आया हूं.

भाषाई समस्या की बात करें तो, मैं चूंकि मुंबई से आया था तो मुझे हिन्दी तो आती थी. तो ज्यादा समस्या नहीं आई. मैं और मेरी टीम के सदस्य धीरे-धीरे असमिया भी सीख गये. इस प्रकार भाषाई समस्या ने मुझे अधिक परेशान नहीं किया. अरूणाचल प्रदेश में मूल रूप से असमिया और छोटे-छोटे क्षेत्रों की बोलियां ही प्रचलन में हैं. राज्य में अंग्रेजी और हिन्दी के साथ-साथ मातृभाषा को बढ़ावा दिए जाने की जरूरत है. अरूणाचली बोलियों को स्कूल में पढ़ाया नहीं जाता. अरूणाचल के लोग हिन्दी समझते हैं. यहां तक की चीन की सीमा तक लोग हिन्दी बोलते-समझते हैं. आज अरूणाचल प्रदेश में पाठ्यक्रम की पुस्तकें हिन्दी एवं अंग्रेजी में हैं. नई शिक्षा नीति के तहत उम्मीद है कि मातृभाषा की पढ़ाई की शुरूआत हो जाए.

6. अरूणाचल प्रदेश में शिक्षा के प्रसार का मॉडल क्या देश के दूसरे प्रदेश में भी लागू करने में समान रूप से उपयोगी होगा?

हां, यह देश के दूसरे प्रदेश के लिए भी उपयोगी हो सकता है बशर्ते कि स्थानीय पहलुओं की भी अनुकूलता हो. इस व्यवस्था का विकेंद्रीकरण करना होगा. इसे *'फोर द पीपल, बाय द पीपल, ऑफ़ द पीपल'* होना होगा. इसमें लोगों की रूचि बहुत जरूरी है, इसका संचालन उनके हिसाब से होना चाहिए. पुस्तकालय पुस्तकों का संग्रह नहीं होना चाहिए बल्कि ये गतिविधि और प्रशिक्षण के केन्द्र होने चाहिए. साहित्य को भी मातृभाषा में तैयार किया जाना चाहिए. यहां मैं उल्लेख करना चाहूँगा कि वर्ष 1988 मे मैं एक महीने के लिए गुजरात दौरे पर रहा. वहां स्वर्गीय पांडुरंग शास्त्री द्वारा कई केन्द्रों पर स्वाध्याय आंदोलन चलाया जा रहा था. मैं उनके विचारों और प्रगति से बहुत प्रभावित हुआ.

7. कृपया अरूणाचल प्रदेश में आपके द्वारा संयोजित लोहित लाइब्रेरी मूवमेंट के बारे में बताएं.

वर्ष 2002 के बाद हमने सरकारी स्कूल के साथ काम करने के साथ-साथ पढ़ने का अभियान चलाया. इस प्रकार लाइब्रेरी मूवमेंट 2002 के बाद शुरू हुआ. हमने एकसमान विचार के लोगों को अपने साथ जोड़ा और छोटे-छोटे पुस्तकालयों के माध्यम से पुस्तक पढ़ने का अभियान चलाया. परंतु समुचित निगरानी के बिना अंदरूनी इलाकों में शुरूआत में इसमें सफलता नहीं मिली. इसलिए लोहित जिले के तत्कालीन उप आयुक्त श्री प्रशांत लोखंडे के सहयोग से वहां पुस्तकालय की स्थापना की. वहां एक पुस्तकालय का गठन किया. बाद में हमें पुस्तकालय के लिए 8000 किताबें प्राप्त हुईं. हमने पूरे क्षेत्र में कुल 13 पुस्तकालयों का गठन किया. इस प्रकार पठन कार्यक्रम अभियान की शुरूआत की, जिससे कि युवाओं में पढ़ने के प्रति रूचि पैदा हो. धीरे-धीरे बच्चे पढ़ने में रूचि लेने लगे. इस प्रकार पुस्तकालय गतिविधि-केंद्र बन गए. स्थानीय प्रशासन की सहायता से हमने पूरे क्षेत्र में पढ़ने का अभियान चलाया. हमारे इस अभियान से कई विशेषज्ञ भी जुड़े. धीरे-धीरे हमने वेकेशन मिनी लाइब्रेरी की शुरूआत की. रीडिंग रूम का गठन किया, जिनका प्रबंधन स्थानीय स्तर पर किया गया. इस प्रकार हमारा लोहित लाइब्रेरी मूवमेंट आगे बढ़ा. 2007 में लोहित यूथ लाइब्रेरी नेटवर्क की शुरूआत हुई.

सुप्लियांग में पठन अभियान

8. तकनीक ने किस तरह से आज हमारे अध्ययन की प्रवृति को प्रभावित किया है?

मैं कहूंगा कि तकनीक ने हमारी अध्ययन की प्रवृति को नकारात्मक और सकारात्मक दोनों रूप से प्रभावित किया है. क्योंकि लोग आज तकनीक का उपयोग बिना किसी मार्गदर्शन के कर रहे हैं. कोरोना काल में तकनीक के उपयोग के बारे में बहुत जागरूकता आई. काफी संख्या में कई प्रकार की उपयोगी ऑनलाइन सामग्री आई है. जैसे गूगल ने एक ऐप शुरू किया है (बोलो) जिसके माध्यम से बच्चों में रोचक तरीके से साक्षरता बढ़ाई जा सकती है. परंतु तकनीक पूरी तरह विद्युत सुविधा पर निर्भर है. सुदूर क्षेत्रों में विद्युत नहीं होने पर तकनीक सुविधा प्रभावित हो सकती है. तकनीक आधारित शिक्षण कार्यक्रम की अपनी सीमाएं हैं. इसके अलावा मोबाइल खर्चीला भी होता है. इसके मुकाबले पुस्तकें सस्ती हैं और इसे कई लोग पढ़ सकते हैं और यह पढ़ने में भी सुविधाजनक है.

9. आपको अंकल मूसा के नाम से भी जाना जाता है, आपको इस नाम से कैसे जाने जाना लगा?

वास्तव में मेरा नाम बहुत बड़ा है. मैंने सोचा कि कोई ऐसा नाम हो जो छोटा होने के साथ-साथ बच्चों को अच्छा भी लगे और आसानी से याद रहे. मैंने युवाओं और बच्चों के लिए यही नाम उचित समझा.

10. आप वर्ष के 118 पद्मश्री विजेताओं में से एक हैं. इस सम्मान को प्राप्त कर आपको कैसा महसूस हो रहा है?

यह सम्मान पूरी तरह से ज्वायफूल रीडिंग और अरूणाचल प्रदेश के बच्चों के लिए ही है. मैं तो एक तरह का डाकिया हूं और उनकी तरफ से सम्मान लेने जा रहा हूं.

11. नई पीढ़ी के लिए आप क्या संदेश देना चाहेंगे?

नई पीढ़ी के लिए मेरा यही संदेश है कि लोगों की सहायता करें. हमारे पास जो भी क्षमताएं हैं हम उनके अनुसार जरूरतमंदों की मदद करें. यह स्वामी विवेकानंद जी का भी संदेश है - ''जब तक कि सैकड़ों लोग भूखे और उपेक्षित रहेंगे, मैं उन सभी व्यक्तियों को दोषी मानूंगा जो शिक्षित और सक्षम हैं तथा उनकी कठिनाइयों को दूर करने का कोई प्रयास नहीं कर रहे हैं.'' प्रत्येक इंसान को दूसरे को खुश रखने के लिए प्रयत्न करना चाहिए.

12. अंत में आप बैंक ऑफ़ बड़ौदा के लिए क्या कहना चाहेंगे?

मैं बैंक के कार्यपालकों और स्टाफ-सदस्यों को बधाई देता हूं और आशा करता हूं कि आपके बैंक का नाम-सम्मान पहले की ही तरह बना रहे. बैंक की गुडविल और पब्लिसीटी बढ़े. आज दो और अच्छे बैंकों के आपके साथ जुड़ने से आप और भी मजबूत हो गए हैं. आपकी सेवाएं विश्व भर में प्रसिद्ध हैं. आप इसी तरह देश-विदेश में लोगों के जीवन में खुशियां लाते रहें, मैं यही आशा करता हूं.

रासायनिक उर्वरकों एवं कीटनाशकों का असंगत प्रयोग एवं उनके दुष्प्रभाव

उर्वरक ऐसे रसायन हैं जो कृषि में उत्पादन बढ़ाने के उद्देश्य से प्रयोग किये जाते हैं. पौधों के विकास के लिए कुल 16 तत्त्वों की आवश्यकता होती है, जिसे पौधे भूमि से प्राप्त करते हैं. भूमि में किसी तत्त्व की कमी होने की अवस्था में उन तत्त्वों कि पूर्ति करने के लिए हम उर्वरक का प्रयोग करते हैं. उर्वरकों का प्रयोग जमीन में या पौधों पर छिड़काव करके किया जाता है. ये रसायन यूरिया, कैल्सियम अमोनियम नाइट्रेट, डीएपी, म्यूरेट ऑफ पोटाश, जिंक सल्फेट आदि हैं. इन्हें कारखानों में रासायनिक विधि द्वारा बनाया जाता है.

कीटनाशक वे रसायन हैं जिनका प्रयोग पौधों को नुकसान पहुँचाने वाले कीट या अन्य जीवों को नष्ट करने के लिए किया जाता है, जैसे कवकनाशी का उपयोग कवक को मारने में, फफूंदनाशी का फफूंद हटाने में, जीवाणुनाशी का जीवाणु मारने में, कीटनाशक का कीट मारने में, चुहानाशी का चूहा मारने में, खरपतवारनाशी का खरपतवार नष्ट करने में एवं सूत्रकृमिनाशक का सूत्रकृमि मारने में प्रयोग किया जाता है. ये रसायन जहरीली प्रकृति के होते हैं जिनका सही उपयोग न होने पर गैर-लक्षित जीव को भी नुकसान पहुंचाते हैं.

आज़ादी के बाद भारत आज खाद्यान्न उत्पादन में आत्मनिर्भर होने के साथ-साथ विदेशों में निर्यात करने में भी सक्षम है. 1950-51 के 52 मिलियन टन की अपेक्षा वर्ष 2019 में लगभग 6 गुना बढ़ोतरी के साथ कुल खाद्यान्न का उत्पादन 291.35 मिलियन टन हो गया है.

हरित क्रांति के बाद भारत में खाद्यान्न उत्पादन; खासकर धान एवं गेहूं के उत्पादन में अपार वृद्धि हुई है. इस प्रकार हम कह सकते हैं कि भारत को खाद्यान्न उत्पादन में आत्मनिर्भर बनाने में हरित क्रांति का महत्वपूर्ण योगदान रहा है. लेकिन हरित क्रांति के साथ ही भारत में रासायनिक उर्वरकों एवं कीटनाशकों का उपयोग शुरू हुआ, बाद में अंधाधुन होने लगा. आज भारत में अधिकतर कृषि भूमि पर बिना मिट्टी की जांच के रासायनिक उर्वरकों का असंगत प्रयोग हो रहा है. ज्यादातर किसान आज भी यही समझते हैं कि अधिक रासायनिक उर्वरक और कीटनाशकों के प्रयोग से उनका उत्पादन अधिक होगा. जबकि इससे कृषि लागत में बेतहाशा वृद्धि होती है और उत्पादन पर इसका कोई खास प्रभाव नहीं होता है.

ICAR के आंकड़ों के अनुसार वर्ष 2010-11 में भारत में प्रति हेक्टेयर 144.14 किलोग्राम रासायनिक उर्वरकों की खपत थी. भारत अकेले विश्व का लगभग 11% रासायनिक उर्वरक की खपत करता है. रासायनिक उर्वरक की तरह ही भारत में प्रति वर्ष औसतन 480 ग्राम प्रति हेक्टेयर रासायनिक कीटनाशकों का प्रयोग होता है. इन कीटनाशकों में फफूंद नाशी, कीटनाशी, खरपतवार नाशी, चूहा नाशी एवं सूत्रकृमी नाशी आदि रसायन होते हैं.

भारत में कीटनाशकों का सर्वाधिक प्रयोग कपास की फसल में किया जाता है. हालाँकि, कपास फसल का उपयोग हम लोग खाने में नहीं करते हैं. लेकिन, उसमें उपयोग होने वाले रसायनों का अवशेष अनेकों रूप में मानव एवं जंतु की खाद्य श्रृंखला में मिल जाता है जैसे - भूमि से दूसरी फसलों द्वारा, जलस्रोतों के द्वारा, पर्यावरण में मिलकर आदि.

कपास के बाद भारत में फलों एवं सब्जियों पर अधिक मात्रा में रसायनों का प्रयोग किया जाता है. फलों एवं सब्जियों के व्यवसायिक उत्पादन में फसल की बुवाई के पूर्व से लेकर कटाई तक भिन्न प्रकार के कीटनाशकों का प्रयोग होता है. कीटनाशकों के लगातार प्रयोग से हानिकारक कीट इन रसायनों के विरुद्ध प्रतिरक्षा प्रणाली विकसित कर लेते हैं, जिससे कीट और रोगों पर इन रसायनों का असर कम हो जाता है. जिसके कारण किसान पहले से ज्यादा जहरीले कीटनाशकों का प्रयोग और अधिक मात्रा में करने लगते हैं जो पर्यावरण के लिए और खतरनाक हो जाता है. इन रसायनों के उपयोग के कारण हानिकारक कीटों के साथ-साथ हमारे मित्र कीट जो हानिकारक कीट के प्राकृतिक शत्रु होते हैं, वे भी नष्ट हो जाते हैं.

कीटनाशक पर्यावरण में हवा, मिट्टी और पानी को दूषित करने के प्रमुख कारक हैं. इन रसायनों के लगातार अत्यधिक प्रयोग से भूमि के प्राकृतिक गुण समाप्त होने लगते हैं. भूमि में जीवाश्म पदार्थों की कमी हो जाती है, वह बंजर होने लगती है. भूमि की जल संग्रहण क्षमता का ह्रास होता है एवं उसमें उपस्थित पोषक तत्त्व पौधों को उपलब्ध नहीं हो पाते हैं. अत्यधिक रसायनों के प्रयोग से भूमि में उपलब्ध लाभकारी सूक्ष्मजीव एवं कीट, केंचुए आदि मित्र कीट मर जाते हैं.

फसल को बीमारी से बचाने के लिए जितना कीटनाशक इस्तेमाल होता है, उसका बहुत कम हिस्सा अपने वास्तविक मकसद के काम आता है. इसका बड़ा हिस्सा तो हमारे विभिन्न जल स्रोतों में पहुंच जाता है और भू-जल को प्रदूषित करता है. हालत यह है कि इन रसायनों के जमीन में रिसते जाने की वजह से काफी जगहों का भू-जल बेहद जहरीला हो गया है. यही नहीं, ये रसायन बाद में बहकर नदियों, तालाबों में भी पहुंच जाते हैं, जिसका दुष्प्रभाव जल-जीवों और पशु-पक्षियों पर भी पड़ रहा है.

हम फल एवं सब्जियां अच्छे स्वास्थ्य के लिए खाते हैं लेकिन इन फल और सब्जियों के उत्पादन में बुवाई के पूर्व से लेकर सब्जी मंडी में लाने तक विभिन्न प्रकार के कीटनाशकों का प्रयोग किया जाता है, जो हमारे स्वास्थ्य पर बहुत बुरा प्रभाव डालते हैं. कई शोधों में सामने आया है कि जितना कीटनाशकों का प्रयोग किया जाता है उसका लगभग 4 प्रतिशत ही कीट-व्याधियों से बचाव में उपयोग होता है. इन हानिकारक रसायनों का बाकी हिस्सा भूमि, जल एवं वायुमंडल में मिलकर मानव जीवन और जीव-जंतुओं को प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से नुकसान पहुंचाता है.

ये हानिकारक रसायन अन्न, जल, फलों एवं सब्जियों के द्वारा हमारी खाद्य श्रृंखला में आ जाते हैं और मानव शरीर में अनेक प्रकार की खतरनाक बीमारियां उत्पन्न करते हैं. एक आम भारतीय के भोजन में प्रतिदिन 0.27 मिलीग्राम कीटनाशक होता है. मानव शरीर में कीटनाशकों के अवशेष विभिन्न घातक बीमारी उत्पन्न करते हैं जैसे कैंसर, न्यूरोलॉजिकल समस्याएं, प्रजनन संबंधी समस्याएं, हार्मोनल समस्याएं, प्रतिरक्षा तंत्र की समस्याएं आदि.

इसके अत्यधिक प्रयोग से कीट-पतंगे भी सुरक्षित नहीं हैं. मधुमक्खियों को बचाने के लिए हाल ही में यूरोपीय संघ ने निओनिकोटिनॉएड नामक रसायन से बनने वाले तीन कीटनाशकों (क्लाथिंडियन, इमिडैकोलप्रिड, थियामेटोक्साम) पर दो साल के लिए प्रतिबंध लगा दिया. जर्मनी, फ्रांस, इटली जैसे कुछ देशों में पहले से ही निओनिकोटिनॉएड पर प्रतिबंध लगा हुआ है. यूरोपीय संघ का कहना है कि इन कीटनाशकों के छिड़काव से जब मधुमक्खियां फूलों से रस लेती हैं, तो इन कीटनाशकों के संपर्क में आ जाती हैं जिससे उनमें कई प्रकार की बीमारियां हो जाती हैं और उनकी मौत हो जाती है.

आज कोई भी खाद्य सामग्री ऐसी नहीं बची जो कीटनाशकों के प्रभाव से बची हो. अन्न, सब्जियां, दूध, डिब्बा बंद सामग्री, ठंडे पेय हर सामग्री में कीटनाशक मौजूद है. शोध से पता चला है कि आज सब्जियों का इस्तेमाल करने वालों को कैंसर का ज्यादा खतरा हो गया है. यह स्थिति पहले नहीं थीं. कीटनाशकों के प्रभाव से मांस, मछली भी नहीं बचे हैं.

आज जो चारा हम जानवरों को खिला रहे हैं उसमें भी रसायन मिला होता है. यानि जो कोई उस जानवर का मांस खाएगा, उसके स्वास्थ्य पर भी असर पड़ेगा. गाय, भैंस, भेड़, बकरी आदि पशुओं के दूध जहरीले होते जा रहे हैं. शोध से यह भी पता चला है कि शरीर में कीटनाशकों के जाने से मां का दूध भी प्रभावित हुआ है. रासायनिक उर्वरकों के इस्तेमाल से उपजाऊ जमीन तेजी से बंजर हो रही है. मृदा प्रदूषण के कारण हानिकारक तत्त्व फसलों में पहुंच रहे हैं. नतीजा, उनकी गुणवत्ता तेजी से घट रही है.

देश में सबसे ज्यादा रसायन इस्तेमाल करने वाला राज्य पंजाब है जिसका दुष्प्रभाव अब दिखना शुरू हो गया है. पिछले दशक से पंजाब में अनाज उत्पादन में गिरावट देखने को मिली है. पंजाब की उपजाऊ मिट्टी की गुणवत्ता का बड़े पैमाने पर क्षरण हो रहा है जिसके चलते पंजाब की खेती में ठहराव सा आ गया है. ग्रीनपीस द्वारा पंजाब में वर्ष 2010 में चलाये गए जीवित माटी अभियान के तहत किये गए सर्वेक्षण से पता चला कि पंजाब में रसायनों का उपयोग खतरनाक रूप से बढ़ा है. पिछले चालीस सालों में अकेले भटिंडा में यूरिया के उपयोग में 750 प्रतिशत बढ़ोतरी हुई है. सर्वे में यह भी निकल कर आया कि किसान रसायनों से हो रहे नुकसान के बारे में जानते हैं पर उनके पास कोई विकल्प नहीं है.

पंजाब के भटिंडा, फरीदकोट, मोगा, मुक्तसर, फिरोजपुर, संगरूर और मानसा जिलों में बड़ी तादाद में किसान कैंसर के शिकार हो रहे हैं. विज्ञान एवं पर्यावरण केंद्र, चंडीगढ़ स्थित पीजीआई और पंजाब विश्वविद्यालय समेत खुद सरकार की ओर से कराए गए अध्ययनों में ये तथ्य उजागर हो चुके हैं कि कीटनाशकों के ज्यादा इस्तेमाल की वजह से इन जिलों में कैंसर का फैलाव खतरनाक स्तर तक पहुंच गया है. पंजाब सरकार ने अब खतरनाक साबित हो रहे कीटनाशकों पर पाबंदी लगा दी है.

इन रसायनों के उपयोग के गलत तरीके से भी भारत में प्रति वर्ष लगभग 10000 से अधिक लोगों की मृत्यु होती है. डब्ल्यूएचओ के अनुसार एशिया में प्रति वर्ष लगभग तीन लाख मृत्यु सिर्फ पेस्टिसाइड प्वाइजनिंग के कारण होती है. इसी कारण से महाराष्ट्र के विदर्भ क्षेत्र में हजारों जानें जाती हैं. विश्व स्वास्थ्य संगठन और खाद्य एवं कृषि संगठन की ओर से 2014 में संयुक्त रूप से जारी इंटरनेशनल कोड ऑफ कंडक्ट ऑन पेस्टीसाइड मैनेजमेंट के अनुसार, जो लोग कीटनाशकों का इस्तेमाल करते हैं उन्हें सुरक्षा के लिये उपकरणों की जरूरत होती है, लेकिन जागरूकता के आभाव में किसानों को इन रसायनों के उपयोग के सही तरीके की जानकारी नहीं है. कृषि में आज भी ज्यादातर

अशिक्षित लोग कार्य करते हैं जिन्हें शिक्षित और जागरूक बनाना अति आवश्यक है.

ऐसा नहीं है कि भारत विश्व में सबसे ज्यादा कीटनाशकों का उपयोग करता है. भारत में कीटनाशकों के इस्तेमाल का स्तर विकसित देशों जैसे अमेरिका, जापान, चीन कोरिया आदि के अपेक्षा बहुत कम है, लेकिन इन रसायनों का असंगत, अविवेकपूर्ण और असावधानी से होने वाले इस्तेमाल के कारण यह पर्यावरण एवं मानव जीवन सभी के लिए खतरा है. जापान भारत की तुलना में लगभग 10 गुना ज्यादा कीटनाशकों का उपयोग करता है लेकिन फिर भी उनके खाद्य पदार्थों में हानिकारक रसायनों की मात्रा अनुमेय सीमा से अधिक नहीं है, जबकि भारत में सही रसायन का चुनाव एवं सही तरीके से उपयोग न होने के कारण हमारे यहां उत्पन्न खाद्य पदार्थों में हानिकारक रसायनों की मात्रा मानक से अधिक पाई गई है.

भारत में कीटनाशकों के गलत प्रबंधन से जुड़े कई पहलुओं पर काम करने की जरूरत है. सबसे जरूरी है कि श्रेणी-1 के कीटनाशकों को तत्काल प्रतिबंधित किया जाना चाहिए जिसे दुनिया के अधिकतम देश प्रतिबंधित कर चुके हैं. विश्व स्वास्थ्य संगठन ने मोनोक्रोटोफॉस एवं ऑक्सीडेमटोन जैसे खतरनाक रसायन को क्लास 'ख' की श्रेणी में रखा है जिसे विश्व के 46 से अधिक देशों में प्रतिबंधित किया गया है. लेकिन, ये रसायन भारत में आज भी उपयोग में हैं. भारत में कुल 234 पंजीकृत पेस्टिसाइड है इनमें से 24 रसायन को यूनाइटेड स्टेट एनवायरमेंटल प्रोटेक्शन एजेंसी ने संभावित कैंसर कारक बताया है. भारतीय खाद्य सुरक्षा एवं मानक प्राधिकरण (एफएसएसएआई) द्वारा 234 में से 59 कीटनाशकों में अधिकतम अंश की सीमा (एमआरएल) तय नहीं की गई है. कीटनाशकों का उत्पादन करने वाली बहुराष्ट्रीय कंपनियां अपने व्यापार के लिए गलत तथ्य दिखाकर भारत में कई तरह के रसायनों के मिश्रण से बने हुए कीटनाशकों को खुले आम बाजार में बेच रही हैं. आज भारत को पुराने कीटनाशक एक्ट 1968 की समीक्षा कर एक नया प्रभावशाली कानून बनाने की आवश्यकता है जिसके अंतर्गत कीटनाशकों के उत्पादन, 'आयात एवं प्रयोग पर निगरानी रखी जा सके. वर्ष 2016 में पार्लियामेंट्री स्टैंडिंग कमिटी ऑन एग्रीकल्चर की रिपोर्ट में यह सुझाव दिया गया कि भारत में पेस्टिसाइड्स डेवलपमेंट एंड रेगुलेशन अथॉरिटी बनाया जाए जो कीटनाशकों के उत्पादन, आयात एवं प्रयोग संबंधी नीति बनाए एवं इसके प्रयोग पर निगरानी रख सके.

ऐसा बिल्कुल नहीं है कि इन रासायनिक उर्वरकों व कीटनाशकों का उपयोग किए बिना कृषि संभव नहीं है. ऐसा भी नहीं है कि उत्पादन कम होगा. हम भूमि, जल, पर्यावरण को सुरक्षित रखते हुए मानव जीवन के साथ-साथ संपूर्ण जीव-जंतु को इन हानिकारक रसायनों से बचाकर उत्पादन पहले से भी ज्यादा बढ़ा सकते हैं और इसका एक मात्र विकल्प है जैविक कृषि. इस कृषि पद्धति को जीवाश्म कृषि, प्राकृतिक कृषि, स्थाई कृषि, रक्षणीय कृषि, पारिस्थितिकी कृषि, जीरो बजट नेचुरल फार्मिंग एवं वर्मिकल्चर आदि अन्य नामों से भी जानते हैं.

इस कृषि पद्धति में रासायनिक खादों पर न्यूनतम आश्रित रह कर, जीवाश्म खादों, न्यूनतम भू-परिष्करण करके, सस्य चक्र अपनाकर, जैव उर्वरक को अपनाकर एवं जैविक पौध संरक्षण प्रक्रिया अपनाकर उत्पादन किया जाता है. यह पद्धति वन्य प्राणी, फसल, मत्स्य पालन, पशु पालन, वन संरक्षण, पौध अनुवांशिकी तथा पारिस्थितिकी तंत्र के संतुलित प्रबंधन द्वारा पर्यावरण को प्रदूषित होने से बचाकर वर्तमान एवं भावी पीढ़ी के लिए भोजन की व्यवस्था के साथ-साथ उत्पादकता एवं प्राकृतिक वास को बचाए रखने की पद्धति है.

रासायनिक उर्वरकों का विकल्प जैविक उर्वरक है जिसे बहुत ही कम लागत में किसानों के फार्म पर ही बनाया जा सकता है-जैसे गोबर की खाद, केचुआ खाद, हरी खाद आदि एवं अन्य जैव उर्वरक जैसे - राइजोबियम, एजोटोबैक्टर, एस्परजिलस, माइकोरायेज़ा, आदि जो पौधों के लिए आवश्यक तत्त्व कि पूर्ति करते हैं एवं रसायन रहित रहते हैं.

रासायनिक कीटनाशी का विकल्प जैव कीटनाशक है जो रसायन रहित एवं प्रकृति आधारित होता है, जैसे नीम उत्पाद, करंज, गोमूत्र, गाय के गोबर का घोल, लहसुन आदि. इसके अलावा हानिकारक कीट के प्राकृतिक शत्रु पाल कर एवं ट्राईकोडर्मा, व्युवेरिया वेसियाना, स्यूडोमोनस, बेसिलस थथ्युनिरर्जिएंसिस आदि जैविक उर्वरक का प्रयोग कर फसलों की रक्षा की जा सकती है.

देश में कई उदाहरण हैं जब किसानों ने कीटनाशकों का इस्तेमाल न करते हुए भी भारी कमाई की है. इकोलॉजिकल खेती से कई मौकों पर तो किसानों के साथ ही उपभोक्ताओं को भी आर्थिक लाभ हुआ है. सबसे बड़ा उदाहरण हैदराबाद के एक स्वयंसेवी संगठन नॉन पेस्टीसीडल मैनेजमेन्ट मूवमेन्ट (NPM²) का है. एनपीएम मॉडल कीटनाशकों के स्थान पर जैविक खाद, मेड़ पर खेती, चक्रीय फसलों आदि के जरिए खेती पर बल देता है. आंध्र प्रदेश में इस मॉडल को लाखों किसानों ने अपनाया है.

विगत कुछ वर्षों से सरकार द्वारा भी जैविक कृषि के उत्पादन पर अनुदान एवं प्रोत्साहन दिया जा रहा है और जागरूकता फैलाई जा रही है. किसानों को चाहिए कि जैविक कृषि अपनाकर कृषि लागत को कम करने, उत्पादन बढ़ाने के साथ-साथ अपनी भावी पीढ़ी को अच्छा स्वास्थ्य, स्वच्छ पर्यावरण एवं ज़हर-रहित ऊर्वरा भूमि दे सके. चूंकि, भूमि सीमित है और बढ़ती जनसंख्या के लिए भारत को उत्पादन बढ़ाने की आवश्यकता होगी, जिसे कृषि की नई तकनीक जैसे - किचेन गार्डेनिंग, रूफ गार्डेनिंग, हैंगिंग गार्डेनिंग, हाइड्रोपोनिक्स, एरोपोनिक्स आदि पद्धति अपना कर फलों एवं सब्जियों का उत्पादन कर सकते हैं, जिसमें हानिकारक रसायनों की मात्रा भी नहीं होती है.

❑❑❑

- प्रियेश कुमार

प्रबंधक, कृषि ऋण एवं प्राथमिकता क्षेत्र विभाग

क्षेत्रीय कार्यालय, दुर्ग

गोवा : भारतीय और विदेशी संस्कृति का संगम

छुट्टियाँ मनाना किसे पसंद नहीं? चार दोस्तों या परिवार के बीच यह बात चलती है कि भई इस साल छुट्टियाँ मनाने जाना कहाँ है, तो जुबान पर सबसे पहले जिस स्थान का नाम आता है वह है गोवा. जिन्हें अमेरिका या यूरोप में छुट्टियाँ मनाना हो और और जेब में उतने पैसे न हों, उनकी पहली पसंद है गोवा. यह भारत का एक ऐसा राज्य है जिसे पर्यटन के लिए प्रचार-प्रसार की जरूरत नहीं पड़ती. लोग खुद-ब-खुद यहाँ खींचे चले आते हैं. यहाँ की खूबसूरती बस देखते ही बनती है. गोवा को 'पूर्व का रोम' और 'भारत का मायामी' भी कहा जाता है. यहाँ के लोगों को गोवन कहा जाता है. बड़े ही ज़िंदादिल होते हैं यहाँ के लोग.

गोवा खूबसूरत समुद्री तट और मशहूर स्थापत्य कला के लिए जाना जाता है. गोवा की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत में नृत्य, लोक गीत, दृश्य कला, संगीत और लोक कथाएँ हैं, जो विषय और विविधता से समृद्ध हैं. गोवन संगीत प्रेमी हैं, अधिकांश गोवन गिटार या पियानो बजाना जानते हैं. लगभग हर परिवार में आपको एक पियानोवादक या एक गिटारवादक मिल जाएगा. कहा जाता है कि संगीत और फुटबाल गोवन के रग-रग में बसे हुए हैं. पश्चिमी शास्त्रीय संगीत के साथ जैज, टेक्नो संगीत सहित पश्चिमी संगीत हो या स्वादिष्ट सी फूड सहित पश्चिमी भोजन हो, हर चीज में पश्चिमी प्रभाव देखने को मिलता है. यहां के लोग बेहद आधुनिक हैं. लोगों की मान्यता यह भी है कि इस राज्य की रचना स्वयं भगवान परशुराम ने की थी. उत्तर गोवा के हरमल के पास भूरे रंग के एक पर्वत को परशुराम के यज्ञ का स्थान माना जाता है.

पुर्तगाल ने करीब 450 साल गोवा पर शासन किया. 'गोवा मुक्ति आंदोलन' 19वीं शताब्दी के आरंभ में शुरू हुआ. यह आंदोलन 1940 के बाद और तेज हो गया. ब्रागांसा कुन्हा, पुरुषोत्तम काकोड़कर, लक्ष्मीकान्त भेम्ब्रे आदि ने 'गोवा मुक्ति आंदोलन' का नेतृत्व किया. दिनांक 18 और 19 दिसम्बर 1961 को भारत सरकार ने सैन्य कार्रवाई कर गोवा को मुक्ति दिलाई. अतः हर साल 19 दिसम्बर को 'गोवा मुक्ति दिवस' मनाया जाता है.

क्षेत्रफल की दृष्टि से गोवा भारत का सबसे छोटा राज्य है जबकि आबादी की दृष्टि से यह देश का चौथा सबसे छोटा राज्य है. यह पश्चिमी तट अर्थात अरबियन तट पर स्थित भारत के सबसे खूबसूरत राज्यों में से एक है. पणजी यहाँ की राजधानी है. वास्को सबसे बड़ा शहर तथा मडगाँव आर्थिक राजधानी है. यहाँ की कुल आबादी लगभग 15 लाख है.

प्राकृतिक सौंदर्य : प्रकृति ने गोवा को बेहद ही खूबसूरत बनाया है. पूरा गोवा कोंकण तट पर स्थित है जहाँ खूबसूरत प्राकृतिक समुद्री तट की भरमार है. यहाँ के समुद्रतट देश के सबसे खूबसूरत और साफ-सुथरे समुद्रतट हैं. ऐसा लगता है जैसे यूरोपिय या अमेरिकी समुद्रतट हों. यहाँ की प्रमुख नदियाँ जुआरी, मांडवी, चपोरा आदि हैं. राजधानी पणजी मांडवी नदी के किनारे स्थित है. यहाँ की सबसे ऊंची चोटी सोनसोगोर (1,167 मीटर) है. गोवा में कुल 8 समुद्री तथा 90 नदी द्वीप हैं. गोवा का मर्मुगोवा बन्दरगाह एशिया के सबसे सुंदर बंदरगाहों में से एक है. इस बन्दरगाह से भारतीय नौसेना और कोस्ट गार्ड देश की सेवा करते हैं. दूधसागर जल प्रपात सबसे सुंदर और एक महत्वपूर्ण पर्यटन स्थल है.

भाषा और साहित्य : गोवन को अपनी भाषा से बड़ा ही लगाव है. कोंकणी गोवा की राजभाषा है. इस भाषा की खासियत

यह है कि यह चार लिपियों में लिखी जाती है; देवनागरी (आधिकारिक), रोमन, कन्नड़ और मलयालम. कोंकणी गोवा के अलावा महाराष्ट्र, कर्नाटक, केरल, गुजरात, दादरा और नगर हवेली तथा दमन और दीव के कुछ हिस्सों में भी बोली जाती है. भारत में लगभग 23 लाख लोग कोंकणी भाषा बोलते हैं. कोंकणी के अतिरिक्त गोवा में मराठी, हिन्दी और कन्नड़ भाषाएँ भी बोली जाती हैं. राज्य में विभिन्न भाषाओं के बावजूद यहाँ के लोग अपनी भाषा को सर्वाधिक महत्व देते हैं. गोवा एशिया में पहला स्थान था जहाँ प्रिंटिंग प्रेस खोला गया था. इसकी स्थापना सन् 1556 में जेसुई ने की थी. गोवा के लगभग सारे पुराने साहित्य को पुर्तगालियों ने अधिग्रहण के समय नष्ट कर दिया. गोवा का लिखित और मुद्रित साहित्य के साथ एक लंबा प्रेम संबंध रहा है, हालांकि विकास धीमा रहा. पीटर नाज़रेथ बताते हैं कि गोवन ने तेरह भाषाओं में लिखा है, जिनमें से प्रमुख कोंकणी, मराठी, अंग्रेजी और पुर्तगाली हैं. नाज़रेथ ने गोवन को 'कल्चरल ब्रोकर्स' बताया. कोंकणी भाषा में कई प्रमुख रचनाएँ हुईं हैं. प्रमुख रचनाकारों में पुंडलीक नारायण नायक (चौरंग, रणसुंदरी), चंद्रकांत शांताराम केणी (सात पावला मलबांत, नायिका), दामोदर यशवंत मावजो (गांथन, कार्मेलिन), रवींद्र केलेकर (हिमालयान्त, आमी टाँका मणशात हाडले), जयंती नाईक (अथंग, कोंकणी लोकन्यो), मनोहर राय सरदेसाई (पिसोलिम, जय भारत), शेनोय गोयबा (गोमंतोपनिषद, अल्बुकेरान गोंय कशे जिकले).

कृषि और प्रमुख फसलें : गोवा की एक चौथाई आबादी कृषि पर निर्भर है. शहरीकरण के कारण यहाँ कृषि योग्य भूमि कम है. गोवा में मुख्य रूप से धान की खेती की जाती है. इसके अलावा दाल और बाजरे की भी पैदावार होती है. गोवा स्वादिष्ट काजू के लिए मशहूर है. फलों में यहाँ आम, अमरूद, अन्नानास, केला आदि की पैदावार होती है. गोवा में मछली पालन एक बड़ा उद्योग है. यहाँ के मछुवारे विभिन्न प्रकार की मछलियाँ पकड़ते हैं जैसे मैकरेल, सार्डिन, सेर मछली, सिल्वर बेली, बटर फिश, किंग फिश, झींगा, केकड़ा आदि.

खान-पान और वेश-भूषा : गोवा की संस्कृति का एक महत्वपूर्ण हिस्सा गोवन भोजन भी है. गोवा के लोग खाने-पीने के बड़े शौकीन हैं. चावल के साथ मछली-करी गोवन का मुख्य आहार है. गोवन मछली बड़े चाव से खाते हैं. यही कारण है कि यहाँ मछली उद्योग काफी फलाफुला है. गोवन मसालेदार चटपटा खाना ज्यादा पसंद करते हैं, इसलिए भोजन में मसाले का प्रयोग अधिक करते हैं. यहाँ के विशेष भोजन में शाकुति, विंदलहो, सोरपोटेल आदि प्रसिद्ध हैं. त्यौहारों में लोग खतखते बनाते हैं जिसमें पाँच प्रकार की सब्जियाँ, ताजे नारियल और गोवन मसाले मिलाए जाते हैं. गोवा के पारंपरिक भोजन में रॉस आमलेट प्रसिद्ध है. यहाँ के अधिकांश होटलों में गोवन व्यंजनों के साथ-साथ उत्तर भारतीय, दक्षिण भारतीय, पुर्तगाली आदि व्यंजन आसानी से मिल जाते हैं.

वेश-भूषा में विविधता देखनी हो तो गोवा आ जाइए. विभिन्न देशों का संगम होने के कारण यहाँ के लोगों की वेश-भूषा में विविधता देखने को मिलती है. मौसम के अनुसार यहाँ के लोग अलग-अलग कपड़े पहनते हैं. कैथलिक महिलाएँ गाउन पहनती हैं जबकि हिन्दू महिलाएँ साड़ी पहनती हैं, जिसे नव-वारी भी कहा जाता है. ग्रामीण क्षेत्र के लोग पानो भाजू, वलकल पहनते हैं. गोवा की कैथलिक दुल्हनें सफ़ेद गाउन पहनती हैं. गोवन पुरुष आमतौर पर पश्चिमी शैली के पोशाक पहनते हैं. यहाँ के मछुवारों की पोशाक का डिज़ाइन देखते ही बनता है. यहाँ के मछुवारे चमकीले शर्ट, हाफ पैंट, बाँस की टोपी पहनते हैं जो कि पर्यटकों के बीच एक लोकप्रिय पोशाक है. गोवा कार्निवल के दौरान लोग रंग-बिरंगे कपड़ों में दिखाई देते हैं. गोवा आने वाले सैलानी यहाँ के पारंपरिक परिधान खरीदे बिना यहाँ से नहीं जाते.

देश-विदेश की संस्कृति का संगम : गोवा देश-विदेश की संस्कृति का संगम है. इसे सर्वदेशीय राज्य कहें तो गलत न होगा. यहाँ भारतीय संस्कृति के साथ-साथ कई विदेशी संस्कृतियाँ भी देखने को मिलती हैं. पुर्तगाल ने सन् 1510 से 1961 तक लगभग 450 साल गोवा पर शासन किया. पूरे गोवा में खासकर मडगाँव के आस-पास पुर्तगाली शैली के घर, गलियाँ, भाषा आदि देखने को मिल जाते हैं. यहाँ के अधिकांश लोग खासकर कैथलिक अँग्रेजी में वार्तालाप करते हैं. गोवा में रूस, पुर्तगाल, नाईजीरिया, इजराइल आदि देशों के लोग बसे

हुए हैं अतः इन देशों की संस्कृति भी यहाँ घुल-मिल गयी है. गोवा एक छोटा सा राज्य है. यहाँ बड़ी संख्या में पड़ोसी राज्यों के लोग भी निवास करते हैं. अतः यहाँ मराठी, कन्नड़ और मलयाली संस्कृति की झाँकी भी मिल जाती है. कुल मिलाकर गोवा विभिन्न प्रदेशों की संस्कृति का संगम है.

पर्यटन : गोवा की सांस्कृतिक विरासत में चर्च, मंदिर और मस्जिद शामिल हैं. इसके अलावा, गोवा के रेतीले समुद्र तट और समुद्री भोजन देश-विदेश के सैलानियों को आकर्षित करते हैं. गोवा की सांस्कृतिक समृद्धि और जीवंतता गोवन लोक नृत्यों, लोक संस्कृति और गीतों के माध्यम से परिलक्षित होती है. गोवा, देश का सबसे आकर्षक पर्यटन स्थान है. आमतौर पर विदेशी ठंड के मौसम में तथा भारतीय सैलानी गरमी में यहाँ आते हैं. यहाँ के सबसे लोकप्रिय पर्यटन स्थान हैं यहाँ के खूबसूरत समुद्री तट. गोवा में लगभग 50 छोटे-बड़े बीच हैं. जिनमें कलंगुट बीच, बागा बीच, अंजूना बीच, मीरामार बीच, बाम्बोलिम बीच, आरमबोल बीच, पालोलेम बीच, अगोण्डा बीच, कैवलोसिम बीच आदि प्रसिद्ध हैं. बीच के अलावा पर्यटन स्थानों में दूधसागर जल प्रपात, केसरवाल स्प्रिंग्स, मायम झील, अरवालेम जल प्रपात, कुशकेम जल प्रपात, भगवान महावीर वन्य जीवन अभयारण्य, बोंडला वन, नेत्रावली वन्य जीव अभयारण्य, कोतिगाव अभयारण्य, सलीम अली पक्षी अभयारण्य, मोलेम राष्ट्रीय उद्यान, चपोरा किला, आगुवाद किला, टेराकल किला, रिस मॉगोस किला, मर्मुगोवा किला, रॉशोल किला, नरोआ किला, कैबो डी रामा किला, गोवा स्टेट म्यूज़ियम, गोवा साइन्स सेंटर आदि मशहूर हैं. गोवा के जंगलों में लोमड़ी, जंगली सूअर और प्रवासी पक्षी भी पाए जाते हैं. दूधसागर जल प्रपात देश का पांचवा सबसे ऊँचा जल प्रपात है जिसकी ऊंचाई 310 मीटर है. प्रसिद्ध सलीम अली पक्षी अभयारण्य चोराओ द्वीप पर स्थित है. लुप्तप्राय रिडले समुद्री कछुए दक्षिण गोवा के गालगीबागा बीच और उत्तर गोवा के मोरजिम बीच पर देखे जा सकते हैं.

धार्मिक स्थल और त्योहार : सांस्कृतिक विविधता होने के कारण गोवा में देश-विदेश के विभिन्न संप्रदाय के लोग निवास करते हैं. प्रमुख धार्मिक स्थलों में मंगेशी मंदिर, श्री कामाक्षी मंदिर, श्री विठ्ठल मंदिर, श्री शांतादुर्गा मंदिर, जामा मस्जिद, साफा मस्जिद, बेसिलिका ऑफ बोम जीसस, संत कैथेड्रल चर्च, इम्माकुलेट कंसेप्सन चर्च, श्री गुरु सिंह सभा गुरुद्वारा आदि विख्यात हैं. गणेश चतुर्थी गोवा का सबसे प्रमुख त्योहार है. महाराष्ट्र की तरह गोवा में भी यह त्योहार धूम-धाम से मनाया जाता है. दिवाली, गुड़ी पाड़वा, शिगमो, क्रिसमस, ईस्टर, ईद आदि भी लोग धूमधाम से मनाते हैं. गोवा के कैथलिक लोग फिस्ट ऑफ संत फ्रांसिस जेवियर हर्षोल्लास से मनाते हैं. गोवा कार्निवल और नए वर्ष पर लोग पश्चिमी परिधानों में जश्न मानते हैं.

खेल-कूद और नृत्य-संगीत : कहा जाता है कि फूटबाल और संगीत गोवन के रग-रग में बसे हुए हैं. फुटबाल यहाँ का सबसे लोकप्रिय खेल है. एफ़सी गोवा, डेम्पो स्पोर्टिंग क्लब, चरचिल ब्रदर्स, आदि मुख्य फुटबाल क्लब हैं. फुटबाल के अलावा क्रिकेट, वॉटर स्पोर्ट्स, शतरंज, टेबल टेनिस, बास्केट-बॉल आदि भी खेला जाता है. यहाँ के लोग खेल-खेल में मनोरंजन के लिए मछली भी पकड़ते हैं. गोवन संगीत प्रेमी होते हैं. संगीत से इन्हें इतना लगाव है कि संगीत आम लोगों के जीवन का एक अभिन्न हिस्सा बन गया है. दुलपोड और मंडो यहाँ के प्रमुख पारंपरिक लोक संगीत हैं. पुर्तगालियों ने वायलिन, पियानो और मेंडोलिन को गोवा के लोक संगीत में शामिल किया. देखन्नी, फुगड़ी, कोरीडिंहो (पुर्तगाली) और दशावतार प्रमुख लोक नृत्य हैं. त्यौहारों में पश्चिमी संगीत और नृत्य का बोलबाला रहता है. फुगड़ी और धालो यहाँ के प्रमुख लोक नृत्य हैं. ये लोक नृत्य मूल रूप से महिलाओं द्वारा किए जाते हैं. धालो धीमी गति से किए जाने वाला नृत्य है जबकि फुगड़ी तेज गति से. फुगड़ी नृत्य में महिलाएं गोल-गोल घूमकर नृत्य करती हैं और धालो में एक दर्जन महिलाएँ एक दूसरे के सामने नृत्य करती हैं. ये दोनों लोक-नृत्य मराठी और कोंकणी गीतों पर किए जाते हैं. ग्रामीण क्षेत्रों में कुणबी एक पारंपरिक लोक नृत्य है. यह नृत्य आमतौर पर शिगमों त्यौहार के दौरान किया जाता है. जिसमें महिलाएँ हाथ में लैम्प लेकर नृत्य करती हैं.

फिल्म जगत और कला : गोवा का फिल्म जगत एक छोटा उद्योग है. यहाँ मुख्य रूप से कोंकणी फिल्में और धारावाहिक बनती हैं. सन् 1949 में पहली कोंकणी फिल्म 'सुखी कोण' प्रदर्शित हुई. गोवा में प्रदर्शित होने वाली कलाएँ अद्वितीय और अनन्य हैं. गोवन खासकर यहाँ की महिलाएं हस्तकला में माहिर होती हैं. यहाँ के बाज़ारों में हस्तशिल्प के नमूने आसानी से देखने को मिल जाते हैं. पर्यटक इन हस्तशिल्प के सामान को बड़ी रुचि से खरीदते हैं. इन सामानों को बनाने में लगने वाली सामग्रियाँ जैसे मिट्टी, समुद्री सीपी (सी-शेल), बाँस, पीतल आदि यहाँ आसानी से मिल जाते हैं. बाँस की बनी हुई टोपी जो कि यहाँ के मछुवारे पहनते हैं, गोवा में आए पर्यटक अक्सर ऐसी टोपी पहने हुए दिख जाते हैं.

अर्थ जगत और आधुनिकता : देश की प्रगति में गोवा का प्रमुख स्थान है. प्रति व्यक्ति आय के मामले में गोवा भारत का सबसे धनी राज्य है. यहाँ की प्रति व्यक्ति आय देश के औसत प्रति व्यक्ति आय से ढाई गुना अधिक है. पर्यटन गोवा की अर्थव्यवस्था की रीढ़ है. यहाँ हर साल देश-विदेश से लाखों सैलानी आते हैं जिससे राज्य को करोड़ों का आर्थिक लाभ होता है. गोवा देश का पहला राज्य है जहाँ ग्रामीण क्षेत्र में 100% विद्युतीकरण किया जा चुका है. 2011 की जनगणना के अनुसार यहाँ की साक्षरता दर 88.7% है. यहाँ के अधिकांश परिवार के पास दुपहिया या चारपहिया वाहन अवश्य होता है. वास्को में अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा है तथा दूसरा अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा मोपा में निर्माणाधीन है. वास्को तथा मडगाँव रेलवे स्टेशन देश के लगभग सभी हिस्सों से जुड़े हुए हैं.

गोवा पूर्वी और पश्चिमी सभ्यता के बीच एक सामंजस्य स्थापित करता है. ज़िंदादिल लोगों के इस प्रदेश में विभिन्न धर्मों के लोग जैसे हिंदू, ईसाई, कैथोलिक, मुस्लिम आदि एक साथ मिल-जुल कर रहते हैं. गोवा भारत का सबसे छोटा राज्य अवश्य है परंतु इसकी महत्ता किसी से कम नहीं. देश की सांस्कृतिक एकता तथा विकास में गोवा का महत्वपूर्ण योगदान है. महीनों लगातार काम करने के बाद जब लोग थक जाते हैं तब छुट्टियाँ मनाना पसंद करते हैं जिससे कि उनमें वापस ऊर्जा का संचार हो सके. अन्य राज्यों की तुलना में गोवा में भले ही बड़ी-बड़ी कंपनियों और कॉर्पोरेट कार्यालयों की कमी हो, पर उन कंपनियों के अधिकारियों में ऊर्जा भरने का कार्य गोवा ही करता है.

❑❑❑

– आनंद सिंह
अधिकारी
क्षेत्रीय कार्यालय, पणजी

क्षेत्रों द्वारा आयोजन

अहमदाबाद क्षेत्र-1 एवं मदुरै द्वारा संयुक्त रूप से राष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन

हिंदी साहित्य के कथा सम्राट मुंशी प्रेमचंद की 140वीं जयंती एवं बैंक के 113वें स्थापना दिवस के अवसर पर 30 जुलाई 2020 को भाषाई क्षेत्र 'ख' (अहमदाबाद क्षेत्र - ख) एवं 'ग' (मदुरै) द्वारा संयुक्त रूप से ''प्रेमचंद के कथा साहित्य में आर्थिक एवं सामाजिक चेतना'' विषय पर राष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन किया गया. इस वेबिनार में अतिथि वक्ता के रूप में डॉ. जशवंतभाई डी. पांड्या, डीन, गुजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद उपस्थित थे.

क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता मेट्रो द्वारा क्षेत्रीय भाषा में संगोष्ठी का आयोजन

कोलकाता मेट्रो क्षेत्र द्वारा दिनांक 19 सितंबर, 2020 को ''मोबाइल बैंकिंग में क्षेत्रीय भाषा की उपयोगिता'' विषय पर बांग्ला में संगोष्ठी का आयोजन किया गया. क्षेत्रीय प्रमुख श्री गोबिंदा बिश्वास ने संगोष्ठी को संबोधित किया. कार्यक्रम में उप क्षेत्रीय प्रमुख श्री शंकर कुमार झा, बड़ौदा अकादमी, कोलकाता के प्रशिक्षण प्रभारी श्री हेमंत कुमार साहू एवं मुख्य वक्ता श्री प्रद्युम्न धर, ई-चैनल विभाग भी उपस्थित रहे.

डिजिटल उत्पादों का उपयोग – कितना सार्थक

आज के समय में किसी व्यवसाय या देश की उन्नति के लिए डिजिटलाइज़ेशन और आधुनिक तकनीक का इष्टतम सदुपयोग बहुत ही जरूरी है. आज बिना आधुनिक तकनीक के उपयोग के किसी भी व्यवसाय या राष्ट्र की प्रगति की कल्पना करना मुश्किल ही है. किसी भी अन्य देश की अर्थव्यवस्था की तरह भारतीय अर्थव्यवस्था प्रणाली में शामिल की गई डिजिटलाइज़ेशन प्रक्रिया के क्रान्तिकारी परिणामों से न केवल भारतीय अर्थव्यवस्था, अपितु हर जन साधारण, व्यवसाय और औद्योगिक क्षेत्र लाभान्वित और गतिमान हुए हैं. स्मार्टफ़ोन, कंप्यूटर, टैब और इनसे जुड़े सॉफ़्टवेयर, ऐप्लीकेशन आदि डिजिटल उत्पादों के प्रयोग से कोई भी शहरी उपभोक्ता अछूता नहीं है. डिजिटल उत्पादों के उपयोग से आज आम नागरिक का जीवन सकारात्मक तरीके से प्रभावित हुआ है. उदाहरण के तौर पर, डिजिटलीकरण के परिणामस्वरूप हर व्यक्ति दैनिक बैंकिंग से संबन्धित कार्य सरलता के साथ पूरा कर पाता है, जैसे कि पैसों का अंतरण/लेन-देन, बिलों का भुगतान और रोज़मर्रा की खरीददारी इत्यादि का डिजिटल पेमेंट के द्वारा भुगतान. ग्राहक की दृष्टि से, इस सरल और सुगम बैंकिंग सुविधा का मुख्य श्रेय डिजिटल उत्पादों के प्रयोग को दिया जा सकता है. यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगा कि वर्तमान समय में किसी भी व्यवसाय, उद्योग या अर्थव्यवस्था की सफलता उसके डिजिटल उत्पादों और आधुनिक तकनीक के सफल कार्यान्वयन की सुदृढ़ नींव पर आधारित है.

डिजिटल उत्पाद तकनीकी उत्पाद हैं, इसलिए इन्हें परिभाषित भी तकनीकी भाषा में ही किया जा सकता है. डिजिटल उत्पाद वह उत्पाद होता है जिसका भौतिक अस्तित्व नहीं है और जिसके प्रयोग के लिए स्मार्टफ़ोन, कंप्यूटर, टैब, लैपटॉप आदि इलेक्ट्रोनिक उपकरणों की आवश्यकता होती है.

डिजिटल उत्पादों के उपयोग की सार्थकता को समझने के लिए इनके लाभ और हानि को जानना आवश्यक है. डिजिटल उत्पादों में क्रय-विक्रय करने के लिए आने वाली लागत बहुत कम होती है, उदाहरण के लिए कोई भौतिक भंडारण, विनिर्माण, पैकिंग, या शिपिंग और हैंडलिंग लागत नहीं लगती. किसी दुकान की आवश्यकता नहीं, न ही दुकान का किराया, बिजली का बिल आदि की चिंता है. आग, बाढ़ या किसी प्राकृतिक आपदा से दुकान और सामान के नुकसान की चिंता नहीं. यदि डिजिटल उत्पाद कोई फ़ाइल या सॉफ़्टवेयर आदि है तो उसे पूरे विश्व में कहीं भी इन्टरनेट के माध्यम से डाउनलोड किया जा सकता है. यानि वैश्विक बाज़ार की सुविधा उपलब्ध होती है. भौतिक उत्पाद की तुलना में डिजिटल उत्पाद की लाभ-सीमा या प्रॉफ़िट मार्जिन अधिक होता है. एक प्रकार से डिजिटल उत्पाद हमेशा के लिए उपलब्ध है, किसी प्रकार की टूट - फूट की चिंता नहीं, कभी आउट ऑफ़ स्टॉक नहीं होता और खरीद के लिए हर समय उपलब्ध होता है. वर्तमान समय का ग्राहक सभी कार्य तुरंत चाहता है. समय का अभाव अथवा बेहतर ग्राहक सुविधा, कारण जो भी हों. ग्राहक की यह अपेक्षा रहती है कि उसे व्यक्तिगत सुविधाएं और 24/7 बैंकिंग सेवाएँ उपलब्ध हों, वह भी उसके मोबाइल या इंटरनेट पर ताकि उसे कहीं जाना न पड़े और कार्य भी तुरंत हो जाए. ग्राहक की इन अपेक्षाओं को डिजिटल उत्पादों, उदाहरण के लिए बैंकिंग के क्षेत्र में, मोबाइल बैंकिंग, इंटरनेट बैंकिंग, भीम यूपीआई आदि के प्रयोग से ही पूरा किया जा सकता है. जो उद्योग ग्राहकों को जितना उन्नत और सरल डिजिटल उत्पाद उपलब्ध करा पाता है, वह उतना ही अधिक प्रतिस्पर्धात्मक अग्रता को प्राप्त कर पाता है. किसी भी संगठन, सरकारी या निजी कार्यालय के कार्यनिष्पादन को पेपरलेस करने के लक्ष्य में डिजिटल उत्पादों का मुख्य योगदान है. या कहें कि यह डिजिटल उत्पादों से ही संभव हो सका है.

डिजिटल उत्पादों की हानि में मुख्य है इनका शीघ्र ही आउटडेट या अप्रचलित हो जाना. इसके अतिरिक्त डिजिटल उत्पाद केवल शिक्षित वर्ग के कुछ ग्राहकों या ग्राहक समूह तक ही सीमित होते हैं. कॉपीराइट नियमों का पालन पूरी तरह न होने से डिजिटल उत्पाद की प्राय: अवैध प्रतियाँ बनाई जाती हैं, जिससे व्यवसाय को नुकसान होता है. सुरक्षा, गोपनीयता संबन्धित मुद्दे, निरंतर परिवर्तित होती तकनीक और तकनीकी बाधाएँ, प्रतिस्पर्धा और प्रतिस्पर्धियों द्वारा अधिग्रहण जैसी चुनौतियाँ अन्य हानियों में सम्मिलित हैं. कुल मिलाकर डिजिटल उत्पादों की उपयोगिता उससे होनेवाली हानि से अधिक है और आने वाले समय में ए.आई. या आर्टिफ़िशियल इंटेलिजेंस के आने के बाद डिजिटलीकरण पहले से भी अधिक विस्तृत होगा

और डिजिटल उत्पादों का उपयोग न केवल अपेक्षित होगा अपितु अनिवार्य हो जाएगा.

डिजिटल उत्पादों और डिजिटलीकरण की उपयोगिता और महत्ता को वर्तमान वैश्विक महामारी कोरोना वायरस के प्रकोप ने और भी बढ़ा दिया है. पूरे विश्व में शिक्षित वर्ग में ऐसा कोई व्यक्ति नहीं होगा जो कोरोना महामारी के बारे में न जानता हो. इस महामारी के कारण न सिर्फ़ सामान्य जन-जीवन प्रभावित हुआ है, अपितु इसने सम्पूर्ण विश्व की अर्थव्यवस्था की गतिशीलता और विकास की दर को अपेक्षा से अधिक धीमा कर दिया है. इस प्राणघातक रोग का अभी तक कोई इलाज या प्रभावशाली दवा या वैक्सीन न होने के कारण मानवता इस से भयभीत है. सभी देशों के प्रतिनिधि इस अदृश्य शत्रु से लड़ने में, अपने नागरिकों की इससे रक्षा करने में और अपने देश की अर्थव्यवस्था को गतिमान बनाए रखने में जुटे हुए हैं. इन परिस्थितियों से उत्पन्न हुई विकटताओं, जटिलताओं और चुनौतियों के मध्य डिजिटल उत्पाद एक वरदान की भांति सिद्ध हुए हैं. सोशल डिस्टैंसिंग के नियमों का पालन करने और भीड़ या सभा को एकत्रित न होने देने संबंधी दिशानिर्देशों ने पूरे विश्व को काम-काज करने के परंपरागत तौर तरीके के बुनियादी ढांचे को एक नई दृष्टि से देखने के लिए विवश कर दिया है. जब पूरा विश्व इस महामारी के प्रकोप के कारण लॉकडाउन के आरंभिक चरणों में था, तब इस चुनौतीपूर्ण समय में वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग आदि डिजिटल उत्पादों ने, अचानक ठप्प हुए कार्यों को डिजिटल माध्यम से पूरा करने की सुविधा प्रदान की. वर्क फ्रोम होम या घर से कार्य की व्यवस्था को सुचारु रूप से चलाने के लिए और भारत में प्रथम लॉकडाउन से बंद चल रहे स्कूल एवं कॉलेजों को घर बैठे छात्रों तक शिक्षा पहुंचाने के लिए भी वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग ने ही सहायता की है. छात्र ऑनलाइन पढ़ाई कर रहे हैं और डिजिटल उत्पादों की सहायता से होमवर्क कर रहे हैं और परीक्षाएँ दे रहे हैं. सभी प्रकार के प्रशिक्षण और साक्षात्कार डिजिटल माध्यम से पूरे किए जा रहे हैं. डिजिटल उपस्थिति ने व्यक्तिगत उपस्थिति का स्थान ले लिया है. मोबाइल बैंकिंग, इंटरनेट बैंकिंग, भीम यूपीआई आदि के प्रयोग से ग्राहकों को बैंक की शाखा में जाने की आवश्यकता नहीं है. स्मार्टफ़ोन में उपलब्ध भिन्न प्रकार के एप्लीकेशन्स की उपलब्धता इस कोरोना काल में किसी आशीष से कम नहीं. राशन, सब्ज़ी, दवाएं और खाद्य पदार्थ या भोजन जैसी मूलभूत आवश्यकताओं को स्मार्टफ़ोन एप्लीकेशन्स से ऑर्डर करके घर बैठे ही पूरा किया जा सकता है. इसके अतिरिक्त विभिन्न एप्लीकेशन्स के द्वारा पानी, बिजली, टेलीफ़ोन, मोबाइल आदि बिलों का भुगतान आम नागरिक बिना कहीं जाए किसी भी समय कर सकते हैं. स्मार्टफ़ोन से क्यूआर कोड स्कैनिंग के द्वारा राशन और भिन्न प्रकार की खरीददारी का भुगतान ग्राहक कैशलेस तरीके से कर सकते हैं, जिससे ग्राहक और दुकानदार दोनों को लाभ है क्योंकि उन्हें नकदी रखने, गिनने, बैंक में जमा कराने इत्यादि कार्यों से छुटकारा मिलता है और कोरोना संक्रमण से बचने में सहायता मिलती है. इन्हीं दैनिक कार्यों को पूरा करने के लिए पहले दुकानों, कार्यालयों पर लंबी कतारें लगा करती थीं, विशेषकर बिलों के भुगतान में, जहां व्यक्ति को समय निकाल कर जाना पड़ता था और जिसमें समय का अपव्यय होता था. किन्तु अब स्मार्टफ़ोन अथवा डिजिटल उत्पाद उपभोक्ता इन समस्याओं से स्वतंत्र हैं. जिस प्रकार प्रारम्भिक दौर में बिजली के मशीनी उपकरणों ने बहुत से दैनिक कार्यों को सरल बनाया था, उसी प्रकार आज के डिजिटल युग में डिजिटल उत्पादों ने हमें उन्नत स्तर की सुविधाएं प्रदान की हैं और मानव जीवन की गुणवत्ता को सुधारा है. इसी क्रम में, भारत सरकार द्वारा कोरोना से डिजिटल तरीके से निपटने के लिए आरोग्य सेतु नामक मोबाइल एप्लीकेशन को विकसित किया गया है, जो सरकार, अस्पतालों या स्वास्थ्य संगठनों को कोरोना संक्रमित व्यक्तियों को ट्रैक करने में सहायता करता है, किसी स्वस्थ व्यक्ति को कोरोना संक्रमित व्यक्ति से संपर्क में आने पर सचेत करता है और कोरोना से संबन्धित अन्य महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करता है.

यह बात स्पष्ट हो चुकी है कि भविष्य में आने वाली ऐसी त्रासदियों और विपत्तियों से हमें सतर्क और तैयार रहने की आवश्यकता है, जिसमें तकनीक और डिजिटल उत्पादों की अति महत्वपूर्ण भूमिका होने वाली है. विश्व में इस बात पर मंथन चल रहा है कि किस प्रकार तकनीक और डिजिटल उत्पादों को और अधिक प्रभावशाली एवं सफल बनाया जाए ताकि वैश्विक संकटों की परिस्थितियों का सफलतापूर्वक सामना किया जा सके. माइक्रोसॉफ़्ट टीम्स, जियो मीट, गूगल मीट, सिस्को वेबेक्स, वीडियो कॉलिंग और भिन्न प्रकार के संस्थागत डिजिटल उत्पादों के अभाव में वर्तमान परिप्रेक्ष्य में निजी या सरकारी, किसी भी कार्य की कल्पना करना भी संभव नहीं है.

डिजिटल उत्पादों को देखने का एक और दृष्टिकोण है, इनके प्रयोग के दुष्प्रभाव. फेसबुक, इंस्टाग्राम, व्हाट्सऐप, ट्विटर, यूट्यूब आदि डिजिटल उत्पादों के प्रयोग से सोशल मीडिया का एक नेटवर्क अस्तित्व में आया है, जिससे कोई भी व्यक्ति किसी भी अनुभव या जानकारी को पूरे विश्व के साथ साझा कर सकता है. हालांकि यह एक ऐतिहासिक उपलब्धि है किन्तु

सोशल मीडिया के इन डिजिटल उत्पादों को अधिक प्रयोग करने वाले व्यक्ति, विशेषकर युवा वर्ग, भ्रमित जानकारी शेयर करने और प्राप्त करने से नकारात्मक रूप से प्रभावित होते हैं, एक बनावटी या काल्पनिक दुनिया में रहने लगते हैं, केवल अपनी उपलब्धियों को शेयर करते हैं और दूसरों की उपलब्धियों से ईर्ष्या करने लगते हैं या स्वयं को हीन, अयोग्य या अक्षम समझने लगते हैं, अवसाद अथवा मानसिक तनाव अनुभव करने लगते हैं इत्यादि. डिजिटल उत्पादों को केवल किसी स्क्रीन वाले उपकरण पर ही प्रयोग किया जा सकता है, इस कारण लगातार स्क्रीन देखने से नेत्र या दृष्टि संबंधी व्याधियाँ हो सकती हैं. चूंकि सभी डिजिटल उत्पाद मूल रूप से घर बैठे ही उपभोक्ता को सेवाएँ प्रदान करते हैं, इस कारण ये मोटापा और सामाजिक, मानसिक एवं व्यक्तिगत विकास का रुकना या धीमा होना, व्यावहारिक ज्ञान अकुशलता, मानवीय संवेदन शून्यता, सामाजिक सम्बन्धों की केवल सतही समझ होना आदि समस्याओं को उत्पन्न कर सकते हैं. हालांकि, डिजिटल उत्पादों के इन दुष्प्रभावों को जन साधारण में जागरूकता के द्वारा दूर किया जा सकता है और डिजिटल उत्पादों के प्रयोग के शिष्टाचारों को अपना कर हम एक स्वस्थ डिजिटल वातावरण का निर्माण कर सकते हैं.

डिजिटल उत्पादों के हर पहलू को देखते हुए हम इस निष्कर्ष पर पहुँच सकते हैं कि डिजिटल उत्पादों का उपयोग निश्चित तौर पर सार्थक है और इनकी उपयोगिता को देखते हुए यह माना जा सकता है कि इनसे उत्पन्न होने वाले दुष्प्रभाव या असुविधाएँ गौण हैं. मानवता के इतिहास में जितने भी आविष्कार हुए हैं उनकी कुछ न कुछ सीमाएं या असुविधाएँ रही हैं, किन्तु जिन उत्पादों या सुविधाओं का मानव जीवन पर सकारात्मक प्रभाव रहा है वे अस्तित्व में भी बनी रही हैं. डिजिटल उत्पादों को अस्तित्व में आए हुए कुछ वर्षों का ही समय हुआ है, किन्तु इनकी उपयोगिता से सम्पूर्ण विश्व लाभान्वित हुआ है. निरंतर परिवर्तित होते तकनीक के परिदृश्यों को देखते हुए यह कहना कठिन है कि डिजिटल उत्पादों का भविष्य क्या होगा, परंतु डिजिटल उत्पाद अपनी सुविधाओं के द्वारा और मानव जीवन स्तर को बेहतर बनाने के लिए भविष्य में भी अपना अस्तित्व बनाए रखने में एवं मानवता को अपनी उपयोगिता और सार्थकता का बोध कराने में सफल रह पाएंगे. ❑❑❑

– राज कुमार
अधिकारी
अंचल कार्यालय, चंडीगढ़

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकें

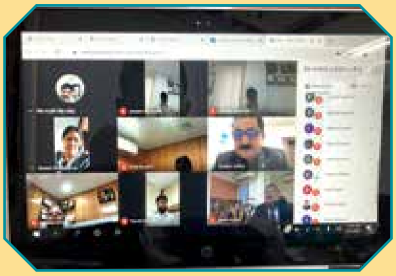

नराकास, राजकोट

बैंक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, राजकोट की 18वीं छ:माही बैठक का आयोजन दिनांक 25 अगस्त, 2020 को अध्यक्ष, (बैंक नराकास, राजकोट) श्री संजीव डोभाल की अध्यक्षता में किया गया.

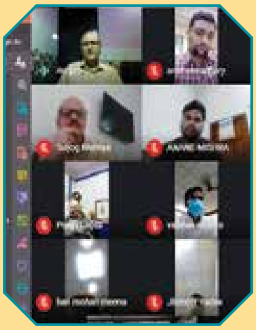

नराकास, बरेली

बैंक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, बरेली की 13वीं छ:माही बैठक का आयोजन दिनांक 14 अगस्त, 2020 को अध्यक्ष, नराकास, बरेली श्री अमरनाथ गुप्ता, अंचल प्रमुख, बरेली की अध्यक्षता में किया गया.

नराकास, फतेहपुर

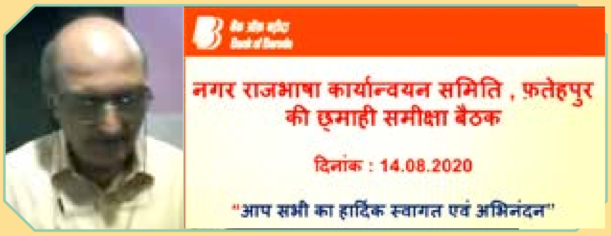

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, फतेहपुर की 7वीं छ:माही बैठक का आयोजन दिनांक 14 अगस्त, 2020 को श्री अतुल कुमार खरे की अध्यक्षता में किया गया.

नराकास, राजनांदगांव

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, राजनांदगांव, दुर्ग क्षेत्र की पांचवीं छ:माही बैठक का आयोजन दिनांक 23 जुलाई, 2020 को श्री अजय कुमार त्रिपाठी की अध्यक्षता में किया गया.

पारंपरिक दुर्गा पूजा और उसका सांस्कृतिक महत्त्व

दुर्गा पूजा अथवा शारदीय नवरात्र शरद ऋतु में मनाया जाने वाला, मुख्य रूप से पश्चिम बंगाल का सबसे महत्वपूर्ण त्यौहार है. दुर्गा पूजा का शाब्दिक अर्थ देवी दुर्गा की पूजा है और यह दुर्भावनापूर्ण आकार बदलने वाले दानव महिषासुर पर माँ देवी दुर्गा की जीत की पौराणिक घटना को दर्शाता है. भारत के कई प्रांतों के लिए यह देवी दुर्गा की पूजा है, लेकिन हम पश्चिम बंगाल के सन्दर्भ में देखें तो यह एक परम्परा और संस्कृति है. पश्चिम बंगाल के लोगों के लिए यह निश्चित रूप से एक धार्मिक आयोजन के साथ-साथ यह संस्कृति से जुड़ा हुआ त्यौहार है. एक ऐसी संस्कृति जो पश्चिम बंगाल के कण-कण में है, यहां के हर बच्चे, युवा और बुजुर्गों के तनमन में बसी है. यह एक प्रवाह है, उत्साह है. दुनिया भर के बंगाली परिवार इस शुभ अवसर को मनाते हैं.

पश्चिम बंगाल के लिए माँ दुर्गा उनके परिवार की सदस्य हैं और उनके आने पर उन्हें अभिवादन करने के लिए वहाँ रहने की आवश्यकता होती है. हर कोई इस पूजा को सांस्कृतिक और पारंपरिक रूप में मनाने की कोशिश करता है. इस अवसर पर जगह-जगह भव्य और सुंदर पंडाल बनाए जाते हैं और माँ दुर्गा सहित कई देवी-देवताओं की मूर्तियां स्थापित की जाती हैं. इन पंडालों में माँ दुर्गा की विधिवत पूजा की जाती है. माँ दुर्गा के दर्शन करने के लिए पंडालों में लोगों की भीड़ उमड़ पड़ती है. कोलकाता में सबसे बड़े पूजा पंडाल और देवी दुर्गा की मूर्ति बनाई जाती है.

भगवान राम ने रावण को मारने की शक्ति प्राप्त करने के लिए मां दुर्गा की पूजा की थी. दुर्गा पूजा उत्सव बुराई पर अच्छाई की जीत के लिए मनाया जाता है. इस दिन मां दुर्गा को महिषासुर पर विजय प्राप्त हुई थी. दुर्गा पूजा नौ दिन और नौ रातों तक मनाई जाती है, इसलिए दुर्गा पूजा को नवरात्रि भी कहा जाता है. नवरात्रि का वास्तविक अर्थ देवी दुर्गा और महिषासुर के बीच लड़ाई के नौ दिन और रात हैं. अंत में, माँ दुर्गा ने दसवें दिन राक्षस महिषासुर का वध किया था. इस दिन को विजयादशमी कहा जाता है.

मैं पश्चिम बंगाल की राजधानी कोलकाता में रहती हूँ और यहाँ के लोगों की भावना को शब्दों में व्यक्त करने में असमर्थ हूँ. वर्ष की शुरुआत से ही पूजा की अग्रिम तैयारी पश्चिम बंगाल के लोगों के मन और हाव-भाव में दिखाई देने लगती है. परमार बंधुरा (एक ही पड़ोस में रहने वाले मित्र) एक विषय को ध्यान में रखते हुए पंडालों को सजाने के लिए एक साथ आते हैं. दुर्गा पूजा में कई कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं जैसे कि नृत्य प्रतियोगिता, गीत-संगीत प्रतियोगिता, सर्वश्रेष्ठ पोशाक प्रतियोगिता, व्यंजन प्रतियोगिता, चित्रकारी प्रतियोगिता इत्यादि. राज्य भर में सर्वश्रेष्ठ सजाए गए पंडालों को सम्मानित करने के लिए प्रतियोगिताओं का भी आयोजन किया जाता है. ये पंडाल अक्सर कलात्मक कृति होते हैं और सबसे अमूर्त से लेकर सबसे स्पष्ट विषय पर बनाये जाते हैं.

पंडालों में जाकर लोग मां दुर्गा की मूर्तियों के दर्शन करते हैं. इस पूजा के दौरान दस दिनों तक सभी प्रकार के अनुष्ठान किए जाते हैं, जैसे कि उपवास, दावत, माँ दुर्गा की प्रतिमा की पूजा, कुमारी पूजा और सिंदूर खेला. दुर्गा पूजा का उत्सव दशमी के दिन सिंदूर खेला के साथ समाप्त होता है, जिसका शाब्दिक अर्थ है सिंदूर खेल. शादीशुदा महिलाएं, लाल बार्डर वाली खूबसूरत सफेद साड़ियों में देवी दुर्गा को और एक दूसरे के चेहरे पर सिंदूर लगाती हैं और सिंदूर खेलती हैं तथा आशीर्वाद लेती हैं.

यह त्यौहार मुख्य रूप से पांच दिनों तक मनाया जाता है. हालांकि, पारंपरिक रूप से, यह दस दिन का कार्यक्रम होता है. दस दिनों के अंतिम पांच दिनों को बड़े ही उत्साह के साथ मनाया जाता है. इन पाँच दिनों को षष्ठी, सप्तमी, अष्टमी, नवमी और दशमी कहा जाता है. इस बारे में सबसे विशेष बात यह है कि यह केवल बंगाली हिंदुओं के लिए एक त्यौहार नहीं है, बल्कि सांस्कृतिक विरासत है. कई अन्य समुदाय और बंगाल में रहने वाले अन्य धार्मिक पृष्ठभूमि के लोग भी इस उत्सव में शामिल होते हैं. कुछ मूर्तिकार अन्य समुदाय के हैं. कोलकाता

से लगभग 30 किलोमीटर दूर बारगछिया में अन्य समुदाय के कई सदस्यों ने माँ दुर्गा के चमकदार बालों को बनाने के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया है. कम से कम पांच दशकों से यह चलन में है. इसके अलावा, अन्य सभी समुदाय के लोगों को अपनी रातें पंडाल में बिताते हुए, हिंदुओं को अनुष्ठानों की तैयारी में मदद करते हुए और कभी-कभी उनमें भाग लेते हुए भी देखा जा सकता है.

पश्चिम बंगाल के लिए यह एक धार्मिक त्यौहार के साथ-साथ सांस्कृतिक उत्सव भी है. जहाँ भारत भर में कई हिंदू खाने में मांसाहारी भोजन से परहेज करते हैं, उपवास रखते हैं और शुभ अनुष्ठानों के दौरान पूजा करते हैं, वहीं बंगाल के लोग इसे अलग तरीके से मनाना पसंद करते हैं. यह पश्चिम बंगाल के लिए खुशी का अवसर है क्योंकि देवी दुर्गा अपने बच्चों के साथ उनसे मिलने के लिए लौट रही हैं और वे शायद ही उन चीजों से परहेज करते हैं जो उन्हें खुश करती हैं – जैसे की अच्छा मांसाहारी भोजन, अच्छे कपड़े और कुछ भी अच्छा जो उन्हें प्रसन्न करता है. इसके अलावा, बंगाल के लोग देवी दुर्गा के आगमन की तैयारी के लिए पूरे महीने त्यौहार मनाते हैं. वे नए कपड़ों की खरीदारी करने जाते हैं और निश्चित रूप से, अपने समय का उत्साह पूर्ण ढंग से उपयोग करते हैं.

पहले दुर्गा पूजा को परिवारों के भीतर निजी तौर पर मनाया जाता था, लेकिन अब यह एक सामुदायिक उत्सव के रूप में बदल गया है और पूजा पंडालों में मनाया जाता है. इस उत्सव ने भारत के अन्य हिस्सों में भी बहुत लोकप्रियता हासिल की है. भारत के मध्य, पूर्वी, उत्तर-पूर्वी भाग में भी आकर्षक पंडाल और उत्सव मनाते लोग देखे जा सकते हैं, जिसमें गरबा और डांडिया का आयोजन अत्यंत हर्सोल्लास के साथ भव्य रूप से किया जाता है. यह अवसर लोगों को खूबसूरत कपड़े पहनने, दिल खोल कर खाने और खुश रहने के सभी कारण देता है. रिश्तेदार और मित्र एक दूसरे से मिलते हैं और समूहों में विभिन्न पंडालों का दौरा करते हैं. यह उत्सव सभी को साथ आने का मौका देता है.

❑❑❑

– अनामिका प्रसाद

मुख्य प्रबंधक (मा.सं.प्र)

कोलकाता, महानगरीय क्षेत्र-खख,

नराकास बैठकें

नराकास, जयपुर

बैंक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, जयपुर की 70वीं छ:माही बैठक दिनांक 31 अगस्त, 2020 को अंचल प्रमुख, जयपुर श्री महेंद्र एस. महनोत की अध्यक्षता में आयोजित की गई.

नराकास, अहमदाबाद

बैंक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, अहमदाबाद की 67वीं छ:माही बैठक का आयोजन दिनांक 20 अगस्त, 2020 को श्री एम.एम.बंसल, महाप्रबंधक एवं अंचल प्रमुख, अहमदाबाद की अध्यक्षता में किया गया.

नराकास, गांधीनगर

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, गांधीनगर की 15वीं छ:माही बैठक का आयोजन दिनांक 24 सितंबर, 2020 को अध्यक्ष (नराकास, गांधीनगर) श्री दीपांकर गुहा की अध्यक्षता में किया गया.

बैंक नराकास, वाराणसी

बैंक नराकास, वाराणसी की बैठक दिनांक 10 जुलाई, 2020 को श्री अजय मलिक, उप निदेशक (कार्यान्वयन), राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार श्री के आर कनोजिया, महाप्रबंधक (राजभाषा एवं सं.स.) के मार्गदर्शन एवं क्षेत्रीय प्रमुख श्री प्रतीक अग्निहोत्री की अध्यक्षता में वेब के माध्यम से आयोजित की गई.

हिन्दी दिवस समारोह

प्रत्येक वर्ष की तरह इस वर्ष भी देश भर में स्थित बैंक के कार्यालयों में धूमधाम से हिन्दी दिवस मनाया गया. इस अवसर पर कार्यालयों में हिन्दी माह आयोजित कर बैंक के सभी श्रेणी के स्टाफ सदस्यों एवं कार्यपालकों के लिए राजभाषा हिन्दी से संबंधित कई प्रतियोगिताएं एवं अभिप्रेरणा कार्यक्रम आयोजित किए गए. प्रस्तुत हैं इन कार्यक्रमों की कुछ झलकियां:

अंचल कार्यालय

अहमदाबाद

मंगलूरु

बेंगलुरू

चंडीगढ़

पटना

हैदराबाद

लखनऊ

चेन्नई

मुंबई

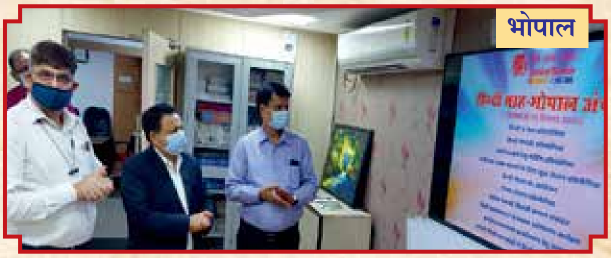
भोपाल

राजकोट

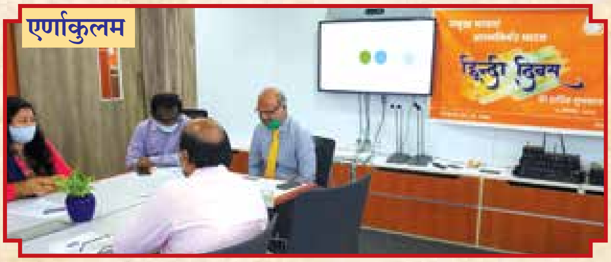
एर्णाकुलम

बड़ौदा

कोलकाता

पुणे–अंचल एवं क्षेत्रीय कार्यालय

दिल्ली–अंचल एवं दिल्ली महानगर क्षेत्र–1–2

मेरठ अंचल एवं बरेली क्षेत्र

बड़ौदा एपेक्स अकादमी, गांधीनगर

क्षेत्रीय कार्यालय

नागपुर

गया

गोरखपुर

पूर्णिया

बेंगलूरू

मुजफ्फरपुर

इलाहाबाद

चेन्नै मेट्रो क्षेत्र–I

अहमदाबाद क्षेत्र 1

चेन्नै मेट्रो क्षेत्र–II

बनासकांठा

मेहसाना

कोटा

दिल्ली महानगर क्षेत्र–2

दिल्ली महानगर क्षेत्र –3

गोधरा

मदुरै

बीकानेर

क्र.	हिंदी	तेलुगु	तमिल	मलयालम
1.	आपको किस प्रकार का बैंक खाता खुलवाना है?	मीरु एलांटि बैंकु खाता तेरुवाली?	नींगल् एन्द वगैयान वंगिक्कणक्कै तुवंग विरुम्बुकिरीर्गल्?	तांगल् ऐत् तरम बैंक अकाउंट तुरक्कान आग्रहिक्कुन्नु?
2.	मुझे बचत खाता खुलवाना है.	नेनु पोदुपु खाता तेरुवालनुकुंटुन्नानु।	नान् सेमिप्पुक्कणक्कै तुवंग विरुम्बुकिरेन्.	एनिक् ओरु सेविंग्स अकाउंट तुरक्कान आग्रहमुन्ड्
3.	मुझे आवास ऋण के बारे में जानकारी चाहिए.	नाकु गृह ऋणम गुरिन्चि समाचारम कावालि।	एनक्कु वीट्टुक्कडन् पट्रिय तकवल्कल् वेंडुम्.	एनिक् भवनवयिप्पयेक्कुतिछ्ळ्ला विवरन्गळ वेनम्.
4.	कृपया प्रथम तल पर जाकर अग्रिम विभाग से संपर्क करें.	मोदटि अंतस्तुकि वेळ्ली मुंदुन्न विभागान्नि संप्रदिन्चन्डी।	दयवुचेय्दु मुदल् माडिक्कु चेन्ट्रु कडन् तुरैयै तोडर्बु कोल्लुंगल्.	दयवायि ओनाम् निलयिले क्रेडिट विभागवुमायि बंधप्पेडुका
5.	मुझे कितने समय के लिए ऋण मिल सकता है?	नेनु एन्तकालम कोरकु ऋणम पोंदगलनु?	नान् कडन् पेरक्कूडिय काल अलवु एन्न?	एनिक्कु वायिप्पा लभिक्कुन्न कालावधि एत्रयाणु ?
6.	हम अधिकतम 30 वर्ष तक के लिए ऋण देते हैं.	मेमु गरिष्टंगा 30 संवत्सराल वरकु ऋणालु अंदिस्तामु।	नांगल् अधिकपट्चम् मुप्पदु आण्डुगल् वरै कडन्कलै वळंगुकिरोम्.	परमावधि 30 वर्षम् वरे ञगल वायिप्पा नल्कुन्नतु
7.	ऋण संबंधी सभी दस्तावेज आपको बैंक में जमा करने होंगे.	मीरु ऋणानिकि संबंधिन्चिन अन्नि पत्रालकु ब्यांकुकु समर्पिन्चाली।	कडन् तोडर्पान अनैत्तु आवणंगलैयुम् नींगल् वंगियिल् समर्पिक्क वेंडुम्.	वायिप्प्युमायि बन्धप्पेट्टा एल्लाम् रेखकळुम् तान्गाळुम् तांगळ बैंगि़ल समर्प्पिक्केंडताण
8.	जी जरूर. मैं कल तक सभी दस्तावेज बैंक में जमा कर दूंगा.	अवुनु, खच्चितंगा रेपटिनाटिकि अन्नि पत्रालनु ब्यांकुकु समर्पिस्तानु।	आम्, कण्डिप्पाग नान् नालैक्कुल् अनैत्तु आवणंगलैयुम् वंगियिल् समर्प्पिप्पेन्.	अते तीर्चयायुम् ञान एळ्लाम् रेखकळुम् नाळे बंगि़ल समर्प्पिक्कुम
9.	मुझे अपने बचत खाते से राशि निकालनी है.	ना पोदुपु खाता नुन्डि निधुलनु उपसंहरिन्चुकोवालनुकुन्टुन्नानु।	नान् एनदु सेमिप्पु कणक्किलिरुन्दु पणम् एडुक्क विरुम्बुकिरेन्.	एंटे सेविंग अकाउंटिल निन्नु फंड पिन्वलिक्कान ञान आग्रहिक्कुन्नु
10.	इस सुविधा के लिए कृपया आहरण पर्ची भर कर हमें दें.	ई सौकर्यम कोसम, दयचेसि उपसंहरन स्लिप निमपन्डी।	इदर्क्कु, दयवुसेय्दु पणम् एडुक्कुम् पडिवत्तै निरप्पुंगल्.	ई सौकर्यत्तिनाई, पिंवलिक्कान स्लिप्प पूरिप्पिक्कुका
11.	क्या आपके बैंक की शाखाएं गांव में भी है?	मी ब्यांकुकु ग्राममलो शाखालु उन्नाया?	उंगलदु वंगि ग्रामत्तिलुम् तनदु किलैकलै कोण्डुल्लदा?	निगलुडे बैंकिनु ग्रामंग़ळिलुम् शाखयुंडो ?
12.	जी हां और बैंक अपनी शाखाओं का विस्तार भी कर रहा है.	अवुनु , ब्यांक कूड तन शाखालनु विस्तरिस्तुंदी।	आमाम् वंगि तनदु किलैकलै विरिवुपडुत्तुगिरदु.	उंडु .बैंक शाखकळ व्पुलीकरिक्कुकयुम चेय्युन्नु
13.	क्या आपकी शाखा में ग्राहक-बैठकों का आयोजन नियमित रूप से होता है?	मी शाखा क्रमम तप्पकुन्डा कस्डटमर समावेशालु निर्वहिस्तुन्दा?	वाडिक्कैयालर् संत्तिप्पु उंगलदु किलैयिल् तवरामल् नडक्किरदा?	निंग़लुडे ब्रांचिल पतिवायि उपभोक्तृ मीटिंग़ नडत्तुनुडो?
14.	हां, हम ये बैठकें नियमित रूप से आयोजित करते हैं.	अवुनु, मेमु ई समावेषालनु क्रमम तप्पकुन्डा निर्वहिस्तामु।	आमाम् इन्द संत्तिप्पै नांगल् तवरामल् नडत्तुकिरोम्.	अते. ञन्गल पतिवायि ई मीटिंग नडत्तारुंडु
15.	हमने आपकी पासबुक अद्यतन कर दी है.	मेमु मी पासबुकनु नवीकरिन्चामु।	उंगल् पास् पुत्तगत्तै नांगल् पुदुप्पित्तुल्लोम्.	ञग़ल तांग़लुडे पासबुक अपडेट चेय्तिरिकुन्नु

कन्नड	गुजराती	बांग्ला	मराठी
नीवु याव रीतिय बैंक खातेयन्नु तेरेयलु बयसुत्तीरि?	तमे कया प्रकारनुं बेंक-खातुं खोलवा मांगो छो?	आपनि कोन धोरोनेर बैंक अकाउंट खुलते चान?	आपण कोणते बँक खाते उघडू इच्छिता?
नानु उळिताय खातेयन्नु तेरेयलु बयसुत्तेने.	मारे बचत खातुं खोलाववुं छे.	आमि एकटि सेभिंग अकाउंट खुलते चाई.	मला बचत खाते उघडायचे आहे.
ननगे गृह सालगळ बग्गे माहिती बेकु	मने होम लोन विशे माहिती जोईए छे.	आमि गृह ऋण सोम्पोर्के तोथ्थो चाई.	मला होम लोनबद्दल माहिती हवी आहे.
दयविट्टु मोदलने महडिगे होगी, साल विभागवन्नु संपर्किसी.	कृपा करीने पहेला माळे जईने एडवान्स विभागनो संपर्क करो.	दोया कोरे प्रोथोम तोलाय जान एबोंग ऋण विभागेर साथे व्जोगाजोग कोरून.	कृपया पहिल्या मजल्यावर जा आणि अग्रिम विभागाशी संपर्क साधा.
नानु एष्टु अवधिगे साल पडेय बहुदु?	मने केटला समय माटे लोन मळी शके छे?	आमि कोतो सोमोएर जोन्नो ऋण पेते पारि?	मला किती काळ कर्ज मिळेल?
नावु गरिष्ठ 30 (मूवत्तु) वर्षगळ अवधिगे सालवन्नु ओदगिसुत्तेवे.	अमे वधुमां वधु 30 वर्ष सुधीनी लोन प्रदान करीए छीए.	आमरा सर्वोच्च 30 बोछोर पोर्जोंतो ऋण दिते पारि.	आम्ही जास्तीत जास्त 30 वर्षांपर्यंत कर्ज प्रदान करतो.
नीवु सालक्के संबंधिसिद एल्ला दाखलेगळन्नु बैंकिगे सल्लिसबेकु.	तमारे लोन संबंधित तमाम दस्तावेजो बेंकमां जमा करवा पडशे.	आपानाके ऋण सोम्पोर्किती सोमोस्तो कागज पोत्रो बैंक जमा दिते होबे.	आपल्याला कर्जाशी संबंधित सर्व कागदपत्रे बँकेत जमा करावी लागतील.
हौदु. खंडितवागि. नानु नाळेयओळगे एल्ला दाखलेगळन्नु बैंकिगे सल्लिसुत्तेने.	हा, चोक्कसपणे. हुं आवतीकाले तमाम दस्तावेजो बेंकमां जमा करी दइश.	हें, अबोसोई आगामीकाल नागाद आमि सोमोस्तो कागज पोत्रो बैंके जमा देबो.	होय नक्कीच. मी उद्यापर्यंत सर्व कागदपत्रे बँकेत जमा करेन.
नानु नन्न उळिताय खातेयिंदा हणवन्नु हिंपडेयलु बयसुत्तेने.	हुं मारा बचत खातामांथी नाणां उपाडवा मांगु छुं.	आमि आमार जोन्नो सिभिंग अकाउंट थेके टाका तुलते चाई.	मला माझ्या बचत खात्यातून पैसे काढायचे आहेत.
ई सौलभ्यक्कागी दयविट्टु वापसाति स्लिपअन्नु भर्ती माडि.	आ सुविधा माटे, कृपा करीने विड्रोअल स्लीप भरीने अमने आपो.	ऐइ सुविधार जोन्नो प्रोत्याहार स्लिप पूरोन कोरून.	या सुविधेसाठी कृपया पैसे काढण्याची स्लिप भरा.
निम्म बैंकु हळ्ळियल्लू कूडा शाखेगळन्नु होंदिदेये?	शुं तमारी बेंकनी गाममां पण शाखाओ छे?	आपनार बैंकेर ग्रामे शाखा आछे?	तुमच्या बँकेत गावात शाखा देखील आहेत का?
हौदु. बैंक मत्ते तन्न शाखेगळन्नु विस्तरिसुत्तिदे.	हा अने बेंक तेनी शाखाओं पण विस्तृत करी रही छे.	हें एबोंग बैंकेउ एर शाखा प्रोसारितो कोरेछे.	होय आणि बँक देखील आपल्या शाखांचा विस्तार करीत आहे.
निम्म शाखेयु ग्राहकर मीटिंग अन्नु नियमितवागि नडेसुत्तिदेये?	शुं तमारी शाखामां नियमितपणे ग्राहकोनी बेठको थाय छे?	आपनार शाखा नियमित ग्राहोक सभा पोरिचालोना कोरे?	तुमच्या शाखेत नियमितपणे ग्राहकांच्या बैठका होतात का?
हौदु नावु ई मीटिंग अन्नु नियमितवागि नडेसुत्तेवे.	हा, अमे आ बेठक नियमितपणे राखीये छीए.	हें, आमरा नियमितो ऐइ सभाटि पोरिचालोना कोरि.	होय, आम्ही या बैठका नियमितपणे घेतो.
निम्म पासबुक अन्नु नावु अपडेट माडिद्देवे.	अमे तमारी पासबुक अपडेट करी दीधी छे.	आमरा आपनार पासबूक आपडेट कोरेछि.	आम्ही आपले पासबुक अद्यतनित केले आहे.

'रंजना दीदी'

कहते हैं, जब कोई व्यक्ति किसी परेशानी या बीमारी से ग्रसित होता है तो अपनी तकलीफ को कम करने के बारे में सोचता रहता है. इस सोच-विचार में उसके मन में कई प्रकार की बातें आती हैं. ऐसा ही कुछ मेरे साथ हुआ. मैंने कुछ लिखने की कल्पना कभी नहीं की, कलम तो सिर्फ पढ़ाई और परीक्षा के लिए ही उठाई थी. पर आज... जब मैं खुद बीमारी से ग्रसित, जहां न मन बैठने का होता है न ही कुछ और करने का, बस! दिमाग में विचारों की उथल-पुथल मची हुई थी. कुछ पुरानी यादें तो कुछ नए अनुभव और कुछ ऐसे लोग जो अकस्मात हमसे टकरा जाते हैं, जिनसे जीवन में दोबारा कभी मुलाक़ात होगी भी या नहीं, यह भी हमें पता नहीं होता. लेकिन, उनकी यादें हमें हर पल उनसे मिलवाती हैं. ऐसे ही मेरी यादों में बसी हैं रंजना दीदी..

हाँ, अभी उनका नाम ही लिखा है और आँख भर आई. क्या रिश्ता था उनका और मेरा? बस, एक सफर का... और वह भी हवाई सफर, जहां लोग अपना समय बचाने के लिए फ्लाइट्स का सहारा लेते हैं ताकि वे अपने गंतव्य स्थान पर जल्दी पहुँच सकें. ऐसे सफर में भी आपको कोई मिल जाए जिसके साथ आपकी यादें जुड़ जाएँ ऐसा कम ही होता है.

बात 06 जुलाई 2019 की है, 04-06 जुलाई तक गांधीनगर में मेरी समीक्षा बैठक थी. ढाई साल के सिद्धार्थ के मेरे जीवन में होने के कारण, अपनी नौकरी और पारिवारिक जिम्मेदारियों के बीच तालमेल बैठाते हुए अपने कर्तव्यों को भलीभाँति निभाना मेरे लिए चुनौती भरा है. लेकिन अपने पति और माता- पिता के सहयोग से मैं सबकुछ कर लेती हूँ. बस इसी सहयोग ने मुझे हिम्मत दी और मैंने गांधीनगर जाने का फैसला किया और अपने आने-जाने के टिकट्स बुक करने लगी. पर.......... इस अफरा-तफरी में मैंने टिकट बुक करते समय फ्लाइट्स की समय-सारणी और टर्मिनल पर ध्यान नहीं दिया.

समस्या तब शुरू हुई जब भोपाल से मुंबई की फ्लाइट के लिए भोपाल एयरपोर्ट पर अपनी बोर्डिंग का इंतज़ार करते हुए मुझे इंडिगो एयरलाइंस से फोन आया कि आपकी मुंबई से अहमदाबाद की फ्लाइट किन्हीं कारणों से रद्द कर दी गई है. क्योंकि समीक्षा बैठक में जाना भी ज़रूरी था पर फिर भी मैंने अपने उच्चाधिकारी को फोन पर सूचना दी कि मुंबई से अहमदाबाद वाली मेरी फ्लाइट रद्द हो गई है. पर मेरे अधिकारी ने मुझे कहा कि मुंबई से अहमदाबाद के लिए कई साधन उपलब्ध हैं इसलिए पहले आप मुंबई पहुँचो. उच्चाधिकारी की बात का मान रखते हुए मैंने मुंबई से अहमदाबाद के लिए दूसरी फ्लाइट ली और अहमदाबाद से गांधीनगर पहुँच गई.

गांधीनगर में समीक्षा बैठक समाप्त होने के बाद अहमदाबाद से मुंबई वापसी की फ्लाइट 06 जुलाई को रात 12:30 बजे थी. पर समस्या क्या थी? अहमदाबाद हवाई अड्डे से फ्लाइट में बैठना और मुंबई हवाई अड्डे पर उतरना मेरी चिंता का कारण नहीं था, बल्कि मेरी चिंता का कारण था... मुंबई से भोपाल पहुँचना. क्यों... क्योंकि अहमदाबाद से मुंबई की फ्लाइट रात को 02 बजे मुंबई के टर्मिनल-I पर उतरनी थी और मेरी दूसरी फ्लाइट मुंबई हवाई अड्डे के टर्मिनल-II से सुबह 06:30 बजे थी.

मैं घबरा गई कि इतनी रात गए मैं टर्मिनल-I से टर्मिनल-II पर कैसे जाऊँगी? एयरपोर्ट प्रबंधन ने भी इस संबंध में आंतरिक मार्ग से जाने के लिए कोई व्यवस्था नहीं की थी. मुझे 06:30 बजे की उड़ान के लिए हर हाल में सुबह 05 बजे तक टर्मिनल-II पर चेक-इन करना ही था लेकिन कैसे? अकेले इतनी रात गए एक जगह से दूसरी जगह जाना वह भी पब्लिक ट्रांसपोर्ट से.... आए दिन महिलाओं/लड़कियों के साथ हो रही अप्रिय घटनाओं की खबरों और हादसों के चलते मेरी हिम्मत जवाब दे रही थी. इसी तनाव में मैंने अपने पति को फोन किया. मैंने उनसे कहा कि मैं 2.00 बजे रात को टर्मिनल-I से II पर कैसे जाऊँगी, मुझे डर लग रहा है.

उन्होंने मुझे समझाया कि मुंबई रात भर चलती है, तुम्हें डरने की ज़रूरत नहीं है. तुम आराम से टर्मिनल-II पहुँच जाओगी. आजकल तो प्री-पेड टैक्सी चलती है जिसमें ग्राहक की पूरी ज़िम्मेदारी कंपनी की होती है. तुम घबराओ मत. पर.. मेरा डर जैसे कुछ सुनने-समझने को राज़ी नहीं था. मैंने अपने पति से गुस्से में कहा कि तुम्हें तो मेरी कोई चिंता नहीं है और फोन काट दिया.

इसके बाद मैंने कॉफी शॉप से एक कप कॉफी ली और एक जगह बैठ कर कॉफी का पहला घूंट ही भरा था कि एक महिला की आवाज़ सुनाई दी. अरे, मुंबई 02 बजे रात को पहुंचेंगे और वहाँ से टर्मिनल-II से हमारी फ्लाइट है सुबह. कैसे जाएंगे? तुमने बुक कराते समय देखा नहीं था क्या? (सामने से फोन पर दूसरा व्यक्ति कुछ बोला) हाँ, पर एयरपोर्ट वालों ने भी मना कर दिया है कि अंदर से नहीं जाने देंगे, आपको बाहर से ही जाना पड़ेगा.

(सामने से फोन पर दूसरा व्यक्ति फिर कुछ बोला) हाँ, रुको, हम फिर से वहाँ बात करके बताते हैं.

मैं बैठ कर यह सब वार्तालाप सुन रही थी. मेरे तो जैसे भाग ही खुल गए. मैं उस महिला को बीच में ही टोकने लगी. लेकिन वे तो फोन पर बात कर रही थी. उन्होंने मुझे रोका.. फिर फोन पर बात समाप्त होने पर उन्होंने कहा, 'हाँ अब बोलिए, क्या कह रहीं थी आप? मैं फोन पर थी इसलिए आपको रोका'. मैंने कहा, 'आपकी भी फ्लाइट टर्मिनल-II से है?' उन्होंने कहा हाँ, आपको भी वहीं जाना है? मैंने कहा, 'हाँ मेरी भी वहीं से है और मैं इसी कश्मकश में थी कि इतनी रात गए वहाँ कैसे जाऊँगी. अगर आपको कोई समस्या नहीं हो तो क्या हम दोनों साथ में वहाँ जा सकते हैं?' पहले तो उन्होंने थोड़ी देर सोचा, फिर कहा, 'ठीक है'. बस! अब हम दोनों बैठ गए अहमदाबाद से मुंबई के लिए.

रात 02 बजे जब हमारी फ्लाइट ने मुंबई में लैंड किया. हम दोनों चल पड़े टर्मिनल-II की तरफ. एक टैक्सी बुक की और तब बातों-बातों में हम दोनों को एक दूसरे का नाम पता चला. 'रंजना' नाम था उनका. मेरे लिए तो एक बड़ी बहन के समान हो गई वे. हालांकि, आज के जमाने में किसी भी अन्जान व्यक्ति पर भरोसा करना... न उनके लिए आसान था न ही मेरे लिए.

टर्मिनल-II पर चेक इन की सभी औपचारिकताएँ पूरी करने के बाद हम दोनों एकसाथ एक जगह बैठ गईं. अपनी-अपनी फ्लाइट का इंतज़ार करते हुए हम लोगों ने काफी समय एक-दूसरे के साथ बिताया. सुबह-सुबह की चाय की चुस्की के साथ, हँसते-हँसते समय कब कट गया पता ही नहीं चला.

बस अब समय आ गया था एक-दूसरे से विदा लेने का. दीदी ने मुझसे व्यक्तिगत रूप से विदा ली थी पर मुझे हमेशा के लिए अपने मन में एक छोटी बहन की तरह बसा लिया था. अपनी फ्लाइट में बैठने के बाद भी दीदी ने मुझे मैसेज किया 'मैं अपनी फ्लाइट में बैठ गई हूँ और तुम?' मैंने जवाब दिया, 'हाँ दीदी, मैं भी.' फिर अपने-अपने स्थान पर पहुँच कर हम दोनों ने सुरक्षित रूप से अपने गंतव्य पर पहुँचने की सूचना एक दूसरे को दी और बस हो गए व्यस्त अपने-अपने जीवन में. लेकिन इस पूरे चक्र में एक बात तो समझ में आ गई कि यह दुनिया बहुत छोटी-सी है.

जब हम एयरपोर्ट पर बैठे बातें कर रहे थे, तब दीदी ने मुझसे पूछा था कि आप अहमदाबाद क्यों आई थीं? मैंने जवाब में कहा कि मैं बैंक ऑफ़ बड़ौदा में काम करती हूँ और एक मीटिंग के लिए गांधीनगर आई हुई थी. तब उन्होंने अवाक् होकर कहा ''अरे! मेरी भतीजी भी बैंक ऑफ़ बड़ौदा में ऑफिसर है और मैं उसी की सगाई में धनबाद जा रही हूँ.'' मैंने कहा-''अरे वाह! हमारी एक दूसरे से कोई पहचान नहीं थी लेकिन बैंक ऑफ़ बड़ौदा के कारण एक रिश्ता बन गया. क्या मैं आपको दीदी कहूँगी तो चलेगा?'' उन्होंने कहा, ''बिलकुल.'' अब मेरी बात रंजना दीदी से होती रहती है. बहुत अच्छा लगता है जब एक अन्जान शहर में भी आपको कोई ऐसा मिल जाए जिससे आपकी भावनाएँ जुड़ जाएँ. वे लोग हमेशा याद रह जाते हैं.

आज के दौर में जब हर इंसान बस आगे बढ़ने की होड़ में अपने रिश्तों की परवाह भी नहीं करता, वहाँ अन्जानों के साथ रिश्ता बन जाना अजीब लगता है. यदि मनुष्य में थोड़ी सी भी इंसानियत और परोपकार की भावना जीवित है तो 'रंजना दीदी' जैसे लोग भी मिल ही जाते हैं. ❑❑❑

– प्रतीका गार्गव साकल्ले
राजभाषा अधिकारी,
क्षेत्रीय कार्यालय, दुर्ग

नराकास बैठकें

नराकास, आणंद

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, आणंद की 8वीं छ:माही बैठक का आयोजन दिनांक 24 अगस्त, 2020 को किया गया. इस बैठक में डॉ. सुस्मिता भट्टाचार्य उपनिदेशक (कार्यान्वयन) राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार भी उपस्थित रहीं.

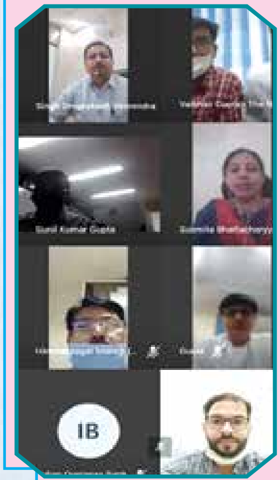

नराकास, हिम्मतनगर

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, हिम्मतनगर की 10वीं छ:माही बैठक दिनांक 7 सितंबर, 2020 को श्री ओ पी वीरेंद्र सिंह, उप क्षेत्रीय प्रमुख, साबरकांठा क्षेत्र की अध्यक्षता में आयोजित की गई.

जीने का हक़!

जाने वो कैसे मुकद्दर की किताब लिख देता है
सांसें गिनती की, ख्वाहिशें बेहिसाब लिख देता है!

सत्तर के दशक में एक फिल्म आई थी, नाम था - हाथी मेरे साथी. जैसा कि नाम से जाहिर है, हाथियों पर आधारित इस कहानी का मूल भाव यही था कि हमें हाथियों से प्यार करना चाहिए. हाथी बस्तियों में रहने का आदी है और हमारा मददगार भी. अनेक मौकों पर यह बात साबित भी हो चुकी है. हाथी सर्कसों में इंसानों के साथ कदमताल करके खुद को साबित करने का दम दिखाता है, तो राजस्थान में हाथी कमाऊ बेटे की भूमिका में नजर आता है. जयपुर में अजमेर के पास बसा 'हाथीगांव' इसकी जीवंत मिसाल है.

भारत में सनातन संस्कृति के नजरिए से भी देखें तो हाथी को गणेश का रूप मानकर हम पूजते आए हैं. केरल ने तो इसे राज्य पशु का दर्जा भी दे रखा है. बावजूद इसके हाथियों के दांत के लिए शिकार और उनकी हत्याएं आम हैं. तकलीफदेह बात यह है कि केरल का ही मल्लापुरम इसके लिए कुख्यात है. दो महीने पहले मल्लापुरम उस समय सुर्खियों में आया जब एक गर्भवती हथिनी को अनानास में विस्फोटक खिलाकर मार डाला गया. हथिनी मरने से पहले तीन दिन तक जल में स्थिर रही. संभव है मंथन कर रही होगी कि आखिर उसकी गलती क्या थी. इस बार तो वह पीठ करके भी नहीं सोई जिससे कि गर्दन कलम की जा सके...या यूं कहें वह मौका आने से पहले ही दरिंदों की नजर लग गई. या फिर...सोच रही होगी कि वह इंसानों की बस्ती में थी अथवा किसी ऐसे भू-लोक पर जहां जानवरों से बद्तर 'जानवर' बसते हैं. हथिनी को प्राकृतिक आपदा आम्फन और निसर्ग आदि भी याद आए होंगे. कोरोना के बारे में भी सोचा होगा. सोचा होगा कि मैं गलत थी जो यह मान रही थी कि शायद इन घटनाओं के बाद मनुष्य 'इंसान' बन जाएगा लेकिन इनके स्वभाव में तो रत्तीभर परिवर्तन नहीं हुआ है.

ये कैसे लोग हैं जो 'हाथी मेरे साथी' की बात तो करते हैं परंतु मौका आने पर उसी हाथी को अनानास में बारूद भरकर हलक में उतारने से भी पीछे नहीं हटते. वेलिन्यार नदी में समाधिवश खड़ी रही हथिनी तो शायद उसी समय या एक दिन बाद प्राण त्याग देती लेकिन उसका दर्द उस मासूम को लेकर था जो गर्भ से अपने होने का अहसास करा रहा था. हो सकता है भीष्म पितामह की तरह उसने भी मौत की घड़ी स्वयं चुनी हो. लेकिन उससे पहले वह यह जान लेना चाहती थी कि उसने तो पांच गांव भी नहीं मांगे थे फिर कौन-सी 'महाभारत' थी कि उसे 'अश्वत्थामा' की आड़ लेकर मौत के घाट उतार दिया गया. हो सकता है तीन दिन वेलिन्यार में इस आस में खड़ी रही कि कोई मगरमच्छ आए और उसे जबड़े में कस खींच ले जाए. त्रिलोकी का 'सुदर्शन' चले तो वह पूछे कि भगवन, मगरमच्छ ने तो स्वभावगत ही किया लेकिन जिन्होंने उसे विस्फोटक अनानास दिया उन पर कब सुदर्शन चक्र चलाएंगे. लेकिन.... लेकिन, तीन दिन बीत गए न तो भगवन ही आए और न ही जानवरों की हक की लड़ाई लड़ने वाले कथित पैरवीकार और न ही 'शक्तिमान' पर हायतौबा करने वाले पशु प्रेमी. 27 मई को हथिनी ने वेलिन्यार नदी में खड़े-खड़े ही दम तोड़ दिया. 30 मई को मन्नारकड के वन अधिकारी मोहन कृष्णन्न ने फेसबुक पर मार्मिक पोस्ट लिखी. 2 जून को खबर मीडिया में आई और संवेदनाएं व्यक्त करते हुए कार्रवाई की मांग की गई.

दरअसल, यह पहली या अंतिम घटना नहीं है. इससे पहले भी हाथियों को मारा जाता रहा है. यहां कुछ बरस पहले की घटना भी मुझे याद आ रही है, जब उत्तराखंड से एक वीडियो सामने आया. पुलिस के घोड़े पर लाठियां चलाई गई जिससे उसकी टांग टूट गई... मामले के तूल पकड़ने पर विदेश से डॉक्टर बुलाए गए, नकली टांग तक लगाई गई लेकिन घोड़े को बचाया नहीं जा सका. एक महीने बाद घोड़े ने दम तोड़ दिया. चार साल बाद इसी तरह की घटना केरल में हुई, जहां एक गर्भवती हथिनी को पटाखों से भरा अनानास खिलाया गया और उसकी मौत हो गई. दरअसल, यह एक गर्भवती हथिनी का सवाल नहीं है. प्रश्न है कि लोग कैसे इतने निर्दयी हो सकते हैं कि बिना वजह किसी जीव को मार डालें. प्रकृति ने सबको जीने का हक दिया है. हमें कोई अधिकार नहीं जानवरों से यह हक छीनने का. कोरोना, आम्फन, निसर्ग और आगे जाने क्या-क्या... प्राकृतिक आपदाएं इस बात का संदेश है... अभी भी वक्त है संभल जाएं और हम अपनी धरती को धरती ही रहने दें और स्वयं के साथ-साथ इसे औरों के रहने लायक भी रहने दें. ❑❑❑

- आकृति चतुर्वेदी
बिजनेस एसोसिएट
लुनावाड़ा शाखा, गोधरा

जूनागढ़

वाराणसी

फैज़ाबाद

मेरठ

गोरखपुर

लुधियाना

कानपुर

करनाल

रायबरेली

चंडीगढ़

सुल्तानपुर

पणजी

पुणे

चेन्नै मेट्रो हुब्बल्ली क्षेत्र-II

कोल्हापुर

उडुपि

जलगाँव

विजयवाड़ा

औरंगाबाद

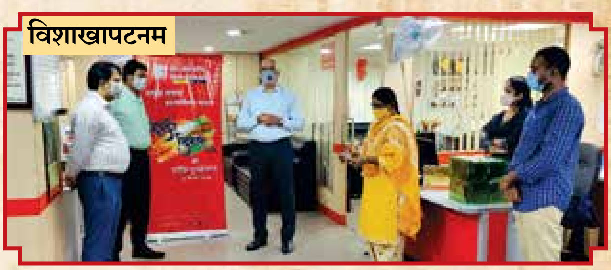
विशाखापटनम

नासिक

तेलंगाना

गुलबर्गा

भोपाल उत्तर

भोपाल दक्षिण

देहरादून

इंदौर

हल्द्वानी

रायपुर

मुरादाबाद

जबलपुर

अलीगढ़

आगरा

शाहजहांपुर

मुंबई मेट्रो, दक्षिण

नवी मुंबई

मुंबई मेट्रो

जामनगर

मुंबई मेट्रो, पूर्व

जमशेदपुर

मुंबई मेट्रो, मध्य

राजकोट

भुज

अहमदाबाद क्षेत्र 2

भावनगर

बर्द्धमान

संबलपुर

सरकारी व्यवसाय विभाग, नई दिल्ली

एक था वाउचर : पेमेंट वाउचर की प्रेम कथा

हम हैं पेमेंट वाउचर. हिंदी में कहें तो भुगतान पर्ची. आज आपको अपनी कहानी सुनाते हैं. प्रिंटिंग प्रेस से निकल कर जब हमारी डिलीवरी बैंक के काउंटर पर हुई तो हम फूले नहीं समा रहे थे. दिल में गज़ब का जोश था. सोच रहे थे कि कुछ कर दिखाएंगे और अपने वाऊचर-कुल का नाम रोशन करेंगे.

अभी हम काउंटर पर पटके ही गए थे कि लोगों का मजमा लग गया हमारे आस-पास. कतई सेलिब्रिटी वाली फीलिंग आ रही थी हमको. हर कोई हमारा एक क़तरा चखने को बेताब.

एक-एक करके हमारे चच्चा, ताऊ सब इस भीड़ के हाथ लग गए और अपने जीवन का लक्ष्य पूरा करने निकल पड़े. पर हम अभी भी मेज़ पर धूल खा रहे थे. तभी किसी ने हाथ बढ़ाया और हमारी धड़कने तेज़!! दिल ने कहा- देखो-देखो, वो आ गया. जो हमें भर कर मोटी रकम उठायेगा और हमारा जीवन सफल बनाएगा.

हम सपने देख ही रहे थे कि उसने हमें वापस पटक दिया.

'क्या फायदा अगर बस पच्चीस हजार निकल सकते हैं इससे! हमको तो 2 लाख निकालना है.'

'तो जाइये, चेक ले कर आइए'. मैडम ने ज़रा रूखे अंदाज़ में कहा था.

बैंक ऑफ बड़ौदा Bank of Baroda
दिनांक / Date
शाखा / Branch
बचत बैंक SAVINGS BANK
खाता सं. / L.F. No.
खाता सं. : Account No.
मुझे Pay Self
रुपये Rupees
अदा करें ₹ Rs.
Div No.
Auth. No.
हस्ताक्षर Signature
नकद अदा करें PAY CASH
खातेदार का नाम Name of the a/c. holder
नामांकन सुविधा उपलब्ध Nomination facility available

अब हमको अपनी इज़्ज़त का अंदाज़ लगने लग गया था. इस करोड़ी दुनिया में हमारी औकात बस एक चवन्नी भर की थी. बस! यही दुआ मना रहे थे कि किसी पढ़े लिखे के हाथ लग जायें और जीवन सफल हो. पर होनी को कौन टाल सकता है?

हमको धर दबोचा एक बूढ़ी अम्मा ने! और मैडम से गुहार लगा दी, 'ए बिटिया! तू ही भर देतु. हमके ना आवत लिखा-पढ़ी.'

हम मन ही मन सपने सजाने लग गए कि मैडम के खूबसूरत हाथ अब हमारी किस्मत की इबारत लिखेंगे. पर ये क्या? मैडम ने तो हमें उठा कर उसी खूसट बुड्ढे के हाथ में थमा दिया जिसने हमें लाकर मेज़ पर पटका था.

'रामदीन, ये अम्मा का वाउचर भर दो. यहाँ बहुत काम है. वैसे भी ये अंगूठा लगाएंगी. हमको वेरीफाई करना है तो हम नहीं भर सकते. ऑडिटर ने क्वेरी रेज की थी पिछली बार.'

हमको तो मानो काटो खून नहीं. एक तो इस बुड्ढे की लिखावट और उसपर अंगूठे से अपनी तशरीफ़ नीली करानी पड़ेगी. क्या इसलिये इतने बढ़िया फॉन्ट में छपाई हुई थी हमारी?

बुड्ढा हमें उठाकर ले चला किसी ओर. हम हवा में यूँ लहरा रहे जैसे शाख से टूटा पत्ता! ले जाकर पटक दिये गए फिर किसी मेज़ पर.

'ए चंदन ! भर इसको. ये नई वाली मैडम अलगे कानून बतिया रही है.'

चंदन सिक्युरिटी गार्ड है लेकिन काम किसी अधिकारी से भी ज़्यादा जानता है. मेज़ पर जब हम अपनी शहादत का इंतज़ार कर रहे थे तब सुना था अफसर मैडम से हमने. अफसर मैडम हाय! बस उन तक पहुँच जाऊं फिर जब वो अपने सुंदर हाथों से मुझ पर अपने हस्ताक्षर करेंगी ना, तब होगा जीवन सफल.

हम सोच ही रहे थे कि हमारे ऊपर टैटू बनना शुरू भी हो गया. चार हज़ार रुपया मात्र. दुलहिन कुमारी... 3 अगस्त 2020. 'लो अम्मा लिख दिए.'

अम्मा हमको उठाकर अपनी किताब में ऐसे बंद कर दी जैसे हम उनका नौलक्खा हार हों. सवारी चल पड़ी फिर. मैडम ने उठाकर निहारा हमें बड़े प्यार से. फिर गुस्से से नाक भी सिकोड़ी. बोली, 'अरे, अँगूठा तो लगाओ अम्मा!'

हम फिर अम्मा के हवाले. रामदीन अम्मा का हाथ पकड़कर उनका अंगूठा हम पर लगवा रहा था; मानो लाखों की ज़ायदाद का कागज़ हों हम. मैडम की नज़रे - इनायत भी बराबर हम पर ही हैं और हम शर्म से लाल हुए जा रहे उनकी कातिल नज़र से.

मैडम ने हमें प्यार से निहारा और अपने कम्प्यूटर के सामने रख कर अपनी मोती से आद्यक्षर (initials) हम पर सजा दिए और फिर उस खूसट को दुबारा आवाज़ लगा दी. वो फिर ले चला हमें किसी ओर! हम भी चल पड़े सरफरोशी की तमन्ना दिल में लेकर. देखा तो अम्मा पीछे-पीछे आ रही आंखों में उम्मीद का टिमटिमाता दीपक लिए.

कैशियर साहब अपनी उम्र के ढलान पर पहुंच चुके थे और उनके चेहरे का भाव कह रहा था कि वो किसी संकट में हैं. उन्होंने तुरंत हमें टरकाते हुए कहा-'सिस्टम नहीं चल रहा. कनेक्टिविटी नहीं है. बाहर से ही एंटर करवाके पास करा लाओ.'

बड़बड़ाते हुए रामदीन फिर मैडम तक ले आया हमें. मैडम ने हम पर बेपरवाह नज़र डाली और पास बैठे चपडगंजू को पकड़ा दिया हमें जो बीच-बीच में उनको कनखियों से निहार रहा था.

बड़ी बेतरतीबी से उसने कुछ लिख कर वापस हमें मैडम तक पहुंचाया और हम फिर सपनों के हिंडोलों में झूलने में मगन. मैडम ने इस बार हमारे अस्तित्व पर अपनी धार खींच दी! और हम बन गए एक लेजिटिमेंट औज़ार.

सवारी फिर उड़ चली कैशियर साहब के केबिन तक. इस बार उन्होंने पहले हमें प्यार भरी नज़र से देखा और फिर मार दी मोहर हमारे ऊपर.

जब उन अम्मा को चार हज़ार गिनते देखा और उनके चेहरे पर आई चमक हम पर पड़ी तो यह एहसास हुआ कि चाहे इस करोड़ी दुनिया में हम चवन्नी राम ही बन पाए, पर कम से कम इस चवन्नी ने किसी के महीने के इंतेज़ार को सुकून में तो बदल दिया आज!

हमारी इसी आत्ममुग्धता के बीच हमें उठाकर एक धारदार हथियार में टांक दिया गया और हम अनारकली की तरह मैडम की मोहब्बत में जाँ निसार कर बैठे. बस यही है हमारी दास्ताँ-ए-मोहब्बत! ❑❑❑

– हर्षिता चतुर्वेदी
व्यवसाय सहयोगी
पणजी, मुख्य शाखा

हिन्दी दिवस समारोह

बड़ौदा जिला

भरूच

हैदराबाद क्षेत्र 1

हैदराबाद क्षेत्र 2

जलंधर

नवसारी

सूरत शहर

सूरत

वलसाड

अपने ज्ञान को परखिए उत्तर: –

1.	ख	6.	ग	11.	ग	16.	घ
2.	घ	7.	क	12.	घ	17.	क
3.	क	8.	घ	13.	ग	18.	ग
4.	ग	9.	ख	14.	ख	19.	ग
5.	घ	10.	क	15.	ग	20.	ख

फिर जिंदगी क्यों उदास है

रात का सन्नाटा है,
डर बहुत सताता है,
पर दिन का उजाला तो याद है,
फिर जिंदगी क्यों उदास है?

तुम रूठे, हम भी रूठे,
नयनों में नीर से डूबे,
पर ख़ुशी के आंसू तो याद है,
फिर जिंदगी क्यों उदास है?

गिले हुए, शिकवे हुए,
दिल के कई बार टुकड़े हुए,
पर प्यार के पल तो याद हैं,
फिर जिंदगी क्यों उदास है?

जिंदगी में तूफ़ान आए,
दिल पर पत्थर भी बरसाए,
पर अपनों का साथ तो याद है,
फिर जिंदगी क्यों उदास है?

– **कुलदीप मैंदीरत्ता**
उप क्षेत्रीय प्रमुख,
दिल्ली महानगर क्षेत्र–2

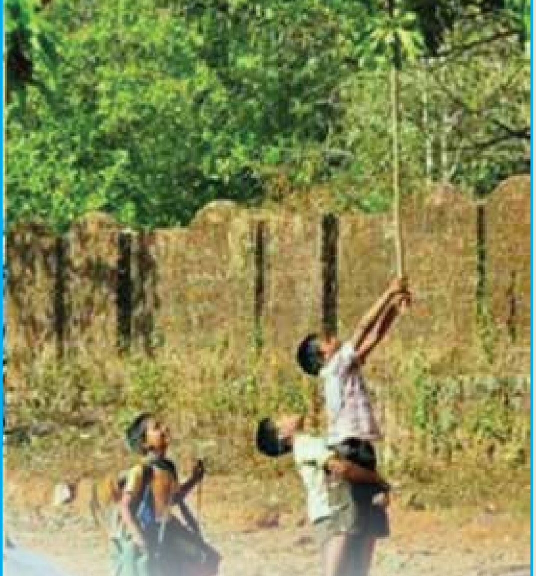

मेरा बचपन

आज फिर लौट जाने को दिल करता है,
गाँव में बागों से आम चुराने को दिल करता है

बेचकर अपना बचपन, खरीद लाया सुनापन,
फिर उन गलियारों में शोर मचाने को दिल करता है

आसमान तन्हा है मेरा, मेरी जिंदगी की तरह,
फिर इसमें पतंग उड़ाने को दिल करता है

ये बेजुबान छत, दिवारें और मेरे अंदर की खामोशी,
आज फिर अम्मा से बतियाने को दिल करता है

इक उम्र हुयी या उम्रदराज हुए, डांटा न किसी ने,
आज फिर बाबूजी से रूठ जाने को दिल करता है

बहुत चुराता था ज़ी, बाबूजी मैं तब आपसे,
आज फिर आपका पाँव दबाने को दिल करता है

– **दीपक कुमार यादव**
प्रबन्धक, अंचल कार्यालय,
लखनऊ

हिन्द देश की हिन्दी

वीर समर्थ की गाथा हिंदी,
वीरों की परिभाषा हिंदी,
हरिवंश की मधुशाला को
निशा निमंत्रण रूप दिया,
शब्दों की उस मिलन–यामिनी की,
एक अनोखी भाषा हिंदी !!

प्रेमचंद की रंगभूमि को,
जिसने ऐसा वरदान दिया,
गोदान–गबन से मानसरोवर,
कायाकल्प की भाषा हिंदी!!

परसुराम की एक प्रतीक्षा,
रश्मिरथी की एक प्रतिज्ञा,
दिनकर की उस नील कुसुम,
अमृत मंथन की गाथा हिंदी!!

पथ के साथी का साथ निभाती,
अग्निरेखा का हाल बताती,
महादेवी को सांध्यगीत के,
गीत सुनाती भाषा हिंदी!!

सदा जीत हो उस हिन्द की,
जिस हिन्द की भाषा हिंदी!!

– **ज्योति ठक्कर**
मुख्य प्रबंधक, बड़ौदा अकादमी
बेंगलूरु

निवेश के विभिन्न विकल्प

निवेश क्या है–

निवेश एक शब्द नहीं है बल्कि जीवन में आर्थिक चुनौतियों से निपटने का एक माध्यम है. निवेश का अर्थ होता है अपने धन को ऐसी जगह लगाना जिससे कि हमें भविष्य में, आज लगाए हुए धन से अधिक धन मिल सके.

अर्थशास्त्र में निवेश उस व्यय को कहते हैं जो उन वस्तुओं/परिसम्पत्तियों को खरीदने के लिए किया जाता है जिनसे घरेलू अर्थव्यस्था में उत्पादन क्षमता में वृद्धि होती है. यह स्थिर परिसम्पत्तियों जैसे प्लांट और मशीनरी पर किया गया व्यय है.

निवेश क्यों किया जाना चाहिए–

बेशक! आज हम 21वीं सदी में आगे बढ़ रहे हैं लेकिन जीवन में चुनौतियां भी बढ़ रही हैं. कमाई के साधन बढ़े हैं, लेकिन जरूरतें भी तेजी से बढ़ रही हैं. इन सभी चुनौतियों से निपटने में एक छोटा-सा निवेश हमारी बहुत बड़ी मदद कर सकता है. उदाहरण के तौर पर, यदि किसी व्यक्ति के पास एक लाख रुपये है और वर्तमान में उसको उस रकम की जरूरत नहीं है तो यदि वह व्यक्ति उस एक लाख रुपये की बैंक में एफडी करता है तो सालाना उसे 5000/- रुपये ब्याज के रूप में प्राप्त होंगे.

यदि कोई व्यक्ति मासिक अथवा वार्षिक आधार पर अपनी कमाई से बचत करने के बाद एक छोटा सा हिस्सा भी निवेश करता है तो यह धनराशि उसके भविष्य को सुरक्षित बनाती है. निवेश करना भविष्य की जरूरतों के लिये आवश्यक है. यदि आप सही समय पर निवेश करना शुरू कर देंगे तो कई लक्ष्यों को पूरा कर सकते हैं जैसे कि बच्चों के लिए अच्छी शिक्षा, अपना स्वयं का मकान या फिर सेवानिवृत्ति के बाद आर्थिक आजादी से भरी जिन्दगी.

निवेश के विभिन्न विकल्प–

अधिकांश भारतीय निवेश के पारंपरिक तरीकों का ही उपयोग करते हैं जैसे कि–

1) बैंक में एफडी करवाना;

2) पीपीएफ में निवेश करना;

3) सोने अथवा सोने से बने आभूषण को खरीदना;

4) बचत बीमा योजनाओं में निवेश;

5) रियल एस्टेट में निवेश.

इसके अतिरिक्त, वर्तमान में निवेश के तरीकों में भी बदलाव हुआ है. अब लोग कुछ जोखिम के साथ अन्य निवेश योजनाओं में निवेश कर रहे हैं, जैसे म्युच्युअल फंड, शेयर बाजार, एनपीएस, आईपीओ, ईटीएफ, बॉन्ड, एनसीडी इत्यादि. किन्तु इन योजनाओं में लगभग एक से दो फीसदी भारतीय ही निवेश करते हैं क्योंकि अधिकांश लोगों को या तो इसकी जानकारी नहीं होती है या वे जोखिम लेना पसंद नहीं करते. लेकिन निवेश एक ऐसा माध्यम है जिसमें जितना ज्यादा जोखिम होगा उतना ही ज्यादा रिटर्न मिलने की भी संभावना होती है.

हर व्यक्ति के वित्तीय लक्ष्य अलग-अलग होते हैं. वित्तीय लक्ष्यों को प्राप्त के लिए निवेश के विकल्प और निवेश करने की क्षमता भी अलग-अलग हो सकती है. कम जोखिम के साथ बेहतरीन रिटर्न नहीं कमाया जा सकता है. वास्तव में, जहाँ रिटर्न अधिक होगा, वहाँ जोखिम भी अधिक होगा. निवेशक अपने निवेश पर ज्यादा रिटर्न चाहते हैं. कई बार निवेशकों को निवेश से जुड़े जोखिम का अंदाजा नहीं होता है कि कैसे जरा-सी असावधानी से उनकी पूंजी डूब सकती है. निवेश के किसी विकल्प को चुनते वक्त आपको जोखिम उठाने की अपनी क्षमता के बारे में जानना-समझना जरूरी है. कुछ निवेश ऐसे हैं जिसमें लंबी अवधि में अधिक जोखिम के साथ ही अधिक रिटर्न मिलने का भी मौका मिलता है.

वास्तव में, निवेश के दो तरीके हैं- वित्तीय और गैर-वित्तीय निवेश.

वित्तीय निवेश में आप शेयर बाजार से संबद्ध विकल्प (शेयर, म्युचुअल फ़ंड) या फ़िक्स्ड रिटर्न (पीपीएफ, बैंक एफडी) आदि के विकल्प चुन सकते हैं. गैर वित्तीय निवेश में सोना, रियल एस्टेट आदि के विकल्प चुन सकते हैं.

- **शेयरों में निवेश :** हर किसी के लिए शेयरों में सीधे निवेश करना आसान नहीं है. इसमें रिटर्न की भी कोई गारंटी नहीं है. सही शेयरों का चुनाव करना एक मुश्किल काम है. इसके साथ ही सही समय पर शेयर की खरीददारी और सटीक वक्त पर शेयर बेचना महत्वपूर्ण है. निवेश के अन्य विकल्पों की तुलना में शेयर में लंबी अवधि में रिटर्न देने की क्षमता सबसे अधिक होती है.

- **इक्विटी म्युचुअल फंड :** म्युचुअल फ़ंड की इस श्रेणी में शेयरों में निवेश से ही रिटर्न कमाया जाता है. सेबी के निर्देशानुसार जिस म्युचुअल फंड स्कीम में फंड का 65% हिस्सा शेयरों में निवेश

किया जाता है वह इक्विटी म्युचुअल फ़ंड कहलाती है. इसमें एक फंड मैनेजर होता है जो पर्याप्त रिसर्च करने के बाद निवेश के अनुरूप शेयर का चुनाव करता है और उसमें निवेश करता है.

• **डेट म्युचुअल फंड :** म्युचुअल फ़ंड की यह श्रेणी उन निवेशकों के लिए सही है जो निवेश से गारंटिड रिटर्न कमाना चाहते हैं. ये म्युचुअल फ़ंड कारपोरेट बॉण्ड, सरकारी सिक्योरिटीज, ट्रेज़री बिल्स आदि में निवेश करते हैं. इसमें रिटर्न कम मिलता है लेकिन जोखिम की संभावना भी कम हो जाती है.

• **नेशनल पेंशन स्कीम :** नेशनल पेंशन स्कीम का प्रदर्शन पिछले कुछ सालों में अच्छा रहा है. बहुत कम फीस स्ट्रक्चर भी इस निवेश को आकर्षक विकल्प बनाता है. बाजार से जुड़े उत्पादों में यह देश में सबसे कम खर्च वाला प्रॉडक्ट है. निकासी संबंधी नियमों में बदलाव और अतिरिक्त टैक्स-छूट की वजह से भी यह निवेशकों की पसंद में शामिल हो गया है.

• **पीपीएफ :** देश में निवेशकों के बीच पीपीएफ सर्वाधिक लोकप्रिय बचत योजनाओं में से एक है. इनकम टैक्स कानून के सेक्शन 80सी के तहत किसी एक वित्तीय वर्ष में आप पीपीएफ में 1.5 लाख रुपये के निवेश पर टैक्स छूट प्राप्त कर सकते हैं. निवेश के इस विकल्प की सबसे अच्छी बात यह है कि यह आपको निवेश के वक्त कर-मुक्त ब्याज पर कर-मुक्त निवेश भुनाने पर कर-मुक्त लाभ देता है, मतलब रिटर्न के साथ-साथ आपको टैक्स में भी फायदा देता है.

• **बैंक एफडी :** बैंक या पोस्ट ऑफिस में कराई जाने वाली टैक्स सेविंग एफडी से आप निवेश के वक्त सेक्शन 80सी के तहत टैक्स बचा सकते है. यह निवेश का सुरक्षित और गारंटिड रिटर्न वाला विकल्प है. इस पर मिलने वाले ब्याज पर आपको इनकम टैक्स स्लैब के हिसाब से टैक्स चुकाना पड़ता है. डिपॉज़िट इंश्योरेंस एंड क्रेडिट गारंटी कॉर्पोरेशन के हिसाब से आपकी 5 लाख रुपये तक की जमा राशि बीमित है.

• **सीनियर सिटीजन सेविंग स्कीम :** 60 साल से अधिक उम्र के लोगों के लिए निवेश का यह एक अच्छा विकल्प है. पहले इस पर 8.6 फीसदी सालाना ब्याज मिलता था जिसे सरकार ने बदल कर 7.4 फीसदी कर दिया है. सेवानिवृत्त लोगों के लिए यह आय का नियमित स्रोत भी है. इसकी अवधि पाँच साल की है जिसे तीन साल के लिए आगे बढ़ाया जा सकता है. विशेषज्ञों के अनुसार जीवन भर की बचत को रखने और उस पर कमाई के हिसाब से यह एक बेहतरीन स्कीम है.

• **रिज़र्व बैंक के टैक्सेबल बॉण्ड :** पहले इस स्कीम में 8 फीसदी सालाना ब्याज मिलता था जिसे सरकार ने बदल कर अब 7.75 फीसदी कर दिया है. इस बॉण्ड में पाँच साल के लिए निवेश किया जाता है.

• **रियल एस्टेट :** घर खरीदना अब निवेश के हिसाब से भी आकर्षक विकल्प बनकर उभरा है. अगर आपको उस घर में रहने की जरूरत नहीं है तो आप निवेश के हिसाब से भी दूसरा घर खरीद सकते है. निवेश के इस विकल्प में आपको प्रॉपर्टी की लोकेशन और वहाँ मौजूद सुविधाओं का ध्यान रखने की जरूरत है. इसमें निवेश से आप पूंजी में इजाफा और किराए से आमदनी, दो तरीके से रिटर्न कमा सकते हैं.

• **सोना :** निवेश का यह विकल्प सदियों से भारतीयों की पसंद में शामिल है. पहनने के लिए खरीदे जाने वाले आभूषण हों या निवेश के लिए खरीदे गए सिक्के; बिना किसी संदेह के सोना भारतीयों की पसंद में सबसे ऊपर है. अब आप पेपर गोल्ड के रूप में भी सोने में निवेश कर सकते हैं. सोवरेन गोल्ड बॉण्ड स्कीम में भी निवेश करना एक बेहतर विकल्प है जिसमें आपको 8 साल के लिए निवेश करना होता है और निवेश की राशि पर हर साल 2.5 फीसदी ब्याज भी मिलता है.

• **सुकन्या समृद्धि योजना :** लंबी अवधि की इस स्कीम का उद्देश्य बेटी की पढ़ाई और शादी के वक्त वित्तीय मदद उपलब्ध कराना है. किसी बैंक या पोस्ट ऑफिस में इस स्कीम के तहत सिर्फ 10 साल से कम उम्र की बच्ची के लिए खाता खोला जा सकता है जिसमें आप सालाना अधिकतम 1.5 लाख रुपये जमा करा सकते हैं. इसमें आपको रिटर्न के साथ-साथ टैक्स में भी छूट मिलती है. बिना जोखिम के अच्छे निवेश का यह एक बेहतरीन विकल्प है.

बाजार में निवेश के बहुत सारे विकल्प उपलब्ध हैं लेकिन आपको अपनी वित्तीय/आर्थिक स्थिति और जोखिम लेने की क्षमता के अनुसार निवेश का विकल्प चुनना होगा. किसी भी भ्रामक विज्ञापन या फिर किसी के बहकावे में आकर आप यदि कहीं पर भी बिना सोचे समझे निवेश करेंगे तो आपका पैसा डूबने की संभावना बढ़ जाएगी. अतः आप अपना पैसा सोच-समझकर ही निवेश करें जिससे आपको भविष्य में किसी भी प्रकार का आर्थिक नुकसान न हो.

आपका पैसा, आपका फैसला

– भवानी शंकर पालीवाल
शाखा प्रमुख, चारपडा शाखा, जूनागढ़ क्षेत्र

पुरस्कार एवं सम्मान

क्षेत्रीय कार्यालय ग्रामीण, बेंगलूरू को बैंक नराकास, बैंगलूरू द्वारा पुरस्कार

बैंक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, बैंगलूरू द्वारा वर्ष 2019-20 के लिए क्षेत्रीय कार्यालय ग्रामीण, बेंगलूरू को पुरस्कार प्रदान किया गया. क्षेत्रीय प्रमुख श्री रवि एस द्वारा मुख्य प्रबंधक राजभाषा श्रीमती के. वी. लक्ष्मीदेवी को प्रमाणपत्र प्रदान किया गया.

उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन के लिए प्रथम पुरस्कार

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, गुलबर्गा की ओर से क्षेत्रीय कार्यालय, गुलबर्गा को उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन के लिए प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ. पुरस्कार ग्रहण करते हुए राजभाषा अधिकारी एवं कार्यालय के स्टाफ सदस्य

राजभाषा में श्रेष्ठ कार्य के लिए तृतीय पुरस्कार

नगर राजभाषा कार्यांवयन समिति, करनाल की छ:माही समीक्षा बैठक दिनांक 4 अगस्त, 2020 को आयोजित की गई. इस बैठक में क्षेत्रीय कार्यालय, करनाल को नगर राजभाषा कार्यांवयन समिति, करनाल से वित्तीय वर्ष 2019-2020 में राजभाषा में श्रेष्ठ कार्य के लिए तृतीय पुरस्कार प्राप्त हुआ.

नराकास बैठकें

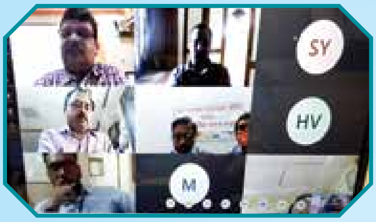

नराकास, बालोद

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, बालोद, दुर्ग क्षेत्र की बारहवीं छ:माही बैठक का आयोजन दिनांक 30 जुलाई, 2020 को श्री बी.एस. सोनक की अध्यक्षता में किया गया.

नराकास, गरियाबंद

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति गरियाबंद, दुर्ग क्षेत्र की चौथी छ: माही बैठक का आयोजन दिनांक 28 अगस्त, 2020 को श्री राजीव रंजन की अध्यक्षता में किया गया.

नराकास, मंझनपुर (कौशांबी)

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, मंझनपुर, कौशांबी की छ:माही बैठक का आयोजन दिनांक 14 अगस्त, 2020 को श्री अतुल कुमार खरे की अध्यक्षता में किया गया.

नराकास, धमतरी

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, धमतरी, दुर्ग क्षेत्र की बारहवीं छ:माही बैठक का आयोजन दिनांक 29 जुलाई, 2020 को श्री प्रबीर कुमार रॉय की अध्यक्षता में किया गया.

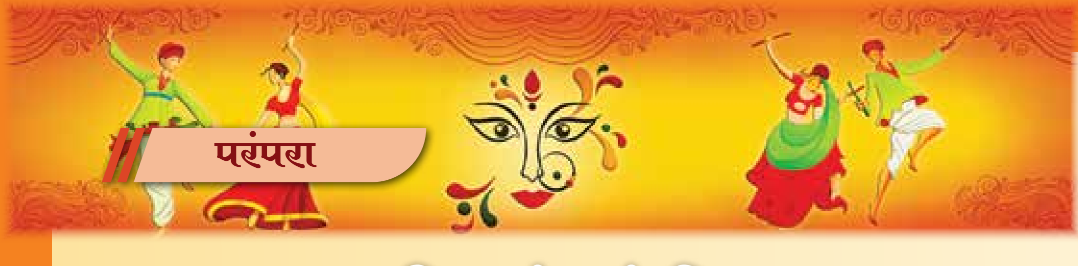

नवरात्रि एवं पारंपरिक गरबा

'गरबा' शब्द सुनते ही गुजरात की नवरात्रि याद आ जाती है, जो पूरे विश्व में प्रचलित है. गरबा गुजरात की पहचान है. गुजरात में नवरात्रि के दिनों में गरबा की धूम रहती है. इस दौरान बेहद उत्साह से भरे युवा लड़के व लड़कियां रंग-बिरंगे कपड़े पहनते हैं और गरबा में भाग लेते हैं. परिधान की बात करें तो लड़कियां चनिया-चोली और लड़के केडियु पहनते हैं, जो गुजरात का प्रारंपरिक पहनावा भी है. गुजरात में मातृशक्ति का प्रतीक मानकर नवरात्रों में अनेक छिद्रों वाले मिट्टी के कलश में दीपक पूजा होती है. नवरात्रि की पहली रात्रि को देवी के निकट छोटे-बड़े छिद्रवाले घट जिसे 'गरबा' कहा जाता है, एक-दूसरे पर रखे जाते थे. ऊपर वाले घट में मिट्टी का दीपक रखकर उसमें चार ज्योति जलाकर इस दिए को अखंड जलाया जाता था तथा दीपक के चारों ओर नृत्य के फेरे लगाए जाते थे. इसीलिए इस घट के आस-पास धूम कर किया जानेवाला नृत्य भी गरबा कहलाया. गरबा के समय दो प्रकार के लोकनृत्य होते थे-पुरुषों द्वारा गोलाकार खड़े होकर समूहगीत गाते हुए और तालियाँ बजाते हुए. सादे पदन्यासों से किए नृत्य को गरबी व स्त्रियों द्वारा नाजुकता से किए गए नृत्य को गरबा कहते थे. ऐसे समय वीर रस का निर्माण करने वाले नगाड़ा, शहनाई जैसे वाद्यों का प्रयोग किया जाता था. कुछ दिनों उपरांत कृष्णलीला, संतरचित पद, ऋतुवर्णन अथवा सामाजिक विषयों पर आधारित गीत-रचना पर नृत्य होने लगे. तालियों और चुटकियों की अपेक्षा खंजीर, मंजीर, दीप इत्यादि का उपयोग नृत्य के समय किया जाने लगा.

अगर गरबा शब्द के अर्थ की बात करें तो यह शब्द संस्कृत भाषा से लिया गया है, जिसमें गर्भ + द्वीप का मतलब है-गर्भ में रखा हुआ दिया. गुजरात की संस्कृति में इसका बहुत महत्व है, क्योंकि जब किसी घर में पहला पुत्र जन्म लेता है, तो उसके नाम पर नौ दिनों तक 9 अलग-अलग देवियों की पूजा की जाती है. पहले जिस घर में कोई पुत्र जन्म लेता है, तो उस साल गुजराती पंचांग को आसो महीने के सुद यानि कि शुक्ल पक्ष की तिथि 1 (एकम) से लेकर 9 (नोम) यानि 9 दिनों तक देवी की आराधना नृत्य के रूप में करते हैं, जिसमें घर की महिलाएं अपना सांस्कृतिक पहनावा पहनकर एक मिट्टी के मटके जैसे बर्तन, जिसमें छोटे-छोटे छेद होते हैं, उसमें मिट्टी का दीपक रखती हैं. मिट्टी के दीपक को शुद्ध घी से प्रज्वलित किया जाता है. इस दीपक वाले मिट्टी के मटके को गुजरात में गरबा कहते हैं और इस गरबे को महिलाएं अपने सिर के ऊपर रख कर देवी की प्रतिमा के आसपास गोल-गोल नृत्य करती हैं. नृत्य शाम को सूर्यास्त के बाद किया जाता है, जिसकी शुरूआत देवी की आरती उतारकर की जाती है. 9 दिनों तक 9 अलग-अलग देवी की पूजा-आराधना की जाती है. उसमें माँ अम्बाजी मुख्य हैं. गुजरात के लोग मानते हैं कि 9 माताओं की आराधना करने से भिन्न-भिन्न फल प्राप्त होते हैं. इन नौ देवियों के नाम इस प्रकार हैं-शैलपुत्री, ब्रह्मचारिणी, चन्द्रघंटा, कुष्मांडा, स्कंदमाता, कात्यायनी, कालरात्रि, महागौरी, सिद्धिदात्री.

नवरात्रि का त्यौहार नौ दिन और नौ रात्रि का होता है, जिसमें माँ दुर्गा की राक्षस निहित महिसासुर के साथ हुई लड़ाई और अंत में विजय की कथा निहित है. माँ दुर्गा ने नवमी की रात्रि को महिसासुर का वध किया था, इसलिए उन्हें महिषासुरमर्दिनी भी कहा जाता है. दुर्गाष्टमी के दिन देवी के अनेक अनुष्ठान करने का महत्व है, इसीलिए इसे महाष्टमी भी कहते हैं. अष्टमी तिथि पूर्ण होकर नवमी तिथि के आरंभ होने तक बीच में देवी शक्ति धारण करती है. इसीलिए इस समय श्री दुर्गाजी के 'चामुंडा' रूप का विशेष पूजन करते हैं, जिसे शक्तिपूजन कहा जाता है.

बंगाल में अष्टमी के दिन देवी का षोडशोपचार पूजन किया जाता है. इस पूजन में माता को कमल के 108 फूल अर्पित किए जाते हैं. कहते हैं कि इस पूजन में सोलह प्रकार के व्यंजन बनाकर देवीमाँ को 'षोडश भोग' भी चढ़ाया जाता है.

महाराष्ट्र में अनेक स्थानों पर अष्टमी के दिन देवी का विशेष पूजन होता है. इसमें चावल के आटे की सहायता से देवी का विशेष पूजन होता है. इसमें चावल के आटे की सहायता से देवी का मुखौटा बनाते हैं और मुखौटेवाली देवी को खड़ी मुद्रा में स्थापित कर उनका पूजन किया जाता है.

नवरात्रोत्सव मनाना, अर्थात् आदिशक्ति के मारक रूप की आराधना करना. अष्टमी पर ब्रह्मांड में आने वाली श्री दुर्गादेवी को मारक तरंगों में तांबिया (reddish) रंग की तेज तरंगों की अधिकता होती है. ये तेज तरंगे अधिकांशतः वायु एवं आकाश

तत्त्वों से संबंधित होती हैं. इसलिए इस दिन देवी को चावल के आटे से बने मुखौटे सहित लाल साड़ी में खड़ी मुद्रा में स्थापित करते हैं. चावल सर्वसमावेशक है अर्थात् चावल में देवता के सगुण एवं निर्गुण दोनों प्रकार की तरंगों को समान मात्रा में आकृष्ट करने की क्षमता होती है.

नवरात्रि की अष्टमी पर रात्रि में श्री महालक्ष्मी देवी के सामने गागर फूंकी जाती है. गागर फूंकने से पूर्व उसका भी पूजन करते हैं और गागर को धूप फूंकते हैं. यह धार्मिक नृत्य का एक प्रकार है.

जगत का पालन करने वाली जगतपालिनी जगदोद्धारिणी माँ शक्ति की उपासना हिंदू धर्म में वर्ष में दो बार नवरात्रि के रूप में, विशेष रूप से की जाती है, 1. वासंतिक नवरात्रि, 2. शारदीय नवरात्रि. दोनों ही नवरात्रि में नौ दिनों में अधिकांश उपासक उपवास करते हैं. किसी कारण नौ दिन उपवास करना संभव न हो, तो प्रथम दिन एवं अष्टमी के दिन उपवास अवश्य करते हैं.

नवरात्रि के उत्सव का विकृतिकरण हो रहा है. अधिकांश लोग उत्सव मनाने के धार्मिक, आध्यात्मिक व सामाजिक कारण को भूलकर केवल मौजमस्ती की दृष्टि से नवरात्रि को देखते हैं. इसका उत्तम उदाहरण है नवरात्रोत्सव की तैयारी देखने के लिए समाचार-पत्रों पर नजर डालते ही दिखाई देने वाले गरबा नृत्य के 'कलसिस' के विज्ञापन तथा ध्वनिप्रदूषण के संदर्भ में न्यायालय द्वारा दिए गए आदेशों पर चल रहे विवादों के सचित्र समाचार. और तो और इनमें विशेषतापूर्ण बात यह होती है कि जिस देवी की कृपा सम्पादन करने के लिए यह उत्सव मनाया जाता है, उस देवी माँ का उल्लेख तक इनमें नहीं आता. नवरात्रि में भी अनेक अनाचारों का सामना करना पड़ता है.

अत: आज नवरात्रि के मूल भाव को अपनाकर जगत कल्याण के उद्देश से कार्य करें तो इस पावन पर्व के उत्सव को मनाना ज्यादा सार्थक साबित होगा.

'नवदुर्गा के उत्सव में सात्विकता बढ़ाएँ,
गरबा के बहाने होने वाले दोष को टालें.
नवरात्रि उत्सव का शास्त्र जान लें,
शक्ति की उपासना से राष्ट्र एवं धर्म की उन्नति साधे'.

– विनीता खंडवी
प्रबंधक
क्षेत्रीय कार्यालय-2, अहमदाबाद

विभिन्न आयोजन

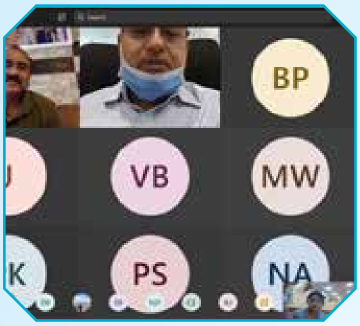

वेब संगोष्ठी का आयोजन

अंचल कार्यालय, चंडीगढ़ व बड़ौदा अकादमी, चंडीगढ़ द्वारा दिनांक 05 अगस्त 2020 को 'कोरोना के विश्वव्यापी भय के बीच 'जीवन में सकारात्मक रहना कितना ज़रूरी है' विषय पर वेब संगोष्ठी का आयोजन किया गया. इस कार्यक्रम में, विशिष्ट अतिथि के तौर पर प्रख्यात लेखक व प्रेरक वक्ता श्री हरवंश दुआ को आमंत्रित किया गया. इस कार्यक्रम में, प्रधान कार्यालय की ओर से सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा एवं संसदीय समिति) श्री पुनीत कुमार मिश्र भी जुड़े.

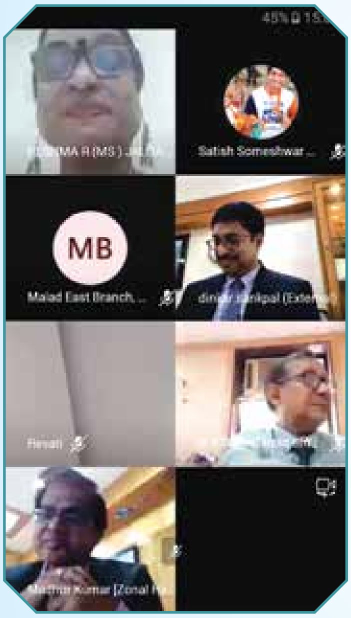

'स्थानीय भाषा को बनाएं ग्राहक सेवा एवं कारोबार की भाषा' विषय पर मराठी में वेबिनार

अंचल कार्यालय मुंबई एवं क्षेत्राधीन क्षेत्रीय कार्यालयों द्वारा दिनांक 19 अगस्त, 2020 को फ्रंट डेस्क के स्टाफ सदस्यों के लिए स्थानीय भाषा को बनाएं ग्राहक सेवा एवं कारोबार की भाषा विषय पर मराठी में वेबिनार आयोजित किया गया. अंचल प्रमुख श्री मधुर कुमार एवं उप अंचल प्रमुख श्री पी के राउत के मार्गदर्शन के साथ कार्यक्रम की शुरुआत हुई. वेबिनार के अतिथि वक्ता श्री दिनकर संकपाल, उप महाप्रबंधक, बैंक ऑफ़ महाराष्ट्र रहे.

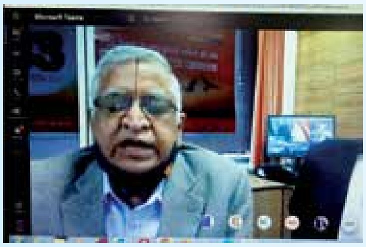

वेब-गोष्ठी का आयोजन

चेन्नै अंचल के सभी क्षेत्रीय कार्यालय द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित तमिल भाषा में वेब-गोष्ठी दिनांक 18.08.2020 को चेन्नै अंचल के मार्गदर्शन में, अंचलाधीन सभी क्षेत्रीय कार्यालयों द्वारा संयुक्त रूप से स्टाफ सदस्यों के लिए क्षेत्रीय भाषा तमिल में एक वेब-गोष्ठी का आयोजन किया गया.

बदलती शिक्षण व्यवस्था

भारत में बदलती शिक्षण व्यवस्था को विभिन्न रूप से देखने की आवश्यकता है. हमारे देश में एक से एक विद्वानों ने जन्म लिया है. जिन्होंने अपनी विद्वता से हमारे देश का नाम रोशन किया है. इन विद्वानों पर चर्चा करना मतलब सूर्य को दिया दिखाने के समान है. भारत ही एक ऐसा देश है जिसने समय-समय पर विश्व को अपनी विद्वता का परिचय कराया है. परन्तु हमारे देश में ही शिक्षण व्यवस्था पर बार-बार नवीनतम प्रयोग किये जाते रहने से और प्रारंभिक शिक्षा से उच्चतर शिक्षा में क्रमवार आती कमियों से शिक्षण व्यवस्था पर चर्चा करना वास्तव में जटिल और चुनौतिपूर्ण कार्य है.

हम ऐसा कहें कि भारत में बदलती शिक्षण व्यवस्था पर चर्चा करने का मतलब प्राचीन शिक्षण व्यवस्था से लेकर वर्तमान शिक्षण व्यवस्था तक पर प्रकाश डालने की जरूरत है. प्राचीन काल में गुरूकुल व्यवस्था से लेकर वर्तमान के अंग्रेजी माध्यम एवं सह शिक्षा व्यवस्था तक को थोड़े में ही समेट लेना अपने आप में मुश्किल कार्य है. आज के नौनिहाल बच्चे कल के भविष्य हैं, जो राष्ट्र के निर्माता हैं. आज की शिक्षण व्यवस्था में व्यापक सुधार शिक्षकों की अपनी जिम्मेवारी के प्रति समर्पण, ईमानदारी और आत्मबल से लवरेज होना अति आवश्यक है. साथ ही अभिभावकों को सामाजिक दायित्य का निर्वाह करना लाजमी है. बदलती शिक्षण व्यवस्था पर हम विभिन्न चरणों में चर्चा करते हैं की आज की शिक्षण व्यवस्था समाज को कहाँ तक प्रभावित करती है.

निम्नलिखित चरणों में हम बदलती शिक्षण व्यवस्था का विभिन्न रूप देख पाएंगे :-

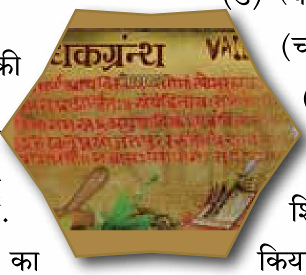

1) **शिक्षण व्यवस्था - प्राचीनतम :-** शिक्षा की शुरूआत ईसा पूर्व संत महात्माओं एवम् उपदेशकों द्वारा पारिवारिक, सामाजिक एवम् धार्मिक मुद्दों पर उपदेश दिए जाने के रूप में हुई. शिष्यगण उन्हें सिर्फ सुनकर ही उनके निर्देशों का पालन करते थे या फिर उस ज्ञान को अपने जीवन में अपनाते थे. बाद में ताम्रपत्र या वृक्ष के पत्तों पर लिखने की कला को विकसित किया गया. ज्ञान देनेवाले भिक्षाटन पर अपना जीवन यापन करते थे.

2) **शिक्षण व्यवस्था - गुरूकुल काल :-** धीरे-धीरे राजा-महाराजाओं का समय आने लगा. इस प्रकार के घरानों एवं अन्य सम्पन्न परिवारों द्वारा अपने बच्चों को शिक्षा देने हेतु अलग व्यवस्था की शुरूआत की गई. उन परिवारों के बच्चों को गुरूओं के पास भेजे जाने की व्यवस्था शुरू हुई. गुरू अपने शिष्यों को अपने साथ रखकर उन्हें शिक्षा देते थे तथा प्रशिक्षित करते थे. उन दिनों बहुत सारे शिष्यों पर एक ही गुरू हुआ करते थे. गुरू अपने शिष्यों को साथ रखकर पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक एवं युद्ध कला का ज्ञान देते थे. बदले में शिष्यों के परिवार से समय-समय पर गुरू दक्षिणा ली जाती थी. गुरूकुल की सारी व्यवस्था वेदों पर निर्भर थी. ब्रह्मचर्य, स्वअनुशासन एवं स्वनियंत्रण पर आधारित शिक्षा दी जाती थी. गुरूकुल शिक्षण व्यवस्था में निम्नलिखित बातों पर जोर दिया जाता था :-

(क) आयुर्वेदिक चिकित्सा
(ख) तर्क शास्त्र
(ग) प्रकृति के नियम
(घ) व्याकरण के नियम
(ड) त्याग की भावना
(च) विज्ञान संबंधी ज्ञान
(छ) पेशा/आर्थिक आवश्यकता ज्ञान

3) **शिक्षण व्यवस्था - मुगलकाल :-** मुगलकालीन शिक्षण व्यवस्था में भाषायी लिपियों को विकसित किया गया. धर्म के आधार पर शिक्षा को नहीं बांटा गया था. हिन्दु भी उर्दू और फारसी की पढ़ाई करते थे.

मुसलमान भी हिन्दी, संस्कृत और पाली भाषा की पढ़ाई करते थे. मुगलों द्वारा भारत में राज्य स्थापित करने के साथ-साथ मदरसों को स्थापित किया जाने लगा. वहाँ उर्दू के माध्यम से विषय पढ़ाये जाने लगे. उस समय विज्ञान नहीं पढ़ाया जाता था. अच्छे पुस्तकालयों एवं मकतबों की व्यवस्था की गई थी. भाषा से संबंधित संगठनों का गठन किया गया था. उच्च शिक्षा प्राप्त करने वालों को प्रशासनिक सेवा एवं न्यायिक सेवा में शामिल किया जाता था.

4. **शिक्षण व्यवस्था - मध्यकाल :-** मध्यकालीन भारत में शिक्षा को नये रूप में लिया जाने लगा. मुसलमानों ने प्रारंभिक एवं माध्यमिक विद्यालयों को स्थापित किया. जिससे शिक्षा की गति तेज हुई. आगे चलकर दिल्ली, लखनऊ, इलाहाबाद विश्वविद्यालय को स्थापित किया गया. नालंदा, तक्षशिला, उज्जैन एवं विक्रमशीला विश्वविद्यालयों की मदद से खगोलशास्त्र, ज्योतिषशास्त्र, दर्शनशास्त्र, कला, पेंटिंग, बौद्ध धर्म, हिन्दुत्व, अर्थशास्त्र, कानून एवं चिकित्सा शास्त्र को नये आयाम दिये गये. उस समय विदेशी शिष्यों का जमघट लगा रहता था. इन विश्वविद्यालयों में हिन्दू-मुस्लिम सबको शिक्षा दी जाती थी.

5) **शिक्षण व्यवस्था - अंग्रेजों द्वारा :-** अंग्रेजों ने भारत में आधुनिक शिक्षण व्यवस्था को जन्म दिया जिसमें हिन्दी, उर्दू, अरबी, पारसी भाषाओं की शिक्षा दी गई लेकिन अंग्रेजी शिक्षा पर बहुत जोर दिया गया. मैकाले जिसने भारत में अंग्रेजी शिक्षा का प्रसार किया था, उसकी सोच थी कि भारतीय सिर्फ रंग से भारतीय रहे जबकि पसंद, विचार, नैतिकता, बुद्धि क्षमता में वह अंग्रेजों के समान हो जायें. इसके लिए अंग्रेजों ने बहुत से कठोर कदम उठाये.

6) **शिक्षण व्यवस्था - स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद :-** इस समय शिक्षा राज्यों की जिम्मेवारी के साथ-साथ केन्द्र सरकार की जवाबदेही भी थी. उच्च शिक्षा एवं तकनीकी शिक्षा लागू की गई. इसके लिए केन्द्र सरकार मापदण्ड तय करता था एवं राज्य सरकार उसको लागू करता था. शिक्षा को बेहतरीन प्रचार-प्रसार के लिये चार विभिन्न समूहों में बाँटा गया.

(क) प्रारंभिक शिक्षा (ख) माध्यमिक शिक्षा

(ग) उच्च शिक्षा (घ) तकनीकी शिक्षा

उन दिनों शिक्षा नीति के विभिन्न आयाम लागू किये गये थे.

(क) 14 वर्ष से कम उम्र के बच्चों को बेहतर प्रारंभिक शिक्षा देना.

(ख) शिक्षकों को बेहतर प्रशिक्षण देना तथा उन्हें योग्य बनाना.

(ग) माध्यमिक विद्यालयों में तीन भाषा फर्मूला लागू करवाना जिसमें राज्य भाषा, अंग्रेजी भाषा एवं क्षेत्रीय भाषा में शिक्षा की व्यवस्था की गई.

(घ) संस्कृत शिक्षा का प्रसार करना.

द्वितीय राष्ट्रीय शिक्षा के जन्मदाता तत्कालीन प्रधानमंत्री स्व. राजीव गांधी थे. इसे 1986 में लागू किया गया था. जवाहर नवोदय विद्यालय, इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय स्थापित किये गये.

7) **वर्तमान शिक्षण व्यवस्था - आधुनिक :-** वर्तमान शिक्षण व्यवस्था का मतलब है स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद स्वदेशी सरकार के शासनकाल में शिक्षा के तौर-तरीके. अंग्रेजों के शासनकाल में हमारे देश की शिक्षण व्यवस्था पूर्णतः अंग्रेजों की रूचि पर आधारित थी. प्रतिभा का उदय नहीं हो पाया. अंग्रेजों की यह नीति थी कि भारत में प्रतिभा का विकास न हो. भारत के आजाद होने के बाद यहाँ उसी पुरानी घिसी-पिटी पद्धति से पठन-पाठन किया जाता था. आज की शिक्षा प्रणाली सिर्फ उपाधि हासिल करने के लिए है. इसका व्यवहारिक शिक्षा से या व्यवहारिक जीवन से कोई रिश्ता नहीं. आज डिग्रीधारक धूल फांकने के लिए विवश हैं. जबसे अंग्रेज़ भारत आए भारतीयों के साथ उन्हें विचारों के आदान-प्रदान के लिए भाषा माध्यम की आवश्यकता थी इसी पर आधारित उनकी शिक्षा प्रणाली थी. उस काल में भारतीय कला और संस्कृति से संबंधित विषयों के महत्व को कम किया जाने लगा और विद्यार्थियों में पाश्चात्य सभ्यता के प्रति विशेष आदर भाव पैदा करने का कुचक्र रचा जाने लगा.

भारतीय मनिषियों ने शिक्षा का उद्देश्य मनुष्य को मनुष्य और पुनः देवता बनाना कहा है. शिक्षा हमारे जीवन में आत्म गौरव, स्वालम्बन और परोपकार एवं कर्त्तव्यपालन की क्षमता आदि गुणों को जगाती है. वर्तमान शिक्षण व्यवस्था में भी कुछ कमियाँ हैं. आज सर्वत्र विद्यार्थियों में अनुशासनहीनता, ज्ञान शून्यता का, और फैशन का बोलबाला है. प्रारंभिक शिक्षा के विद्यार्थियों पर बस्ते का बोझ कम करने की दिशा में सरकार ने बच्चों के कॉपी-किताब कक्षा में ही रखने के दिशा-निर्देश विद्यालयों को जारी किए. साथ ही विद्यार्थियों को गृह-कार्य को कक्षा में ही कराने की सलाह दी है. समाज के सभी बच्चों को शिक्षा उपलब्ध हो इसके लिए भारतीय संविधान में शिक्षा का अधिकार के तहत नियमों को रूपांतरित किया गया.

वर्तमान शिक्षण व्यवस्था डॉक्टर, इंजीनियर, राजनेता आदि तो बनाती है लेकिन इंसान नहीं बना पाती है. वर्तमान शिक्षण व्यवस्था में परिवर्तन की आवश्यकता है. शिक्षा सृजनात्मक होनी चाहिए जहाँ से छात्रों को निकलकर नौकरी ढूढ़नी न पड़े जो स्वयं नौकरी का सृजन कर सके. शिक्षण व्यवस्था ऐसी होनी चाहिए जिसमें व्यक्ति में समाज-सेवा, राष्ट्र प्रेम एवं त्याग की भावना कूट-कूट कर भरी जाए और जो सम्पूर्ण मानवता को सीख देकर 'सा विद्या या विमुक्तये' की उक्ति को चरितार्थ कर सके.

आज हमारे देश में वर्तमान शिक्षण व्यवस्था का जो स्वरूप है उसमें राष्ट्रीय स्तर पर 10+2-3 की शिक्षण व्यवस्था है. इसका मतलब है कि दसवीं कक्षा तक राज्य स्तरीय बोर्ड का गठन है, 2 वर्षों की इंटरमिडिएट शिक्षा के लिए राज्य स्तरीय इंटरमिडिएट शिक्षा परिषद् का गठन है और 3 वर्षों के लिए स्नातक शिक्षा की व्यवस्था है. शिक्षा में आवश्यक परिवर्तन के सुझाव देने के लिए कोठारी आयोग का गठन किया गया था. सन् 1966 में आयोग ने अपनी रिपोर्ट दे दी थी. उसी को फिर से खड़ा किया गया है. उसमें कहा गया है कि शिक्षा को व्यावसायिक बनाया जाएगा और उत्पादन से जोड़ा जाएगा. उसी रिपोर्ट के आधार पर शिक्षा को नौकरी प्राप्त करने का साधन मानने की बात सबसे पहले खत्म की जाए. नौकरी के लिए उस विशेष विभाग की दक्षता को अपेक्षित योग्यता समझी जाए, जिसमें कार्य करना है. तभी उच्चतर विद्यालयों के 2 वर्षीय पाठ्यक्रम में रोजगार परक प्रशिक्षण ईमानदारी से ग्रहण कर सकेंगे. यदि अधिक लोग 10+2 की शिक्षा लेकर विभिन्न रोजगार में लग जायेंगे और राष्ट्रीय उत्पादन करने लगेंगे तो 3 वर्षीय विश्वविद्यालय पाठ्यक्रम में अनावश्यक भीड़ नहीं लगेगी.

निष्कर्ष :- इस प्रकार हम देखते हैं कि भारत में शिक्षण व्यवस्था में तरह-तरह के बदलाव हुए हैं. जरूरत है आज के नौनिहाल बच्चे जो भविष्य के राष्ट्र निर्माता हैं उनमें कूट-कूट कर संस्कार और आदर्श भरे जाएं और उन्हें सिर्फ नौकरी की ओर न ले जाया जाए, बल्कि उन्हें पढ़-लिखकर आत्मनिर्भर बनाकर खुद ही नौकरी सृजन करने की आवश्यकता को समझाया जाए. पूर्ण साक्षरता प्राप्त करने के लक्ष्य में 25% नि:शुल्क शिक्षा, आठवीं वर्ग तक बच्चों को उर्त्तीण करना, विभिन्न तरह की छात्रवृतियाँ देना एवं विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं जैसे:- पोशाक वितरण, पुस्तक वितरण, साईकिल वितरण इत्यादि भी इस दिशा में बच्चों एवं उनके परिवार को आर्कषित करने में असफल रहा है. भले ही कागजी खानापूर्ति भारत के शिक्षण व्यवस्था मानचित्र पर प्रयासों को सफल बता रहे हो, शिक्षण व्यवस्था में सुधार करने के लिए दृढ़ राजनैतिक इच्छाशक्ति की जरूरत पड़ेगी और इसके लिए प्रारंभिक शिक्षा एवं माध्यमिक शिक्षा के स्तर को मजबूत करना होगा. सिर्फ कल्याणकारी योजना का प्रलोभन देकर शिक्षा नहीं दी जा सकती है. इसके लिए सख्त से सख्त कदम उठाकर बच्चों को विद्यालय आने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए.

❑❑❑

- समीर कुमार
विशेष सहायक,
अखाड़ाघाट रोड शाखा, मुजफ्फरपुर (बिहार)

अपने ज्ञान को परखिए

1. निम्नलिखित में से किसने अमृतसर की नींव रखी?
   (क) गुरु अमरदास (ख) गुरु रामदास
   (ग) गुरु अर्जुनदेव (घ) गुरु हरगोबिंद

2. किस मुगल सम्राट ने तंबाकू के प्रयोग को निषिद्ध किया?
   (क) बाबर (ख) मोहम्मद शाह
   (ग) औरंगजेब (घ) जहांगीर

3. राफेल लड़ाकू विमान उड़ाने के लिए किस पहली महिला को चुना गया है?
   (क) शिवांगी सिंह (ख) भावना कांत
   (ग) अवनी चतुर्वेदी (घ) मोहना सिंह

4. किस भारतीय राज्य को मसालों का बगीचा कहा जाता है?
   (क) गुजरात (ख) कर्नाटक
   (ग) केरल (घ) तमिलनाडु

5. सरकार ने बिहार के किस शहर में एम्स की स्थापना करने घोषणा की है?
   (क) पटना (ख) गया
   (ग) मुंगेर (घ) दरभंगा

6. पेटीएम फर्स्ट गेम्स ने किस खिलाड़ी को अपना ब्रांड एम्बेस्डर नियुक्त किया है?
   (क) महेन्द्र सिंह धोनी (ख) विराट कोहली
   (ग) सचिन तेंदुलकर (घ) राहुल द्रविड

7. प्राथमिक रंग कौन से हैं?
   (क) लाल, पीला, नीला (ख) हरा, पीला, केसरी
   (ग) केसरी, नीला, लाल (घ) लाल, हरा, पीला

8. खाना पकाने वाली एलपीजी (LPG) गैस किसका मिश्रण है ?
   (क) मिथेन एवं इथेन का (ख) इथेन एवं ब्यूटेन का
   (ग) मिथेन एवं प्रोपेन का (घ) प्रोपेन एवं ब्यूटेन का

9. किस अभिनेता एवं पूर्व सांसद को नेशनल स्कूल ऑफ़ ड्रामा का प्रमुख नियुक्त किया गया है?
   (क) अमिताभ बच्चन (ख) परेश रावल
   (ग) अनुपम खेर (घ) शाहरुख खान

10. एमेज़ोन एलेक्सा (Amazon Alexa) को अपनी आवाज देने वाले पहले भारतीय कौन है?
    (क) अमिताभ बच्चन (ख) शाहरुख खान
    (ग) परेश रावल (घ) रणवीर सिंह

11. हाल ही में, विश्व बैंक के कार्यकारी निदेशक के रूप में किसे नियुक्त किया गया है?
    (क) आवेश ठाकुर (ख) नीलम भारद्वाज
    (ग) राजेश खुल्लर (घ) मनीषा चोपड़ा

12. विश्व पर्यटन दिवस कब मनाया जाता है?
    (क) 21 सितंबर (ख) 23 सितंबर
    (ग) 25 सितंबर (घ) 27 सितंबर

13. भारत की दूसरी सर्वाधिक बोले जाने वाली भाषा है?
    (क) मराठी (ख) तेलुगू
    (ग) बंगाली (घ) गुजराती

14. स्वच्छता सर्वेक्षण–2020 में किस शहर को एक बार फिर से पहला स्थान प्राप्त हुआ है?
    (क) सूरत (ख) इंदौर
    (ग) नागपूर (घ) विजयवाड़ा

15. पीएम मोदी ने किसानों को पशुधन के लिए कौन–सा ऐप लॉन्च किया है?
    (क) ई–गोधन (ख) ई–पशुधन
    (ग) ई–गोपाला (घ) ई–पशुपालन

16. निम्नलिखित में से अखिल भारतीय टेनिस संघ (AITA) के नए अध्यक्ष कौन है?
    (क) सुदेश लोमरोर (ख) आशीष वर्मा
    (ग) कमल राजपुर (घ) अनिल जैन

17. भारत के नए चुनाव आयुक्त किसे नियुक्त किया गया है?
    (क) राजीव कुमार (ख) चन्दन मोहरा
    (ग) आदिल शेख (घ) जगदीश निवारा

18. हाल ही में, भारत के किस शहर में सबसे लंबे नदी रोपवे (1.8km) का उद्घाटन किया गया है?
    (क) जोघपुर (राजस्थान) (ख) भोपाल (मध्यप्रदेश)
    (ग) गुवाहाटी (असम) (घ) पटना (बिहार)

19. इंडियन प्रिमियर लीग (IPL) का नया टाइटल स्पोंसर किसे बनाया गया है?
    (क) बाइजूस (Byjus) (ख) अनएकेडमी (Unacademy)
    (ग) ड्रीम 11 (Dream 11) (घ) रिलायंस जीओ (Reliance Jio)

20. किस ई–कॉमर्स कंपनी ने भारत का पहला पॉकेट एंडरोइड पीओएस (Pocket Android POS) डिवाइस लॉन्च किया है?
    (क) फ्लिपकार्ट (ख) पेटीएम
    (ग) एमेज़ोन (घ) फोन पे

(उत्तर के लिए पृष्ठ संख्या 36 देखें)

बैंकिंग शब्द-मंजूषा

Accession Rate अभिप्राप्ति-दर

किसी मीयादी बिल के भुनाए जाने की दर निश्चित करते समय उसके भुनाए जाने की तारीख और परिपक्वता की तारीख के बीच के अंतराल को ध्यान में रखा जाता है और यह दर उस अवधि के दौरान होने वाले परिवर्धन की दर के संदर्भ में भी होती है.

Bank identification code (BIC) बैंक पहचान कोड

बैंक पहचान कोड स्विफ्ट भुगतान संगठन द्वारा दिया गया एक ऐसा कोड है, जिसमें विश्व-भर में वित्तीय संस्थाओं को एक अलग पहचान दी गई होती है. इस कोड के वर्तमान मानक फार्मेट में चार कैरेक्टरों वाला बैंक के नाम का कोड और उसके बाद दो कैरेक्टरों वाला देश का कोड और उसके पश्चात् दो अंकों वाला देश के भीतर स्थित कोई स्थान दर्शाया जाता है.

Captive bank सीमित बैंक

पूर्ण अथवा आंशिक स्वामित्व वाला ऐसा बैंक, जो आम तौर पर अत्यंत कम कर वाले क्षेत्र में स्थित होता है और केवल एक इकाई (आम तौर पर एक फर्म) एवं उसके ग्राहकों एवं आपूर्तिकर्ताओं के लिए ही बैंक की भूमिका अदा करता है. ऐसे बैंक जमाराशि रखने के अलावा अन्य वाणिज्यिक बैंकों के सहयोग से मर्चेंट बैंकिंग, वित्तपोषण और अन्य सेवाएं भी प्रदान करते हैं.

Evergreening ऋणसातत्य

जब कोई कंपनी कारोबारी दिक्कतों के कारण उधार ली गई राशि चुकाने में असमर्थ हो जाती है और डूबने के कगार पर पहुंच जाती है, तब उसे उस स्थिति से उबारने के लिए पहली स्थिति में उधार देनेवाली संस्था ही आगे आकर उसे और अधिक ऋण प्रदान करती है ताकि घाटे में जा रही कंपनी कम से कम अपने पहलेवाले ऋण का ब्याज चुकाने की स्थिति में आ सके. इससे ऋणकर्ता संस्था का अपनी ऋण की राशि को अनर्जक होने से बचाने का स्वार्थ तो सिद्ध होता ही है, लेकिन उसके साथ ही वह कंपनी को भी डूबने से बचा लेती है.

Hot money अतिशीघ्र चलायमान मुद्रा

एक देश से दूसरे देश में अतिशीघ्र अंतरित होनेवाली निधियां हॉट मनी कहलाती हैं. ऐसा विशेषकर एक देश की तुलना में दूसरे देश में उच्चतम दरों का लाभ लेने और अपनी निधियों के मूल्यह्रास से बचने के लिए किया जाता है. यदि किसी देश में ब्याज दर कम होती है तो वहां से निधि उतनी ही तेजी से उस देश से बाहर चली जाएगी जिस तेजी से वह उच्च दरों का लाभ उठाने के लिए आयी थी.

Memorandum of association संस्था के बहिर्नियम

कंपनी की स्थापना के समय कंपनी द्वारा रजिस्ट्रार के यहां दाखिल किया जानेवाले दस्तावेज संस्था के बहिर्नियम कहलाते हैं. उस दस्तावेज में कंपनी का नाम, उसके मुख्यालय की स्थिति, कंपनी के उद्देश्य, उसकी प्राधिकृत पूंजी और शेयरों के रूप में उसका विभाजन, सदस्यों के सीमित दायित्व आदि की घोषणा शामिल है. कंपनी से बाहर के लोगों के साथ कंपनी का व्यवहार इसी दस्तावेज से विनियमित होता है. इसी के आधार पर वे लोग कंपनी के अधिकार और उसकी कार्य-सीमा के बारे में जानकारी हासिल कर पाते हैं. कंपनी के अंतर्नियम इसी दस्तावेज से नियंत्रित होते हैं.

Parallel loan समानांतर ऋण

ऋण का एक ऐसा प्रकार, जिसमें दो अलग-अलग देशों की दो विभिन्न कंपनियां विदेशी मुद्रा के संभावित जोखिमों से बचने के लिए एक-दूसरे की करेंसी को तय समय के लिए उधार ले लेती हैं और परस्पर सहमति से उसे लौटाने की या उसकी परिपक्वता की एक तारीख निर्धारित कर लेती हैं. तत्पश्चात परिपक्वता की तारीख को दूसरे की करेंसी में उस ऋण का भुगतान कर दिया जाता है.

Red clause letter of credit साखपत्र का महत्वपूर्ण खंड (लाल स्याही खंड)

साखपत्र में यह खंड लाल स्याही में मुद्रित होता है, जिसमें निर्यातक के देश में स्थित प्रतिनिधि बैंक को यह अनुमति दी जाती है कि वह साखपत्र के हिताधिकारी को ऐसी स्थिति में भी अग्रिम मंजूर कर सकता है जब उसने अभी माल भेजना शुरू नहीं किया हो अर्थात् उसे लदान से पहले भी अग्रिम मंजूर किया जा सकता है.

Sweet equity लुभावने शेयर

ये कारपोरेट कंपनियों द्वारा अपने कर्मचारियों को रियायती दरों पर जारी किए जाने वाले शेयर होते हैं. कंपनियां अकसर अपने कर्मचारियों को प्रोत्साहित करने के लिए उन्हें प्रलोभन के रूप में प्राथमिकता के आधार पर नए शेयर रियायती दर पर आबंटित करती हैं. कारपोरेट कंपनियां अपने मानव-संसाधन के अन्यत्र पलायन को रोकने के लिए अकसर इस प्रलोभन का सहारा लेती हैं.

Underwater loan अलाभकारी ऋण

ऐसा ऋण, जिसका मूल्य उसके बही-मूल्य से भी नीचे चला गया हो. इसके कई कारण होते हैं, जैसे कि (i) वह अनर्जक बन गया हो अर्थात् उसकी चुकौती अनिश्चित या देरी से हो रही हो. (ii) उसकी ब्याज-दर बाजार में उतनी ही राशि एवं शर्तों पर दिए जा रहे ब्याज दर की तुलना में कम हो. (iii) उसके लिए दी गई प्रतिभूति का बाजार-मूल्य ऋण की शेषराशि से भी कम हो चुका हो. (iv) उक्त प्रतिभूति ऋण की चुकौती का मुख्य जरिया न हो.

ग्लोब के बाहर लड़की

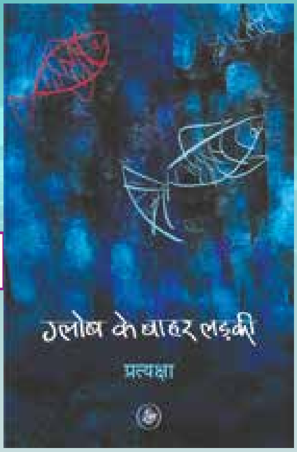

लेखिका : प्रत्यक्षा **प्रकाशन :** मई 2020, राजकमल **मूल्य :** 160 रुपये/-

मनुष्य ईश्वर की उत्कृष्ट कृति है, जिसके पास सोचने समझने और अपने विचारों के आदान-प्रदान करने की शक्ति है. मनुष्यों ने सदा से हर क्षेत्र में अनेक कीर्तिमान स्थापित किए हैं. ऐसे ही साहित्य के क्षेत्र में रचनाकारों ने रचनाधर्मिता के अंतर्गत कई कालजयी रचनाओं को गढ़ा जो आज भी अपने जन्म के सैकड़ों वर्षों बाद भी पाठकों के मन में जीवित हैं. वर्तमान परिप्रेक्ष्य में जब सम्पूर्ण विश्व कोरोना जैसी वैश्विक महामारी से जूझ रहा है, ऐसे में किताबों से बेहतर संगीत और साथ कोई हो ही नहीं सकता. इसी समय एक पुस्तक ने भरपूर साथ दिया. 'ग्लोब के बाहर लड़की' कितना अद्भुत नाम है न और नाम के अनुरूप साहित्यिक विधाओं को छोड़कर मन के गोपन को कलम के माध्यम से कागज रंगने की बहकावा है, ग्लोब के बाहर लड़की. जिसमें कविता की सरलता है, निबंधों की भांति गूढ़ गहनता भी है. लेखिका के अंतर्मन अनुभवों और वास्तविकता समेटे यह "**ग्लोब के बाहर लड़की**" कितना कहानी के ढांचे में, ना यात्रा के अनुभवों में, न डायरी की दिनचर्या में ना ही कविता के रस में बल्कि अपने शब्दों से हर पृष्ठ पर पाठक के मानस पटल पर गढ़ती जाती है.

ग्लोब के बाहर की लड़की में अलग-अलग मिजाज की चीजें हैं जो आंसुओं से बेहिसाब रंग दिखाती हैं........... तो कभी धुंधले अँधेरों में कुछ न दिखता हो तो, ख़ुद को देखना अच्छा लगता है यानि ख़ुद से ख़ुद का सामना करवाती है. उनकी संवेदना को भाषा का भरपूर सहयोग मिला उनकी यह रचना प्रत्येक पाठक-पाठिका को यह एहसास कराती है कि कहीं मैं तो नहीं. इस पुस्तक के बारे में प्रियदर्शन ने लिखा, प्रत्यक्षा की कहानियों में जितनी कविता होती है, कविताओं में उतनी ही कहानी भी होती है. लेखिका स्त्री विमर्श पर बात जरूर करती हैं किन्तु स्त्री विमर्श का झण्डा उठाकर आंदोलनों में भागीदारी भी नहीं करतीं, न ही महिला विमर्श की चर्चाओं में वक्तव्य देती हैं. वे सिर्फ और सिर्फ अपनी कलम के माध्यम अपनी बात कहती हैं, **वे स्वयं भी कहती हैं कि "यह एक कोशिश है कि दिल, मन और भाषा का मीठा संसार बने, भाव और एहसास की धुंध में लिपटी दुनिया अचानक एक धुन छेड़े जो तीर के तीखेपन सी अवचेतन में धंस-धंस जाए. उदासी और खुशी का जीवन राग हो जैसे. ग्लोब के बाहर लड़की वही धुन है जो जुबान पर अपना मुहब्बत भरा एक स्वाद चिरंतन छोड़ दे, मन उसी धुन को बार बार सुनने कि चाहत रखे, दिल उसके भाव संग युगलबंदी करते उल्लास से भर जाए."**

लेखिका की यह किताब चार खंडों में विभाजित है, यह जो दिल है कि दवा है, घर के भूगोल का घर, किस्से करमखोर और दोस्त दिलनवाज़

मेरी यात्रा शुरू होती है अब ...

मन में कोई जंगल पत्ते खोलता था, फूंगियाँ आसमान छूती-सी थी, सही है वैसे ही दिन थे. फिर....उनकी परछाई इतनी लंबी क्यूं जान पड़ी कि आज तक के दिन ठंडे अंधेरे, बिना किसी अच्छी चीज का बुरा कसैला आफ्टर टेस्ट. मेरे मन में एक खिड़की खुली थी, किसी और प्यारी दुनिया कि झलक दिखाई दी थी, जब तक सुहानी थी. उसका सुहानापन, दिनों के किनारे पर जड़ी किरणें और सितारे थे. उसकी चमक अब भी है मेरे अंदर चमकती हुई. लेकिन मैं सिर्फ तुम्हारे साथ के दिनों से खुद को सीमित कैसे कर लूँ? दुनिया बड़ी है, बहुत बड़ी और जीवन नियामत है, एक बार मिली हुई नियामत. और हजार चीजें करनी हैं इस एक जन्म में. तुमसे मोहब्बत की, टूट कर इश्क़ किया, मेरी आत्मा में नए रंग भरे. एक नारी का अपने प्रेमी और पति के लिए प्रेम और भावनाएँ व्यक्त करती एक नारी.

एक बगीचा था. धूप से भरा, एक कमरा भी था जिसकी दीवारें नहीं थी. बगीचे की नीली छत थी. कमरे में हरियाली थी और औरत सोचती थी यही जन्नत है भीतर-बाहर. ऐसा सोच कर उसे बेतरह खुशी मिलती थी और इतना कहते ही एक अकेली चिड़िया आसमान में एक तीखी उड़ान में निकल पड़ती थी. एक मध्यमवर्गीय विवाहिता की मनोदशा का जीवंत विवरण अपनी लेखनी से व्यक्त करती है 'ग्लोब के बाहर लड़की.'

शाम को धूंधलकों अंधेरों में कुछ दिखाई नहीं देता. सांस भरकर अंदर आ जाती है. पिता जानकार आँखों से भांपकर देखते हैं, कुछ कहते नहीं. आधे घंटे बाद घंटी बजती है. दरवाजे पर बच्चा खड़ा है. उसकी एक आँख काली पड़ गयी है. टी शर्ट की बाँह फट कर नीचे झूल रही है. मोजे गिरे हुए हैं. घुटने छिले हुए हैं. बच्चा माँ की भौचक निगाह को बरजता अंदर विजयी भाव से घुसता है, आज मैंने बहुत से दोस्त बना लिए...

समाजीकरण का एक अहम पाठ बच्चा सीख आया है. माँ को खुश होना चाहिए, पर न जाने क्यों दुखी हो जाती है. एक माँ की विवशता और नयी जगह बच्चे के न घुल पाने के कारण मिला जीवन का नया पाठ.

हाँ वही लड़की, जिसे माँ कहती हैं कि लड़की है कि लड़का, किसी बात का भय नहीं इस लड़की में. वही लड़की जो क्लास में अव्वल आती, जो कहती कि मैं किसी से नहीं डरती, वही

लड़की जो छिपकली से नहीं डरती पर तिलचट्टे से डर जाती है, और वही लड़की जो समझती है कि उसकी मुट्ठी में सारा जहां है. लड़कियों में प्राय: यह पाया जाता है कि वे दुनिया जीतने का मादा रखती हैं पर तिलचट्टा आज भी उनके सामने विकराल रूप धर लेता है. इस दौड़ती-भागती ज़िंदगी में जहां आकर आदमी भाग रहा है वहाँ महिलाओं का दौड़ना, थकना और यहाँ तक कि रोना भी पुरुष वर्गीय समाज देख नहीं पाता.

दरवाजा खुलने में जरा-सी देर पर मन लहक जाता है गुस्से से. दिन भर की हाड़ तोड़ खटाई और यह औरत पैर चढ़ाए फैल कर सोती रही? दिनभर की खटती औरत, बच्चों से सर फोड़ती, चूल्हे से बदन धिपाती, अभी घड़ी भर को ही तो आँख लगी थी जरा-सी. आँख मलती धक्क सी उठती है, धड़फड़ा कर भागती है दरवाजा खोलने. पैर लिपटते हैं छापे वाले साड़ी में, चारसे किनारी फटती है और दरवाजे पर ही गाली की बौछार होती है सो अलग. पर यह तो रोज की कहानी है. खाना परोसती है, पंखा झलती है, नींद से झुकती हिलती है, कुनमुनाते बच्चे को एक हाथ से थपथपाती है. मर्द लस पड़ जाता है मसहरी चारपाई पर. औरत निंदाई-निंदाई पानी का ग्लास थामे निढाल आती है बिस्तर पर. रसोई समेटना बाकी है अभी, दही जमाना बाकी है अभी, मुन्नू को आखिरी बोतल बाकी है अभी. गँधाती फलियों और कपड़ों के ढेर को सरकाकर जगह बनाती वह सोचती है, उसकी रात की पाली कब खतम होगी?

भारतीय समाज की गृहस्थ महिलाओं के जीवन का बिलकुल नंगा सच जिसे पुरुष वर्ग सदा से ही नजरंदाज करता आया है. **किसी ने कहा भी है कि जिस दिन महिला के श्रम का हिसाब किया जाएगा उस दिन हमारे समाज की सबसे बड़ी चोरी पकड़ी जाएगी.** हम पुरुषों ने नारी के श्रम को कभी भी सही आँखों से नहीं देखा, कभी भी उनके श्रम को श्रम माना ही नहीं. प्रत्यक्षा स्त्री विमर्श की पैरोकार होते हुए भी स्त्री-विमर्श का ध्वजारोहण नहीं करती जो शायद एक रचनाकार के तौर पर सही भी है. 'ग्लोब के बाहर की लड़की' में लेखिका प्रत्यक्षा द्वारा ही कवर पृष्ठ भी बनाया गया है, पुस्तक के भीतर भी उनके स्केच हैं जो पाठकों को अंतरतम की गहराइयों तक ले जाने में सफल होते हैं. दिलफ़रेब दुनिया में दिलकरीब ग्लोब के बाहर लड़की को पढ़ने के लिए मोहब्बत और दिल की नजर से अपनी माँ, बहन, पत्नी, प्रेमिका, सहकर्मी और नारी से मिलिए.

❑❑❑

– शक्तिवीर सिंह

क्षेत्रीय कार्यालय, मदुरै

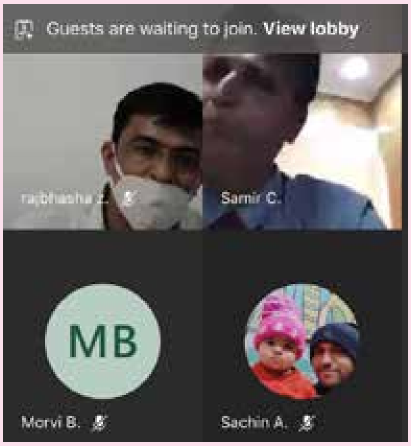

राजकोट अंचल द्वारा गुजराती भाषा में वेबिनार

राजकोट अंचल द्वारा दिनांक 20 अगस्त 2020 को 'बड़ौदा किसान कार्ड की संभावना एवं अवसर' विषय पर गुजराती भाषा में वेबिनार का आयोजन किया गया. कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र को सहायक महाप्रबंधक (क्षेत्रीय प्रमुख, जूनागढ़ क्षेत्र) श्री जे बी रोहडा द्वारा संबोधित किया गया एवं मार्गदर्शी वक्तव्य सुश्री पारूल मशर सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा एवं संसदीय समिति), प्रधान कार्यालय, बड़ौदा ने दिया. वेबिनार के मुख्य वक्ता श्री गौतम पटेल, वरिष्ठ प्रबंधक, राजकोट अकादमी रहे.

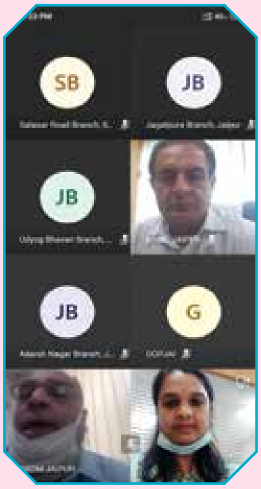

हिंदी में बैंक व्यवसाय में डिजिटल उत्पादों का उपयोग पर ई-संगोष्ठी

क्षेत्रीय कार्यालय, जयपुर द्वारा दिनांक 29 अगस्त 2020 को हिंदी भाषा में "बैंक व्यवसाय में डिजिटल उत्पादों का उपयोग" पर माइक्रोसॉफ्ट टीम्स के माध्यम से संगोष्ठी का आयोजन किया गया. उक्त संगोष्ठी की अध्यक्षता उप क्षेत्रीय प्रबंधक श्री विनोद मोंगा ने की. श्री गोपाल बलाई, मुख्य प्रबंधक, आर.बी.डी.एम. द्वारा विस्तृत रुप से इस विषय पर चर्चा की गई.

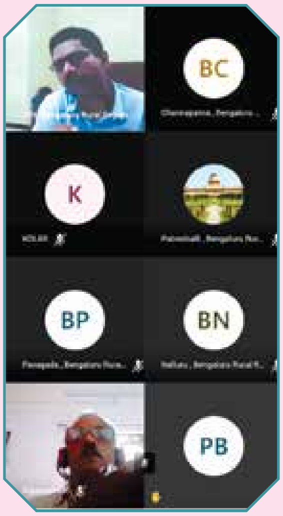

क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगलूरू ग्रामीण द्वारा कन्नड में संगोष्ठी का आयोजन

दिनांक 26 अगस्त 2020 को हमारे कार्यालय द्वारा कन्नड़ भाषा में 'कृषि उत्पादों का वित्तीयन' पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया. इस अवसर पर उप क्षेत्रीय प्रबंधक श्री नेत्रांनदा ने सभी प्रतिभागियों को संबोधित किया. इस संगोष्ठी में बैंक मित्र, कृषि अधिकारी एंव शाखा प्रबंधकों ने भी सहभागिता की.

चित्र बोलता है

1

भूख होती है सब के लिए समान
फेंका खाना, खाना पड़ता है,
चाहे बंदर हो या गरीब इंसान.

– हिमानी पटेल
व्यवसाय सहयोगी
प्रधान कार्यालय, बड़ौदा

2

भूख की कोई भाषा नहीं होती,
टूटे मन में कोई आशा नहीं होती,
ये प्रतिबिम्ब है उनके जीवन जीने का,
जिनके मन में कोई निराशा नहीं होती.

– विजय कुमार पाण्डेय
वरिष्ठ प्रबंधक
अंचल कार्यालय, लखनऊ

3

हम हैं छोटे बन्दर लेकिन समझ है, मानवी जैसी,
हम ये पैकेट खाकर, डालेंगे कचरा वेस्ट-बेग में
नहीं करेंगे देश को गंदा, स्वच्छ रखेंगे भारत-देश.

– तीमोथी. एन. क्रिश्नन
प्रधान कार्यालय
बड़ौदा

4

वो खोज रहा कूड़े में, कुछ पाने को
शब्द नहीं अपनी व्यथा बताने को
इंसा जो बांटता नहीं,
वो फेंकता है वो उसमे ही खोजता है,
कुछ खाने को.

– शक्तिवीर सिंह
अधिकारी
क्षेत्रीय कार्यालय, मदुरै

5

दाना-दाना वह चुनता है,
हर बार वह सपने बुनता है
कूड़े-कचरे में उसे ढूँढता है,
पर दावानल है यह पेट का
कहाँ सपनों से बुझता है.

– योगेश कुमार मिश्रा
अधिकारी
चेन्नै मेट्रो क्षेत्र-I

6

मानव तुम भोग में हुए लीन,
मन हुआ तुम्हारा यूं मलीन,
कुछ है अस्तित्व पशु पक्षियों का,
यह बात मनुज तुम गए भूल.

– उमा गोहिल
प्रबन्धक,
क्षेत्रीय कार्यालय, आणंद

प्रथम तीन विजेताओं को पुरस्कार स्वरूप रू. 500 के गिफ्ट कार्ड / राशि दी जा रही है.

'चित्र बोलता है' के स्थायी स्तंभ के अंतर्गत अप्रैल-जून, 2020 अंक में प्रकाशित चित्र पर पाठकों से काफी उत्साहवर्धक प्रतिक्रियाएं/रचनाएं प्राप्त हुई हैं. पाठकों से अनुरोध है कि इस शृंखला में प्रकाशित इस चित्र पर आधारित अपने विचार पद्य के रूप में हमें अधिकतम चार पंक्तियों में लिख कर भेजें. श्रेष्ठ तीन रचनाओं को पुरस्कृत (प्रत्येक को रू. 500/-) किया जाएगा और उन्हें हम 'अक्षय्यम्' के आगामी अंक में भी प्रकाशित करेंगे. पाठक अपने विचार हमें डाक से या ई-मेल पर अपने व्यक्तिगत विवरण और स्वरचित घोषणा सहित 30 जनवरी 2021 तक भेज सकते हैं.

लीडरशिप एवं संप्रेषण कौशल विषय पर वेबगोष्ठी का आयोजन

दिनांक 31.07.2020 को कार्पोरेट कार्यालय के सहायक महाप्रबंधक/मुख्य प्रबंधक स्तर के कार्यपालकों के लिए लीडरशिप एवं संप्रेषण कौशल विषय पर वेबगोष्ठी का आयोजन किया गया जिसे प्रसिद्ध मीडियाकर्मी, भाषाविद् एवं रचनाकार श्री इकराम राजस्थानी ने संबोधित किया. वेबगोष्ठी में 154 कार्यपालकों ने भाग लिया.

क्षेत्रीय भाषा प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन

बैंक के क्षेत्रीय भाषा प्रशिक्षण कार्यक्रम के अंतर्गत मुम्बई और बड़ौदा में क्रमश: मराठी, गुजराती भाषा-प्रशिक्षण के नये बैच की शुरूआत की गई.

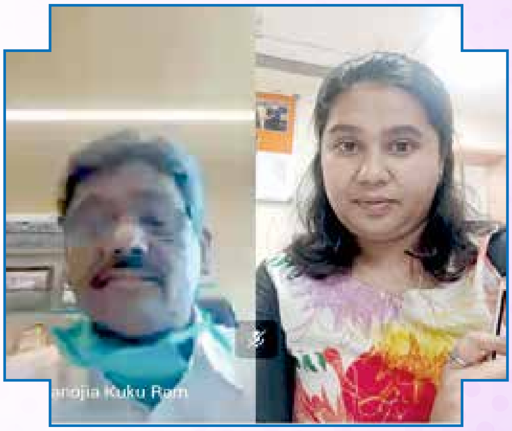

'ग्राहक संवाद और संप्रेषण कौशल' विषय पर वेबिनार का आयोजन

हिंदी दिवस के अवसर पर दिनांक 14.09.2020 को प्रधान कार्यालय, बड़ौदा द्वारा ग्राहक सेवा को महत्व देते हुए 'ग्राहक संवाद और संप्रेषण कौशल' विषय पर महाप्रबंधक (राजभाषा, संसदीय समिति एवं कार्यालय प्रशासन) श्री के आर कनोजिया की अध्यक्षता में वेबिनार का आयोजन किया गया. कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में डॉ. अखिलेश कुमार शर्मा, सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग, मिजोरम विश्वविद्यालय ने प्रतिभागियों को संबोधित किया.

काश !

काश! कहीं, किसी रोज ऐसा हो जाए
दर्द किसी का हो, सब का साझा हो जाए

आंसू एक न बचे किसी की आंखों में
खुशी हर दिल का सरमाया हो जाए

भर जाए हर जख़्म, पैर का हर छाला
धूप आंचल-सी, मरहम हवा हो जाए

बांटने निकलें तो जी भर के नेमतें बांटे,
नसीब इस कदर सब पर मेहरबां हो जाए

भूख, जुल्मो-सितम किताबों की बातें रहें
मयस्सर सब को सुकूं का निवाला हो जाए

('अपनी बात' के क्रम में)